भाषाभास्कर ।

अर्थात

हिन्दी भाषा का व्याकरण ।

काशी नगर के पादरी एथरिङ्गटन साहिब ने
विद्यार्थियों की शिक्षा निमित्त
बनाया

यीशुहि शीश नवाइ के कियो नयो यह ग्रन्थ।
भाषाभास्कर याहि लखि लखैं लोग पदपन्थ ॥

BHÁSHÁBHÁSKAR,

A GRAMMAR

OF THE

HINDI LANGUAGE

DESIGNED FOR NATIVE STUDENTS,

BY THE

REV. W. ETHERINGTON,

Missionary, Benares.

SIXTH EDITION.

PRINTED BY ORDER OF THE DIRECTOR OF PUBLIC INSTRUCTION, N.-W. P.

PRINTED AT THE N.-W. P. AND OUDH GOVERNMENT PRESS, ALLAHABAD

1882.

th edition, 10,000 copies.
Price, per copy, 4 annas.

छठवींबार १०,००० पुस्तकें
मोल फ़ी पुस्तक ।) आने

भाषाभास्कर ।

अर्थात

हिन्दी भाषा का व्याकरण

काशी नगर के पाद्री एथरिङ्गटन साहिब
विद्यार्थियों की शिक्षा निमित्त
बनाया

योसुहि सीस नवाइ के कियो नयो यह ग्रन्थ ।
भाषाभास्कर याहि लखि लखैं लोग पदपन्थ ॥

BHÁSHÁBHÁSKAR,

A GRAMMAR

OF THE

HINDI LANGUAGE

DESIGNED FOR NATIVE STUDENTS,

BY THE

REV. W. ETHERINGTON,

Missionary, Benares

SIXTH EDITION.

PRINTED BY ORDER OF THE DIRECTOR OF PUBLIC INSTRUCTION, N.-W. P.

PRINTED AT THE N.-W. P. AND OUDH GOVERNMENT PRESS, ALLAHABAD.

1882.

PREFACE TO THE FIRST EDITION.

"The Student's Grammar of the Hindí Language," published by me last year, was reviewed by the Director of Public Instruction, North-Western Provinces, and recommended to Government for a prize. "Being a work in the English language, it hardly comes within the scope of the Prize Notification, which relates only to vernacular literature;" but His Honor the Lieutenant-Governor suggested that the book, if put into a form suitable for use in vernacular education, "would be a valuable contribution to the vernacular literature, and, as such, a fit subject for a prize."* In accordance with this suggestion, the little book in the hands of the reader was prepared.

Being designed for Native youth, this is not a mere translation of the "Student's Hindí Grammar," which would not have served the purpose, that book being adapted to the wants of Europeans having no knowledge of the Indian dialects. In the following pages the reader will find much that is new, as regards both matter and arrangement, in every chapter, especially in the treatment of the noun and the verb. I have taken advantage of the criticism of scholars who reviewed the former book here and in England, and have felt it necessary to omit or to modify some points that I formerly held as correct. In several instances I have ventured to differ from well-known Hindí scholars; but in no case hastily, or without being, as I supposed, justified by what seemed to me to be the facts of the case.

I have read whatever came in my way that seemed likely to aid me in the preparation of the book, and have made use of whatever promised to afford help to Native students in acquiring a competent knowledge of the structure of their mother-tongue. I am in a great measure indebted to the advice and suggestions of the accomplished Pandit Vishan Datt, who prepared the greater part of the last chapter and revised the entire book with me.

BENARES, *October*, 1871. — W. ETHERINGTON.

* A prize of five hundred rupees was awarded to the author on the appearance of the first edition of this book. The copyright of this second and improved edition has been purchased by Government.

सूचीपत्र ॥

		पृष्ठ
प्रथम अध्याय	— वर्णविचार	१
	स्वरों के विषय में	२
	व्यंजनों के विषय में	३
	संयुक्त व्यंजन	४
	उच्चारण के विषय में	५
	स्वरचक्र और व्यंजनचक्र	७
द्वितीय अध्याय	— संधिप्रकरण	८
	१ स्वरसंधि	"
	दीर्घ	"
	गुण	९
	वृद्धि	१०
	यण्	११
	अयादि	१२
	स्वरसंधिचक्र ..	१३
	२ व्यंजनसंधि ..	"
	३ विसर्गसंधि ..	१७
तृतीय अध्याय	— शब्दसाधन ..	१९
	स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय	२३
	संज्ञा का रूपकरण	२८
	गुणवाचक के विषय में ..	३३
चौथा अध्याय	— सर्वनामों के विषय में ..	३५
	पुरुषवाची सर्वनाम	"
	निश्चयवाचक "	३९
	अनिश्चयवाचक"	४१
	आदरसूचक "	"
	प्रश्नवाचक "	४३
	सम्बन्धवाचक "	४४
पांचवां अध्याय	— क्रिया के विषय में	४५
	क्रिया का सम्पूर्ण रूप	४८

सूचीपत्र ॥

		पृष्ठ
	क्रिया के बनाने की रीति	५०
	क्रियाचक्र	५१
	संयुक्तक्रिया	७३
छठवां अध्याय —	कृदन्त के विषय में	७५
सातवां अध्याय —	कारक "	७७
आठवां अध्याय —	तद्धित "	८३
नवां अध्याय —	समास "	८५
दसवां अध्याय —	अव्यय "	८६
	१ क्रियाविशेषण	"
	२ सम्बन्धसूचक	८८
	३ उपसर्ग	८९
	४ संयोजक	९१
	५ विभाजक	"
	६ विस्मयादिबोधक	"
ग्यारहवां अध्याय—	वाक्यविन्यास	९२
	पदयोजन का क्रम	९३
	विशेष्य और विशेषण	९५
	कर्तृप्रधान वाक्य	९७
	कर्मप्रधान वाक्य	"
बारहवां अध्याय —	छन्दोनिरूपण	९९

भाषाभास्कर

अर्थात

हिन्दी भाषा का व्याकरण ॥

अथ प्रथम अध्याय ।

---

१ भाषा उसे कहते हैं जिसके द्वारा बोलकर मनुष्य अपने मन के विचार का प्रकाश करता है ॥

२ व्याकरण के बिन जाने शुद्ध २ बोलना वा लिखना किसी भाषा का नहीं होता ॥

३ उस विद्या को व्याकरण कहते हैं जिस से लोग बोलने और लिखने की रीति सीख लेते हैं ॥

४ भाषा वाक्यों से बनती है वाक्य पदों से और पद अक्षरों से बनाये जाते हैं ॥

५ व्याकरण में मुख्य विषय तीन हैं जो अक्षरों से पदों से और वाक्यों से सम्बन्ध रखते हैं ॥

६ पहिला विषय वर्णविचार है जिस में अक्षरों के आकार उच्चारण और मिलने की रीति बताई जाती है ॥

७ दूसरा विषय शब्दसाधन है जिस में शब्दों के भेद अवस्था और व्युत्पत्ति का वर्णन है ॥

८ तीसरा विषय वाक्यविन्यास है उस में शब्दों से वाक्य बनाने की रीति बताई जाती है ॥

प्रथम विषय—वर्णविचार ॥

९ हिन्दी भाषा जिन अक्षरों में लिखी जाती है वे देवनागरी कहाते हैं ॥

१० शब्द के उस खण्ड का नाम अक्षर है जिसका विभाग नहीं हो सकता और उसके चीन्हने के लिये जो चिन्ह बनाये गये हैं वे भी अक्षर कहाते हैं ॥

११ अक्षर दो प्रकार के होते हैं स्वर और व्यंजन और इन्हीं दोनों के समुदाय को वर्णमाला कहते हैं ॥

१२ स्वर उन्हें कहते हैं जो व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते हैं और जिनका उच्चारण आप से हो सकता है ॥

१३ व्यंजन उन वर्णों को कहते हैं जिनके बोलने में स्वर की सहायता पाई जाय ॥

स्वर ।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ* ए ऐ ओ औ

व्यंजन ।

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	
			श	ष	स	ह			

१४ व्यंजनों का स्पष्ट उच्चारण स्वर के योग से होता है जैसा क् + अ=क ख्+अ=ख इत्यादि । और जब क आदि व्यंजनों में स्वर नहीं रहता तो उन्हें हल् कहते हैं और उनके नीचे ऐसा ् चिन्ह कर देते है ॥

किसी अक्षर के आगे कार शब्द जोड़ने से वही अक्षर समझा जाता है ॥

१५ अनुस्वार और विसर्ग भी एक प्रकार के व्यंजन हैं । अनुस्वार का उच्चारण प्रायः हल् नकार के समान और विसर्ग का हकार के तुल्य होता है ॥

१६ अनुस्वार का आकार स्वर के ऊपर की एक बिन्दी और विसर्ग का स्वरूप स्वर के आगे की खड़ी दो बिन्दियां हैं । अनुस्वार जैसे हंस वंश में विसर्ग जैसे प्रायः दुःख इत्यादि में है ॥

स्वर के विषय में ॥

१७ मूल स्वर नव हैं उनके स्वरूप ये हैं अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ। इन में से पहिले पांच ह्रस्व और पिछले चार दीर्घ और संयुक्त भी कहाते हैं । संयुक्त कहने का अर्थ यह है कि अ + इ = ए आ + ई = ऐ अ + उ = ओ और आ + ऊ = औ ॥

१८ अकार के बोलने में जितना समय लगता है उसे ही मात्रा कहते हैं । जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा होवे उसे ह्रस्व वा एक

---

* ॠ ऌ ॡ ये वर्ण हिन्दी शब्दों में नहीं आते केवल देवनागरी वर्णमाला की पूर्णता निमित्त रखे गये हैं ॥

मात्रिक कहते हैं और जिनके बोलने में इसका दूना काल लगे वे दीर्घ अथवा द्विमात्रिक कहाते हैं। जैसे अ इ उ ऋ ऌ ये ह्रस्व वा एकमात्रिक हैं।

आ ई ऊ ॠ ॡ ए ऐ ओ औ ये दीर्घ वा द्विमात्रिक हैं।

ए ऐ ओ औ ये दीर्घ और संयुक्त भी हैं॥

१६ जिस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व के उच्चारण से तिगुना काल लगता है उसे प्लुत वा त्रिमात्रिक कहते हैं और उसका प्रयोजन हिन्दी भाषा में थोड़ा पड़ता है केवल पुकारने और चिल्लाने आदि में बोला जाता है। उसके पहचानने को दीर्घ के ऊपर तीन का अंक लिख देते हैं। जैसे हे मोहना ३ यहां अंत्य स्वर को प्लुत बोलते हैं॥

२० अकार आदि स्वर जब व्यंजन से नहीं मिले रहते तब उन्हें स्वर कहते हैं और वे पूर्वोक्त आकार के अनुसार लिखे जाते हैं परंतु जब ककार आदि व्यंजनों से मिलते हैं तो इनका स्वरूप पलट जाता है और ये मात्रा कहाते हैं। प्रत्येक स्वर के नीचे उसकी मात्रा लिखी है॥

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ
	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	ॄ	ॢ	ॣ	े	ै	ो	ौ

व्यंजनों के विषय में॥

२१ सम्पूर्ण व्यंजनों के सात विभाग हैं। वर्णमाला के क्रम के अनुसार ककार से लेकर मकार लों जो पचीस व्यंजन हैं जिन्हें संस्कृत में स्पर्श कहते हैं उन में पांच वर्ग होते हैं और शेष आठ व्यंजनों के दो भाग हैं अर्थात अंतस्थ और ऊष्म। जैसे।

क	ख	ग	घ	ङ	यह	क— वर्ग	है॥
च	छ	ज	झ	ञ	"	च— वर्ग	"
ट	ठ	ड	ढ	ण	"	ट— वर्ग	"
त	थ	द	ध	न	"	त— वर्ग	"
प	फ	ब	भ	म	"	प— वर्ग	"
य	र	ल	व		ये	अंतस्थ	हैं॥
श	ष	स	ह		ये	ऊष्म	हैं॥

२२ प्रयत्न के अनुसार व्यंजनों के दो भेद होते हैं अर्थात अल्पप्राण और महाप्राण। प्रत्येक वर्ग के पहिले और तीसरे अक्षरों को अल्पप्राण और

दूसरे और चौथे को महाप्राण कहते हैं। जैसे कवर्ग में क ग अल्पप्राण और ख घ महाप्राण हैं। इसी प्रकार से चवर्ग आदि में भी जानो। जैसे

अल्पप्राण।	महाप्राण।
क ग	ख घ
च ज	छ झ
ट ड	ठ ढ
त द	थ ध
प ब	फ भ

२३ रकार और ऊष्म को छोड़कर शेष अक्षरों के भी दो और भेद हैं सानुनासिक और निरनुनासिक। जिनका उच्चारण मुख और नासिका से होता है उन्हें सानुनासिक कहते हैं और जो केवल मुख से बोले जाते हैं वे निरनुनासिक कहाते हैं॥

२४ वर्णों के सिर पर ऐसा ँ चिन्ह देने से सानुनासिक होता है परंतु भाषा में प्राय: अनुस्वार ही लिखा जाता है और निरनुनासिक का कोई चिन्ह नहीं है॥

२५ प्रत्येक वर्ग के पांचवें वर्णों को सानुनासिक अल्पप्राण कहते हैं। जैसे

ङ ञ ण न म

२६ जब व्यंजन के साथ मात्रा मिलायी जाती है तब व्यंजन का आकार मात्रासहित हो जाता है। जैसे

क का कि की कु कू कृ कॄ क्ल‍ृ क्ल‍ॄ के कै को कौ

इसी रीति ख आदि मिलाकर सब व्यंजनों में जानो। परंतु जब उ वा ऊ की मात्रा र के साथ मिलाई जाती है तब उसका रूप कुछ विकृत होता है। जैसे रु रू॥

संयुक्त व्यंजन॥

२७ जब दो आदि व्यंजनों के मध्य में स्वर नहीं रहता तब उन्हें संयोग कहते हैं और वे एकही साथ लिखे जाते हैं। जैसे पत्थर इस शब्द में त् और थ का संयोग है॥

२८ बहुधा संयुक्त अक्षरों की लिखावट में मिले हुए व्यंजनों का रूप दिखाई देता है परंतु क्ष त्र ज्ञ इन अक्षरों में जिनके संयोग से बने

हैं उनका कुछ भी रूप नहीं दिखाई देता इसलिये कोई कोई व्यंजनों के साथ वर्णमाला के अंत में इन्हें लिख देते हैं। क् और ष के मेल से क्ष और त् और र के योग से त्र और ज् और ञ मिलके ज्ञ बन गया है॥

२९ प्रायः संयोग में आदि के व्यंजन का आधा और अंत के व्यंजन का पूरा स्वरूप लिखा जाता है। जैसे विस्वा प्यास मन्दिर इत्यादि में॥

३० ङ छ ट ठ ड ढ ये छः व्यंजन ऐसे हैं जो संयोग के आदि में भी पूरे ही लिखे जाते हैं। जैसे चिट्ठी टिड्डी आदि में॥

३१ रकार जब संयोग के आदि में होता है तब उसके सिर पर लिखा जाता है और उसे रेफ कहते हैं। जैसे पूर्व धर्म आदि में। परंतु जब रकार संयोग के अंत में आता है तो आदि के व्यंजन के नीचे इस रूप से ⸝ लिखा जाता है। जैसे शक्र चक्र मुद्रा आदि में॥

३२ हिन्दी भाषा में संयोग बहुधा दो अक्षरों के मिलते हैं परंतु कभी २ तीन अक्षरों के भी आते हैं। जैसे स्त्री मन्त्री मूर्द्धा इत्यादि॥

३३ प्रत्येक सानुनासिक व्यंजन अपनेही वर्ग के अक्षरों से युक्त हो सकता है और दूसरे वर्ग के वर्णों के साथ कभी मिलाया नहीं जाता परंतु अनुस्वार बना रहता है। जैसे पङ्कज चञ्चल घण्टा छन्द थाम्भना गंगा ऊंट इत्यादि॥

३४ यदि अनुस्वार से परे कवर्ग आदि रहें तो उसको भी ङकार आदि सानुनासिक पञ्चम वर्ण करके ककार आदि में मिला देते हैं। जैसे अङ्क शान्त इत्यादि॥

३५ यदि किसी वर्ग के दूसरे वा चौथे अक्षर का द्वित्व होवे तो संयोग के आदि में उसी वर्ग का पहिला वा तीसरा अक्षर आवेगा जैसे गफ़्फ़ा=गप्फ़ा आदि॥

३६ संयोग में जो अक्षर पहिले बोले जाते हैं वे पहिले लिखे जाते हैं और जिनका उच्चारण अंत में होता है उन्हें अंत में लिखते हैं। जैसे शब्द अन्न अन्त्य इत्यादि॥

अक्षरों के उच्चारण के विषय में॥

३७ मुख के जिस भाग से किसी अक्षर का उच्चारण होता है उसी भाग को उस अक्षर के उच्चारण का स्थान कहते हैं॥

३८ अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग इनका उच्चारण कण्ठ से होता है इसलिये ये कण्ठ्य कहाते हैं ॥

३९ इ ई च छ ज झ ञ य श तालु पर जीभ लगाने से ये सब वर्ण बोले जाते हैं इसलिये ये अक्षर तालव्य कहाते हैं ॥

४० ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष ये मूर्द्धा अर्थात तालु से भी ऊपर जीभ लगाने से बोले जाते हैं इसलिये इनको मूर्द्धन्य कहते हैं ॥

४१ चेत रखना चाहिये कि ड और ढ के दो २ उच्चारण होते हैं एक तो यह कि जब इन अक्षरों के नीचे बिंदु नहीं रहता तो जीभ का अग्र तालु पर लगाते हैं जैसे डरना डाकू ढाल ढोल इन शब्दों में। इन अक्षरों के नीचे बिन्दु होने से दूसरा उच्चारण समझा जाता है इसके बोलने में जीभ का अग्र उलटा करके मूर्द्धा से लगाया जाता है। जैसे बड़ा थोड़ा पढ़ना चढ़ना इन शब्दों में ॥ यह भी चेत रखना चाहिये कि अनेक लोग ष का उच्चारण ख के समान कर देते हैं जैसे मनुष्य को मनुख्य भाषा को भाखा दोष को दोख बोलते हैं परंतु यह रीति अशुद्ध है ॥

४२ ऌ त थ द ध न ल स ये ऊपर के दन्तों पर जीभ लगाने से उच्चरित होते हैं इसलिये इन अक्षरों को दन्त्य कहते हैं ॥

४३ उ ऊ प फ ब भ म ये ओठों से बोले जाते हैं इसलिये इन्हें ओष्ठ्य कहते हैं ॥

४४ ए ऐ इनके उच्चारण का स्थान कण्ठ और तालु है इसलिये ये कण्ठोष्ठ्य कहाते हैं ॥

४५ ओ औ कण्ठ और ओष्ठ से बोले जाते हैं इसलिये ये कण्ठोष्ठ्य कहाते हैं ॥

४६ व के उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ हैं इसलिये इसे दन्त्योष्ठ्य कहते हैं ॥ ब और व ये दो वर्ण बहुधा परस्पर बदल जाते हैं। संस्कृत शब्दों में जहां व होता है वहां हिन्दी में ब लगाते हैं और कभी २ व की जगह में ब बोलते हैं पर संस्कृत में जैसा शब्द है वैसा ही प्राय: हिन्दी में होना चाहिये ॥

४७ अनुस्वार का उच्चारण नासिका से होता है इसलिये सानुनासिक कहाता है ॥

४८ ङ ञ ण न म ये अपने २ वर्गों के स्थान और नासिका से भी बोले जाते हैं इसलिये ये सानुनासिक कहाते हैं ॥

४९ जिन अक्षरों के स्थान और प्रयत्न समान होते हैं वे आपस में सवर्ण कहाते हैं जैसे क और ग का स्थान कण्ठ है और इनका समान प्रयत्न है इस कारण क ग आपस में सवर्ण कहाते हैं। नीचे के दो चक्रों से वर्णमाला के सब अक्षरों के स्थान और प्रयत्न ज्ञात होते हैं ॥

५० स्वर चक्र

विवृत और घोष प्रयत्न				
स्थान	ह्रस्व	दीर्घ	स्थान	दीर्घ
कण्ठ	अ	आ	कण्ठ + तालु	ए
तालु	इ	ई	कण्ठ + तालु	ऐ
ओष्ठ	उ	ऊ	कण्ठ + ओष्ठ	ओ
मूर्द्धा	ऋ	ॠ	कण्ठ + ओष्ठ	औ
दन्त	ऌ	ॡ		

५१ व्यंजन चक्र

	अघोष		घोष					अघोष	
वर्ग	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण सानुनासिक	अल्पप्राण अन्तस्थ	महाप्राण ऊष्म	महाप्राण ऊष्म	स्थान
कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ		ह		कण्ठ
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	य		श	तालु
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	र		ष	मूर्द्धा
तवर्ग	त	थ	द	ध	न	ल		स	दन्त
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म	व			ओष्ठ

इति प्रथम अध्याय ॥

अथ द्वितीय अध्याय ॥

संधि प्रकरण ।

५२ प्राय: प्रत्येक भाषा में कहीं २ ऐसा होता है कि दो अक्षर निकट होने से परस्पर मिल जाते हैं उनके मिलने से जो कुछ विकार होता है उसी को संधि कहते हैं ॥

५३ संस्कृत भाषा में सब शब्द संधि के आधीन रहते हैं और हिन्दी में संस्कृत के अनेक शब्द आया करते हैं उनके अर्थ और व्युत्पत्ति समझने के लिये हिन्दी में संधि का कुछ ज्ञान आवश्यक है। अब संधि के मुख्य नियम जो हिन्दी के विद्यार्थियों को काम आवें उन्हें लिखते हैं ॥

५४ संधि तीन प्रकार की है अर्थात स्वरसंधि व्यंजनसंधि और विसर्गसंधि ॥

५५ स्वर के साथ स्वर का जो संयोग होता है उसे स्वरसंधि कहते हैं ॥

५६ व्यंजन अथवा स्वर के साथ व्यंजन का जो संयोग होता है उसे व्यंजनसंधि कहते हैं ॥

५७ स्वर और व्यंजन के साथ जो विसर्ग का संयोग होता है उसे विसर्गसंधि कहते हैं ॥

१ स्वरसंधि ।

५८ स्वरसंधि के पांच भाग हैं अर्थात दीर्घ गुण वृद्धि यण् और अयादि चतुष्टय ॥

१ दीर्घ ।

५९ जब समान दो स्वर ह्रस्व वा दीर्घ एकट्ठे होते हैं तो दोनों को मिलाकर एक दीर्घ स्वर कर देते हैं। यह बात नीचे के उदाहरण देखने से प्रत्यक्ष हो जायगी ॥

यदि पूर्व पद के अंत में पहिली पांती का स्वर हो	और पर पद के आदि में दूसरी पांती का स्वर होवे	तो दोनों मिलकर तीसरी पांती का स्वर हो जायगा	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
अ	अ	आ	परम + अर्थ	= परमार्थ
अ	आ	आ	देव + आलय	= देवालय
आ	अ	आ	विद्या + अर्थी	= विद्यार्थी
आ	आ	आ	विद्या + आलय	= विद्यालय
इ	इ	ई	प्रति + इति	= प्रतीति
इ वा	ई और	ई और	अधि + ईश्वर	= अधीश्वर
ई और	इ वा	ई और	मही + इन्द्र	= महीन्द्र
ई	ई	ई	नदी + ईश	= नदीश
उ	उ	ऊ	विधु + उदय	= विधूदय
उ	ऊ	ऊ	लघु + ऊर्म्मि	= लघूर्म्मि
ऊ	उ	ऊ	स्वयंभू + उदय	= स्वयंभूदय
ऋ	ऋ	ॠ	मातृ + ऋद्धि	= मातॄद्धि

२ गुण ।

६० ह्रस्व अथवा दीर्घ अकार से परे ह्रस्व वा दीर्घ इ उ ऋ रहें तो अ इ मिलकर ए और अ उ मिलकर ओ अ ऋ मिलकर अर् होता है । इसी विकार को गुण कहते हैं । नीचे के चक्र में इनके उदाहरण लिखे हैं ॥

यदि पूर्व पद के अंत में पहिली पंक्ति का स्वर हो	और पर पद के आदि में दूसरी पंक्ति का स्वर होवे	तो दोनों मिलकर तीसरी पंक्ति का स्वर हो जायगा	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
अ	इ वा	ए	देव + इन्द्र	= देवेन्द्र
अ	ई	ए	परम + ईश्वर	= परमेश्वर

आ	इ	ए	महा + इन्द्र = महेन्द्र
आ	ई	ए	महा + ईश = महेश
अ	उ	ओ	हित + उपदेश = हितोपदेश
अ	ऊ	ओ	जल + ऊर्म्मि = जलोर्म्मि
आ	उ	ओ	महा + उत्सव = महोत्सव
आ	ऊ	ओ	गंगा + ऊर्म्मि = गंगोर्म्मि
अ	ऋ	अर्	हिम + ऋतु = हिमर्तु
आ	ऋ	अर्	महा + ऋषि = महर्षि

३ वृद्धि ।

६१　ह्रस्व अथवा दीर्घ अकार से परे ए ऐ ओ वा औ रहे तो अ ए वा अ ऐ मिलकर ऐ और अ ओ वा अ औ मिलकर औ होता है । इस विकार को वृद्धि कहते हैं । उदाहरण चक्र में देख लो ॥

यदि पूर्व पद के अन्त में पहिली पांती का स्वर हो	और पर पद के आदि में दूसरी पांती का स्वर हो	तो दोनों मिलकर तीसरी पांती का स्वर होता है	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
अ	ए	ऐ	एक + एक	= एकैक
अ	ऐ	ऐ	परम + ऐश्वर्य	= परमैश्वर्य
आ	ए	ऐ	तथा + एव	= तथैव
आ	ऐ	ऐ	महा + ऐश्वर्य	= महैश्वर्य
अ	ओ	औ	सुन्दर + ओदन	= सुन्दरौदन
आ	ओ	औ	महा + ओषधि	= महौषधि
अ	औ	औ	परम + औषध	= परमौषध
आ	औ	औ	महा + औदार्य	= महौदार्य

४ यण्।

६२ ह्रस्व वा दीर्घ इकार उकार ऋकार से परे कोई भिन्न स्वर रहे तो क्रम से ह्रस्व वा दीर्घ इ उ ऋ को य व र हो जाते हैं। इसी विकार को यण् कहते हैं। यथा

यदि पूर्व पद के अंत में पहिली पांती का स्वर होवे	और पर पद के आदि में दूसरी पांती का स्वर होवे	तो दोनों मिलकर तीसरी पांती के वर्ण हो जावेंगे	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
इ	अ	य	यदि + अपि	= यद्यपि
इ	आ	या	इति + आदि	= इत्यादि
इ	उ	यु	प्रति + उपकार	= प्रत्युपकार
इ	ऊ	यू	नि + ऊन	= न्यून
इ	ए	ये	प्रति + एक	= प्रत्येक
इ	ऐ	यै	अति + ऐश्वर्य	= अत्यैश्वर्य
इ	ऋ	यृ	युवति + ऋतु	= युवत्यृतु
ई	अ	य	गोपी + अर्थ	= गोप्यर्थ
ई	आ	य	देवी + आगम	= देव्यागम
ई	उ	यु	सखी + उक्त	= सख्युक्त
उ	अ	व	अनु + अय	= अन्वय
उ	आ	वा	सु + आगत	= स्वागत
उ	इ	वि	अनु + इत	= अन्वित
उ	ए	वे	अनु + एषण	= अन्वेषण
उ	ऐ	वै	बहु + ऐश्वर्य	= बह्वैश्वर्य
ऊ	अ	व	सरयू + अम्बु	= सरय्वम्बु
ऋ	अ	र	पितृ + अनुमति	= पित्रनुमति
ऋ	आ	रा	मातृ + आनन्द	= मात्रानन्द

४ अयादि ।

६३ ए ऐ ओ औ इन से जब कोई स्वर आगे रहता है तो क्रम से अय् आय् अव् आव् हो जाते हैं । इस विकार को अयादि कहते हैं । नीचे के चक्र में उदाहरण लिखे हैं ॥

यदि पूर्व पद के अंत में पहिली पांती का स्वर हो	और पर पद के आदि में दूसरी पांती का स्वर हो	तो अन्त्य स्वर के बदले तीसरी पांती के वर्ण हो जाते	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
ए	अ	अय्	ने + अन	= नयन
ऐ	अ	आय्	नै + अक	= नायक
ओ	अ	अव्	पो + अन	= पवन
ओ	इ	अव्	पो + इत्र	= पवित्र
ओ	ई	अव्	गो + ईश	= गवीश
औ	अ	आव्	पौ + अक	= पावक
औ	इ	आव्	भौ + इनी	= भाविनी
औ	उ	आव्	भौ + उक	= भावुक

६४ यदि शब्द के अनन्तर में ए वा ओ रहे और पर शब्द के आदि में अ आवे तो अ का लोप हो जायगा । उसको लुप्त अकार कहते हैं और ऐसे ऽ चिन्ह से बोधित होता है । यथा सखे+अर्पय=सखेऽर्पय ॥

६५ अंत्य और आद्य स्वर के संयोग से जो संधि फल होता है वह नीचे के चक्र देखने से ज्ञात होता है । जैसे अंत्य स्वर ई और आदि स्वर ए हो तो दोनों का संधि फल वहां पर देखो जहां ईकार की पांती एकार की पांती से मिलजाती है तो वह सुगमता पूर्वक प्राप्त हो जायगा । इसी रीति स्वर संधि के लिखे हुए जितने नियम हैं वे सब इस चक्र में प्रत्यक्ष देख पड़ेंगे ॥

अन्त्य स्वर \ आदि स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ए	ऐ	ओ	औ
अ	आ	आ	ए	ए	ओ	ओ	अर	अर	ऐ	ऐ	औ	औ
आ	आ	आ	ए	ए	ओ	ओ	अर	अर	ऐ	ऐ	औ	औ
इ	य	या	ई	ई	यु	यू	यृ	यॄ	ये	यै	यो	यौ
ई	य	या	ई	ई	यु	यू	यृ	यॄ	ये	यै	यो	यौ
उ	व	वा	वि	वी	वु	वू	वृ	वॄ	वे	वै	वो	वौ
ऊ	व	वा	वि	वी	वु	वू	वृ	वॄ	वे	वै	वो	वौ
ऋ	र	रा	रि	री	रु	रू	ॠ	ॠ	रे	रै	रो	रौ
ॠ	र	रा	रि	री	रु	रू	ॠ	ॠ	रे	रै	रो	रौ
ए	अय	अया	अयि	अयी	अयु	अयू	अयृ	अयॄ	अये	अयै	अयो	अयौ
ऐ	आय	आया	आयि	आयी	आयु	आयू	आयृ	आयॄ	आये	आयै	आयो	आयौ
ओ	अव	अवा	अवि	अवी	अवु	अवू	अवृ	अवॄ	अवे	अवै	अवो	अवौ
औ	आव	आवा	आवि	आवी	आवु	आवू	आवृ	आवॄ	आवे	आवै	आवो	आवौ

२ व्यंजन संधि

६६ व्यंजन अथवा स्वर के साथ जो व्यंजन का विकार होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं । संस्कृत में इसका विस्तार ऐसा बढ़ाके किया गया है कि जिसका बोध और स्मरण बड़ी कठिनता से होता है परंतु हिन्दी भाषा में जो थोड़े से इस संधि के आवश्यक नियम हैं उन्हें लिखते हैं ॥

६७ यदि ककार से परे घोष अन्तस्थ वा स्वर वर्ण रहै तो प्रायः क के स्थान में ग होगा। जैसे

दिक् + गज = दिग्गज
वाक् + दत्त = वाग्दत्त
दिक् + अम्बर = दिगम्बर
वाक् + ईश = वागीश
धिक् + याचना = धिग्याचना

६८ यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण से परे सानुनासिक वर्ण रहे तो प्रथम वर्ण के स्थान में निज वर्ग का सानुनासिक होगा। यथा

प्राक् + मुख = प्राङ्मुख
वाक् + मय = वाङ्मय
जगत् + नाथ = जगन्नाथ
उत् + मत्त = उन्मत्त
चित् + मय = चिन्मय

६९ यदि च ट प वर्ण से परे घोष अन्तस्थ वा स्वर वर्ण रहे तो प्रायः च के स्थान में ज और ट के स्थान में ड वा ड़ और प के स्थान में ब हो जाता है। जैसे

अच् + अंत = अजंत
षट् + दर्शन = षड्दर्शन
अप् + भाग = अब्भाग
अप् + जा = अब्जा

७० यदि ह्रस्व स्वर से परे छ वर्ण होवे तो उसे च सहित छ होता है और जो दीर्घ स्वर से परे रहे तो कहीं २। जैसे

परि + छेद = परिच्छेद
अव + छेद = अवच्छेद
वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया
गृह + छिद्र = गृहच्छिद्र
लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया

७१ जब त वा द से परे चवर्ग अथवा टवर्ग का प्रथम वा द्वितीय वर्ण हो तो त वा द के स्थान में च वा ट होता है। और चवर्ग वा टवर्ग के तृतीय वा चतुर्थ वर्ण के परे रहते त वा द को ज वा ड हो जाता है परंतु त वा द से जब श परे रहता है तो श को छ और त वा द को च होता है और लकार के परे रहते त वा द को ल हो जाता है। ऐसे ही त वा द से परे जब ह रहता है तो ह वा द को द होकर हकार को धकार होता है। जैसे नीचे चक्र में लिखा है॥

यदि पूर्व पद के अन्त में पहिली पांती का वर्ण होवे	और पर पद के आदि में दूसरी पांती का वर्ण होवे	तो दोनों मिलकर के तीसरी पांती वर्ण होंगे	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
त वा द	च	च्च	उत् + चारण	=उच्चारण
〃	च	च्च	सत् + चिदानन्द	=सच्चिदानन्द
〃	ज	ज्ज	सत् + जाति	=सज्जाति
〃	ज	ज्ज	उत् + ज्वल	=उज्ज्वल
〃	छ	च्छ	उत् + छिन्न	=उच्छिन्न
〃	ट	ट्ट	तत् + टीका	=तट्टीका
〃	ल	ल्ल	उत् + लङ्घन	=उल्लङ्घन
〃	श	च्छ	सत् + शास्त्र	=सच्छास्त्र
〃	श	च्छ	उत् + शिष्ट	=उच्छिष्ट
〃	ह	द्ध	उत् + हार	=उद्धार
〃	ह	द्ध	तत् + हित	=तद्धित

७२ यदि त से परे ग घ द ध ब भ य र व अथवा स्वर वर्ण रहे तो त के स्थान में द होगा। और जो द से परे इन में से कोई वर्ण आवे तो कुछ विकार न होगा। यथा

पशुवत् + गामी = पशुवद्गामी
उत् + घाटन = उद्घाटन
महत् + धनुष = महद्धनुष
भविष्यत् + वाणी = भविष्यद्वाणी
सत् + वंश = सद्वंश
सत् + आनन्द = सदानन्द
उत् + अय = उदय
सत् + आचार = सदाचार
जगत् + इन्द्र = जगदिन्द्र
जगत् + ईश = जगदीश
सत् + उत्तर = सदुत्तर
महत् + ओज = महदोज
महत् + औषध = महदौषध

७३ अनुस्वार से परे जब अन्तस्थ वा ऊष्म वर्ण रहता है तो अनुस्वार का कुछ विकार नहीं होता। यथा

सं + यम = संयम
सं + वाद = संवाद
सं + लय = संलय
सं + हार = संहार

७४ यदि अन्तस्थ और ऊष्म को छोड़कर किसी वर्ग का वर्ण अनुस्वार से परे रहे तो अनुस्वार को उसी वर्ग का सानुनासिक वर्ण हो जाता है। जैसे

अहं + कार = अहङ्कार
सं + गम = सङ्गम
किं + चित = किञ्चित
सं + चय = सञ्चय
सं + तोष = सन्तोष
सं + ताप = सन्ताप
सं + पत = सम्पत

सं + बन्ध = सम्बन्ध
सं + बुद्धि = सम्बुद्धि
सं + भव = सम्भव

७५ अनुस्वार से परे स्वर वर्ण रहे तो म हो जायगा । जैसे

सं + आचार = समाचार
सं + उदाय = समुदाय
सं + ऋद्धि = समृद्धि

३ विसर्गसंधि ॥

७६ व्यंजन अथवा स्वर के साथ जो विसर्ग का विकार होता है उसे विसर्गसंधि कहते हैं ॥

७७ यदि इकार उकार पूर्वक विसर्ग से परे क ख वा प फ रहे तो विसर्ग को मूर्द्धन्य ष् प्रायः हो जाता है । और स्थानों में विसर्ग ही बना रहता है । यथा

निः + कारण = निष्कारण
निः + कपट = निष्कपट
निः + पाप = निष्पाप
निः + पत्ति = निष्पत्ति
निः + फल = निष्फल
अन्तः + करण = अन्तःकरण

७८ च छ विसर्ग से परे रहे तो विसर्ग को श और ट ठ परे होवे तो ष और त थ परे रहे तो स हो जाता है । यथा

निः + चल = निश्चल
निः + चिन्त = निश्चिन्त
निः + छल = निश्छल
धनुः + टङ्कार = धनुष्टङ्कार
निः + तार = निस्तार

७९ यदि विसर्ग से परे ग घ ज झ ड ढ द ध ब भ ङ ञ ण न म य र ल व ह होवे तो विसर्ग को ओ हो जाता है । और स्वरों में से

ह्रस्व अकार हो तो वह ओकार में मिल जाता है और उसके पहचानने के लिये ऽ ऐसा चिन्ह (अर्धाकार) कर देते हैं। जैसे

मनः + गत = मनोगत
मनः + भाव = मनोभाव
मनः + ज्ञ = मनोज्ञ
मनः + योग = मनोयोग
मनः + रथ = मनोरथ
मनः + नीत = मनोनीत
तेजः + मय = तेजोमय
मनः + हर = मनोहर
मनः + अनवधानता = मनोऽनवधानता

८० यदि विसर्ग के पूर्व अ आ छोड़ कर कोई दूसरा स्वर हो और विसर्ग से परे ऊपर के लिखे हुए अक्षर वा स्वर वर्ण रहे तो विसर्ग के स्थान में र हो जाता है। जैसे

निः + गुण = निर्गुण
निः + घिन = निर्घिन
निः + जल = निर्जल
निः + झर = निर्झर
बहिः + देश = बहिर्देश
निः + धन = निर्धन
निः + बल = निर्बल
निः + भय = निर्भय
निः + नाथ = निर्नाथ
निः + मल = निर्मल
निः + युक्ति = निर्युक्ति
निः + वन = निर्वन
निः + विकार = निर्विकार

नि: + हस्त = निर्हस्त
नि: + अर्थ = निरर्थ
नि: + आधार = निराधार
नि: + इच्छा = निरिच्छा
नि: + उपाय = निरुपाय
नि: + औषध = निरौषध

८१ यदि विसर्ग के पूर्व ह्रस्व और दीर्घ अकार को छोड़कर कोई दूसरा स्वर होवे और विसर्ग से परे रकार होवे तो विसर्ग का लोप करके पूर्व स्वर को दीर्घ कर देते हैं। यथा

नि: + रस = नीरस
नि: + रोग = नीरोग
नि: + रन्ध्र = नीरन्ध्र
नि: + रेफ = नीरेफ

इति संधिप्रकरण ॥

अथ तृतीय अध्याय ॥

शब्द साधन।

८२ कह आये हैं कि शब्दसाधन उसे कहते हैं जिस में शब्दों के भेद अवस्था और व्युत्पत्ति का बर्णन होते हैं ॥

८३ कान से जो सुनाई देवे उसे शब्द कहते हैं परंतु व्याकरण में केवल उन शब्दों का विचार किया जाता है जिनका कुछ अर्थ होता है। अर्थबोधक शब्द तीन प्रकार के होते हैं अर्थात संज्ञा क्रिया और अव्यय ॥

८४ संज्ञा वस्तु के नाम को कहते हैं। जैसे भारतवर्ष पृथिवी के एक खण्ड का नाम है पीपल एक पेड़ का नाम है भलाई एक गुण का नाम है इत्यादि ॥

८५ क्रिया का लक्षण यह है कि उसका मुख्य अर्थ करना है और वह काल पुरुष और वचन से सम्बन्ध नित्य रखती है। जैसे मारा था जाते हैं पढ़ सकेंगी इत्यादि ॥

८६ अव्यय उसे कहते हैं जिसमें लिङ्ग संख्या और कारक न हों अर्थात इनके कारण जिसके स्वरूप में कुछ विकार न दिखाई देवे। जैसे परंतु यद्यपि तथापि फिर जब तब कब इत्यादि ॥

८७ पहिले संज्ञा तीन प्रकार की होती है अर्थात रूढ़ि यौगिक और योगरूढ़ि ॥

८८ रूढ़ि संज्ञा उसे कहते हैं जिसका कोई खण्ड सार्थक न हो सके। जैसे घोड़ा कोड़ा हाथी पोथी इत्यादि। घोड़ा शब्द में एक खण्ड घो और दूसरा ड़ा हुआ परंतु दोनों निरर्थक हैं इसलिये यह संज्ञा रूढ़ि कहाती है ॥

८९ जो दो शब्दों के योग से बनी हो अथवा शब्द और प्रत्यय मिलकर बने उसे यौगिक संज्ञा कहते हैं। जैसे बालबोध कालज्ञान नरमेध जीवधारी ब्रह्मचारी बोलनेहारा मारक जापक पाठक इत्यादि ॥

९० योगरूढ़ि संज्ञा वह कहाती है जो स्वरूप में यौगिक संज्ञा के समान होती पर अपने अर्थ में इतनी विशेषता रखती है कि अवयवार्थ को छोड़ संकेतितार्थ का प्रकाश करती है। जैसे पीताम्बर पङ्कज गिरिधारी लम्बोदर हनुमान गणेश इत्यादि ॥

तात्पर्य्य यह है कि पीत शब्द का अर्थ पीला है और अम्बर शब्द का अर्थ कपड़ा है परंतु जितने पीत वस्त्र पहिननेवाले हैं उन्हें छोड़कर विष्णु रूपी विशेष अर्थ का प्रकाश करता है इसलिये यह पद योगरूढ़ि है ॥

९१ फिर संज्ञा के पांच भेद और भी हैं। जातिवाचक व्यक्तिवाचक गुणवाचक भाववाचक और सर्वनाम ॥

९२ जातिवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिसके अर्थ से वैसे रूप भर का ज्ञान हो। जैसे मनुष्य स्त्री घोड़ा बैल वृक्ष पत्थर पोथी कपड़ा आदि। कहा है कि मनुष्य अमर है इस वाक्य में मनुष्य शब्द जातिवाचक है

इस कारण कि उस से किसी विशेष मनुष्य का बोध नहीं परंतु मनुष्यगण अर्थात मनुष्य भर का बोध होता है* ॥

६३ व्यक्तिवाचक मनुष्य देश नगर नदी पर्वत आदि के मुख्य नाम को कहते हैं। जैसे चण्डीदत्त बिश्वेश्वरप्रसाद भरतवर्ष काशी गंगा हिमालय बृन्दावन इत्यादि ॥

६४ गुणवाचक संज्ञा वह कहाती है जो विभेदक होती है इस कारण उसे विशेषण भी कहते हैं। वाक्य में गुणवाचक संज्ञा अकेली नहीं आती परंतु यहां उदाहरण के लिये उसे अकेली लिखते हैं। जैसे पीला नीला टेढ़ा सीधा ऊंचा नीचा उत्तम मध्यम ज्ञानी मानी इत्यादि ॥

६५ भाववाचक संज्ञा का लक्षण यह है कि जिसके कहने से पदार्थ का धर्म वा स्वभाव समझा जाय अथवा उस से किसी व्यापार का बोध हो। जैसे ऊंचाई चौड़ाई समझ बूझ दौड़ धूप लेन देन छीन छोर बोल चाल इत्यादि ॥

६६ सर्वनाम संज्ञा उसे कहते हैं जो और संज्ञाओं के बदले में कही जाय। जैसे यह वह आप और जो सो कोई कौन कई आप मैं तू इत्यादि। सर्वनाम संज्ञा का प्रयोजन यह है कि किसी वस्तु का नाम कहकर यदि फिर उसके विषय कुछ चर्चा करने की आवश्यकता हो तो उसके बदले में सर्वनाम आता है और सर्वनाम से पूर्वोक्त नाम बोधित हो जाता है। सर्वनामों से यह फल निकलता है कि वारम्बार किसी संज्ञा को कहना नहीं पड़ता। इस से न तो विशेष बात बढ़ती है और

---

* विद्यार्थी को चाहिये कि जातिवाचक का भेद इस रीति से समझ लेवे कि रामायण पोथी है भागवत भी पोथी है हितोपदेश यह भी पोथी का नाम है तो कई पदार्थ हैं जो अनेक विषय में भिन्न २ हैं परंतु एक मुख्य विषय में समान हैं इस समानता के कारण उन सब पदार्थों की एक ही जाति मानी जाती है और एक ही जातिवाचक नाम अर्थात पोथी उनको दिया गया है। रामायण के गुण भागवत वा हितोपदेश में नहीं हैं और रामायण नाम उन से कहा नहीं जाता परंतु पोथी के गुण रामायण में भागवत में और हितोपदेश में रहते हैं इस कारण पोथी यह जातिवाचक नाम तीनों से लगता है ॥

न वाक्य में नीरसता होती है। सर्वनामों के रूपों में लिङ्ग के कारण कुछ विकार नहीं होता है जिन संज्ञाओं के स्थान में वे आते हैं उनके अनुसार सर्वनामों का लिङ्ग समझा जाता है। सर्वनाम संज्ञा के दो धर्म हैं एक तो पुरुषबाचक जैसे मैं तू वह और दूसरा गणीभूत जैसे कौन कोई आन और इत्यादि ॥

लिङ्ग के विषय में ॥

९७ हिन्दी भाषा में दो ही लिङ्ग होते हैं एक पुल्लिङ्ग दूसरा स्त्रीलिङ्ग। संस्कृत और आन भाषाओं में तीन लिङ्ग होते हैं परंतु हिन्दी में नपुंसक लिङ्ग नहीं है यहां सब सजीव और निर्जीव पदार्थों के लिङ्ग व्यवहार के अनुसार पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग में समाप्त हो जाते हैं ॥

९८ उन प्राणीवाचक शब्दों के लिङ्ग जान्ने में कुछ कठिनता नहीं पड़ती जिनके अर्थ से मिथुन अर्थात जोड़े का ज्ञान होता है क्योंकि पुरुषबोधक संज्ञा को पुल्लिङ्ग और स्त्रीबोधक संज्ञा को स्त्रीलिङ्ग कहते हैं। जैसे नर लड़का घोड़ा हाथी इत्यादि पुल्लिङ्ग और नारी लड़की घोड़ी हथिनी इत्यादि स्त्रीलिङ्ग कहाती हैं ॥

९९ हिन्दी के सब शब्दों का अधिक भाग संस्कृत से निकला हुआ है और संस्कृत में जिन शब्दों का पुल्लिङ्ग वा नपुंसकलिङ्ग होता है वे सब हिन्दी में प्रायः पुल्लिङ्ग समझे जाते हैं। और जो शब्द संस्कृत में स्त्रीलिङ्ग होते हैं वे हिन्दी में भी प्रायः स्त्रीलिङ्ग रहते हैं। जैसे देश सूर्य्य जल रत्न दुःख इन में से जल रत्न दुःख संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग हैं परंतु हिन्दी में पुल्लिङ्ग हैं और भूमि बुद्धि सभा लज्जा संस्कृत में और हिन्दी में भी स्त्रीलिङ्ग हैं ॥

१०० हिन्दी में जिन अप्राणीवाचक शब्दों के अंत में अकार वा आकार रहता है और उनका उपान्त्य वर्ण त नहीं होता है वे प्रायः पुल्लिङ्ग समझे जाते हैं। जैसे वर्णन ज्ञान पाप बच्चा कपड़ा पंखा ॥

१०१ जिन निर्जीव शब्दों के अंत में ई वा त होता है वे प्रायः स्त्रीलिङ्ग हैं। जैसे मोरी बोली चिट्ठी बात रात इत्यादि ॥

१०२ जिन भाववाचक शब्दों के अंत में आव त्व पन वा पा हो वे सब के सब पुल्लिङ्ग हैं। जैसे चढ़ाव बिकाव मिलाव मनुष्यत्व स्त्रीत्व पशुत्व लड़कपन सीधापन बुढ़ापा इत्यादि ॥

१०३ जिन भाववाचक शब्दों के अंत में आई ता वट वा हट हो वे स्त्रीलिङ्ग हैं। जैसे अधिकाई चतुराई भलाई उत्तमता कोमलता मित्रता बनावट सजावट चिकनाहट चिल्लाहट इत्यादि ॥

१०४ सामासिक शब्दों का लिङ्ग अन्त्य शब्द के लिङ्ग के अनुसार होता है। जैसे स्त्रीलिङ्ग यह शब्द पुल्लिङ्ग है इस कारण कि लिङ्ग शब्द पुल्लिङ्ग है वैसे ही दयासागर पुल्लिङ्ग है इस कारण कि यद्यपि दया शब्द स्त्रीलिङ्ग है तथापि अन्त्य शब्द अर्थात सागर पुल्लिङ्ग है ॥

अथ स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय ॥

१०५ आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त्य आकार को प्रायः ईकार करने से स्त्रीलिङ्ग बन जाता है। कहीं २ आकार के स्थान में इया हो जाता है और यदि अंत्याक्षर द्वित्व हो तो एक व्यंजन का लोप हो जाता है। यथा

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
गधा	गधी
घोड़ा	घोड़ी
चेला	चेली
भांजा	भांजी
कुत्ता	कुत्ती वा कुतिया

१०६ हलन्त* पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त्य हल से ई को मिला करके स्त्रीलिङ्ग बना लो। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
अहीर	अहीरी
तरुन	तरुनी

---

* चेत रखना चाहिये कि हिन्दी भाषा में अकारान्त शब्द प्रायः हलन्त के समान उच्चरित होते हैं ॥

दास	दासी
देव	देवी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी

१०७ व्यापार करनेवाले पुल्लिङ्ग शब्दों से इन करके जो शब्द के अंत में स्वर हो तो उसका लोप कर देते हैं। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
ग्वाला	ग्वालिन
तेली	तेलिन
बैपारी	बैपारिन
लोहार	लोहारिन
सोनार	सोनारिन

१०८ बहुतेरे पुल्लिङ्ग शब्दों के आगे नी लगाने से स्त्रीलिङ्ग हो जाता है। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
ऊंट	ऊंटनी
बाघ	बाघनी
मोर	मोरनी
सिंह	सिंहनी
अहि	अहिनी

१०९ उपनामवाची पुल्लिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिये अन्त्य स्वर को आइन आदेश कर देते हैं और जो आदि अक्षर का स्वर आ होवे तो उसे ह्रस्व कर देते हैं। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
ओझा	ओझाइन
चौबे	चौबाइन
दुबे	दुबाइन
तिवारी	तिवराइन
पंडा	पंडाइन
पांड़े	पड़ाइन

मिश्चिर	मिसिराइन
ठाकुर	ठकुराइन
बाबू	बबुआइन

११० कोई एक पुल्लिङ्ग शब्दों के स्त्रीलिङ्ग शब्द दूसरे ही होते हैं। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
पिता	माता
पुरुष	स्त्री
राजा	रानी
बैल	गाय
भाई	बहिन

वचन के विषय में।

१११ व्याकरण में वचन संख्या को कहते हैं और वे भाषा में दो ही हैं एकवचन और बहुवचन। जिस शब्द के रूप से एक पदार्थ का बोध होता है उसे एकवचन और जिस से एक से अधिक समझा जाय उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे लड़की गाती है यह एकबचन है और लड़कियां गाती हैं इसे बहुवचन कहते हैं॥

११२ संज्ञा में और क्रिया में एकवचन से बहुवचन बनाने की रीति आगे लिखी जायगी॥ बहुत से स्थानों में एकवचन और बहुवचन के रूपों में कुछ भेद नहीं होता इस कारण अनेक के बोध के निमित्त गण जाति लोग इत्यादि लगाते हैं। जैसे ग्रहगण देवगण मनुष्यजाति पशुजाति पण्डित लोग राजा लोग इत्यादि॥

कारक के विषय में।

११३ कारक उसे कहते हैं कि जिसके द्वारा वाक्य में विशेष करके क्रिया के साथ अथवा दूसरे शब्दों के संग संज्ञा का सम्बन्ध ठीक २ प्रकाशित होता है॥

११४ हिन्दी भाषा में कारक आठ होते हैं अर्थात

१	कर्त्ता	५	अपादान
२	कर्म	६	सम्बन्ध
३	करण	७	अधिकरण
४	सम्प्रदान	८	सम्बोधन

१ कर्त्ता कारक उसे कहते हैं जो क्रिया के व्यापार को करे। भाषा में उसका कोई विशेष चिन्ह नहीं है परंतु सकर्मक क्रिया के कर्त्ता के आगे अपूर्ण भूत को छोड़के शेष भूतकालों में ने आता है। जैसे लड़का पढ़ता है पण्डित पढ़ाता था पिता ने सिखाया है * ॥

२ कर्म उसे कहते हैं जिसमें क्रिया का फल रहता है उसका चिन्ह को है। जैसे मैं पुस्तक को देखता हूं उसने पण्डित को बुलाया ॥

३ करण उसे कहते हैं जिसके द्वारा कर्त्ता व्यापार को सिद्ध करे उसका चिन्ह से है। जैसे हाथ से उठाता है पांव से चलता है ॥

४ सम्प्रदान वह कहाता है जिसके लिये कर्त्ता व्यापार को करता है उसका चिन्ह को है। जैसे गुरु ने शिष्य को पोथी दी ॥

५ क्रिया के विभाग की अवधि को अपादान कहते हैं उसका चिन्ह से है। जैसे वृक्ष से पत्ते गिरते हैं वह मनुष्य लोटे से जल लेता है ॥

६ सम्बन्ध कारक का लक्षण यह है जिस से स्वत्व सम्बन्ध आदि समझा जाय उसके चिन्ह ये हैं का के की। जैसे राजा का घोड़ा प्रजा के घर मन की शक्ति ॥

७ कर्त्ता और कर्म के द्वारा जो क्रिया का आधार उसे अधिकरण कहते हैं उसके चिन्ह में पै पर हैं। जैसे वह अपने घर में रहता है वे आसन पर बैठते हैं ॥

---

* सात सकर्मक क्रिया हैं अर्थात बकना बोलना भूलना जनना लाना लेजाना और खाजाना जिनके साथ भूतकाल में कर्त्ता के आगे ने नहीं आता है। लाना (ले+आना=लाना) लेजाना और खाजाना संयुक्त क्रिया हैं उनका पूर्वार्द्ध सकर्मक और उत्तरार्द्ध अकर्मक है इस से यह नियम निकलता है कि जब संयुक्त सकर्मक क्रिया का उत्तरार्द्ध अकर्मक होता है तब उस क्रिया के भूतकाल में कर्त्ता के साथ ने चिन्ह नहीं होता ॥

८ सम्बोधन उसे कहते हैं जिस से कोई किसी को चिताकर अथवा पुकारकर अपने सन्मुख कराता है उसके चिन्ह हे हो अरे इत्यादि हैं। जैसे हे महाराज रामदयाल हो अरे लड़के सुन ॥

११५ ऊपर की रीति से प्रत्येक संज्ञा की आठ अवस्था हो सकती हैं इन अवस्थाओं की सूचक प्रत्ययों को विभक्तियां कहते हैं ॥

कर्त्ता आदि की सूचक विभक्तियां।

कारक।	विभक्तियां।	कारक।	विभक्तियां।
कर्त्ता	० वा ने	अपादान	से
कर्म	को	सम्बन्ध	का के की
करण	से	अधिकरण	में पै पर
सम्प्रदान	को	सम्बोधन	हे अरे हो

११६ विभक्तियां स्वयं तो निरर्थक हैं परंतु संज्ञा के अंत में जब आती हैं तो सार्थक हो जाती हैं और यद्यपि इन विभक्तियों में कुछ विकार नहीं होता तो भी संज्ञा के अंत में इनके लगाने से बहुधा विकार हुआ करता है ॥

११७ इसका भी स्मरण करना चाहिये कि कर्त्ता और सम्बोधन को छोड़ करके शेष कारकों के बहुवचन में शब्द और विभक्ति के मध्य में बहुवचन का चिन्ह ओं लगाया जाता है परंतु सम्बोधन के बहुवचन में निरनुनासिक ओ होता है ॥

अथ संज्ञा का रूपकरण।

११८ कह आये हैं कि संज्ञा दो प्रकार की होती हैं एक पुल्लिङ्ग दूसरी स्त्रीलिङ्ग फिर प्रत्येक लिङ्ग की संज्ञा भी दो प्रकार की होती हैं एक तो वे जिनका उच्चारण हलन्तसा हुआ करता है दूसरी वे जिनका उच्चारण स्वरान्त होता है ॥

११९ संज्ञा की कारक रचना अनेक रीति से होती है इस कारण सुभीते के निमित्त जितनी संज्ञा समान रीति से अपने कारकों को रचती हैं उन सभों को एक ही भाग में कर देते हैं। हिन्दी की सब संज्ञा चार भाग में आ सकती हैं। यथा

१२० पहिले भाग में वे सब संज्ञा आती हैं जिनके एकवचन और बहुवचन में विभक्ति के आने से संज्ञा का कुछ विकार नहीं होता है परंतु बहुवचन में कर्त्ता और सम्बोधन को छोड़कर शेष कारकों में शब्द के आगे ओं लगाकर विभक्ति लाते हैं ॥

१२१ दूसरे भाग की वे सब संज्ञा हैं जिनके एकवचन में और कर्त्ता के बहुवचन में विभक्ति के कारण कुछ बदलता नहीं पर बहुवचन के कर्म आदि कारकों में वा बहुवचन के चिन्ह ओं का वा अंत्य दीर्घ स्वर का विकार होता है ॥

१२२ तीसरे भाग में जो संज्ञा आती हैं उनका यह लक्षण है कि केवल उन्हीं में कर्त्ता कारक के बहुवचन का विकार होता है ॥

१२३ चौथे भाग में वे सब संज्ञा आती हैं जिनके प्रत्येक कारक के दोनों वचनों में विभक्ति के आने से संज्ञा कुछ बदल जाता है ॥

पहिला भाग ।

१२४ इस भाग में ह्रस्व उकारान्त एकारान्त ओकारान्त और हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द होते हैं। विभक्ति के आने से उनका कुछ विकार नहीं होता परंतु कर्त्ता और सम्बोधन के बहुवचन को छोड़कर शेष कारकों में शब्द से आगे ओं लगाकर विभक्ति लाते हैं। उदाहरण नीचे देते हैं। यथा

१२५ ह्रस्व उकारान्त पुल्लिङ्ग बन्धु शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	बन्धु वा बन्धु ने*	बन्धु वा बन्धुओं ने*

* चेत रखना चाहिये कि जिस कर्त्ता कारक के साथ ने चिन्ह होता है वह अपूर्णभूत को छोड़के केवल सकर्मक धातु की भूतकालिक क्रिया के साथ आ सकता है। और यदि कर्म कारक का चिन्ह लुप्त हो तो क्रिया के लिङ्ग वचन कर्म के अनुसार होंगे जैसे पण्डित ने पोथी लिखी महाराज ने अपने घोड़े भेजे। परंतु जो कर्म अपने चिन्ह को के साथ आवे तो क्रिया सामान्य पुल्लिङ्ग अन्यपुरुष एकवचन में होता है। जैसे मैंने रामायण को पढ़ा है रानी ने सहेलियों को बुलाया इत्यादि। इस प्रयोग का वर्णन आगे लिखा जायगा ॥

कर्म	बन्धु को	बन्धुओं को
करण	बन्धु से	बन्धुओं से
सम्प्रदान	बन्धु को	बन्धुओं को
अपादान	बन्धु से	बन्धुओं से
सम्बन्ध	बन्धु का—के—की	बन्धुओं का—के—की
अधिकरण	बन्धु में	बन्धुओं में
सम्बोधन	हे बन्धु	हे बन्धुओ ॥

१२६ ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिङ्ग रेणु शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	रेणु वा रेणु ने	रेणु वा रेणुओं ने
कर्म	रेणु को	रेणुओं को
करण	रेणु से	रेणुओं से
सम्प्रदान	रेणु को	रेणुओं को
अपादान	रेणु से	रेणुओं से
सम्बन्ध	रेणु का—के—की	रेणुओं का—के—की
अधिकरण	रेणु में	रेणुओं में
सम्बोधन	हे रेणु	हे रेणुओ ॥

१२७ एकारान्त पुल्लिङ्ग दुबे शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	दुबे वा दुबे ने	दुबे वा दुबेओं ने
कर्म	दुबे को	दुबेओं को
करण	दुबे से	दुबेओं से
सम्प्रदान	दुबे को	दुबेओं को
अपादान	दुबे से	दुबेओं से
सम्बन्ध	दुबे का—के—की	दुबेओं का—के—की
अधिकरण	दुबे में	दुबेओं में
सम्बोधन	हे दुबे	हे दुबेओ ॥

१२८ ओकारान्त पुल्लिङ्ग कोदो शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	कोदो वा कोदो ने	कोदो वा कोदोओं ने
कर्म	कोदो को	कोदोओं को
करण	कोदो से	कोदोओं से
सम्प्रदान	कोदो को	कोदोओं को
अपादान	कोदो से	कोदोओं से
सम्बन्ध	कोदो का—के—की	कोदोओं का—के—की
अधिकरण	कोदो में	कोदोओं में
सम्बोधन	हे कोदो	हे कोदोओ ॥

१२९ ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग सरसों शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	सरसों वा सरसों ने	सरसों वा सरसोंओं ने
कर्म	सरसों को	सरसोंओं को
करण	सरसों से	सरसोंओं से
सम्प्रदान	सरसों को	सरसोंओं को
अपादान	सरसों से	सरसोंओं से
सम्बन्ध	सरसों का—के—की	सरसोंओं का—के—की
अधिकरण	सरसों में	सरसोंओं में
सम्बोधन	हे सरसों	हे सरसोंओ ॥

१३० हलन्त पुल्लिङ्ग जल शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	जल वा जल ने	जल वा जलों ने
कर्म	जल को	जलों को
करण	जल से	जलों से
सम्प्रदान	जल को	जलों को
अपादान	जल से	जलों से

सम्बन्ध	जल का—के—की	जलों का—के—की
अधिकरण	जल में	जलों में
सम्बोधन	हे जल	हे जलो ॥

१३१ हलन्त पुल्लिङ्ग गांव शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	गांव वा गांव ने	गांव वा गांवों ने
कर्म	गांव को	गांवों को
करण	गांव से	गांवों से
सम्प्रदान	गांव को	गांवों को
अपादान	गांव से	गांवों से
सम्बन्ध	गांव का—के—की	गांवों का—के—की
अधिकरण	गांव में	गांवों में
सम्बोधन	हे गांव	हे गांवो ॥

दूसरा भाग ।

१३२ इस भाग में ह्रस्व वा दीर्घ ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द दीर्घ ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द और दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द आते हैं। एकवचन में और कर्त्ता के बहुवचन में विभक्ति के कारण कुछ बदलता नहीं पर कर्म आदि कारकों में इकारान्त शब्द से आगे ओं नहीं परंतु यों लगाकर विभक्ति लाते हैं और कदाचित् अंत्यस्वर दीर्घ हो तो उसे ह्रस्व कर देते हैं। उनके उदाहरण नीचे लिखते हैं। यथा

१३३ ह्रस्व इकारान्त पुल्लिङ्ग पति शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	पति वा पति ने	पति वा पतियों ने
कर्म	पति को	पतियों को
करण	पति से	पतियों से
सम्प्रदान	पति को	पतियों को
अपादान	पति से	पतियों से
सम्बन्ध	पति का—के—की	पतियों का—के—की

अधिकरण	पति में	पतियों में
सम्बोधन	हे पति	हे पतियो ॥

१३४ दीर्घ ईकारान्त पुल्लिङ्ग धोबी शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	धोबी वा धोबी ने	धोबी वा धोबियों ने
कर्म	धोबी को	धोबियों को
करण	धोबी से	धोबियों से
सम्प्रदान	धोबी को	धोबियों को
अपादान	धोबी से	धोबियों से
सम्बन्ध	धोबी का—के—की	धोबियों का—के—की
अधिकरण	धोबी में	धोबियों में
सम्बोधन	हे धोबी	हे धोबियो ॥

१३५ दीर्घ ऊकारान्त पुल्लिङ्ग डाकू शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	डाकू वा डाकू ने	डाकू वा डाकुओं ने
कर्म	डाकू को	डाकुओं को
करण	डाकू से	डाकुओं से
सम्प्रदान	डाकू को	डाकुओं को
अपादान	डाकू से	डाकुओं से
सम्बन्ध	डाकू का—के—की	डाकुओं का—के—की
अधिकरण	डाकू में	डाकुओं में
सम्बोधन	हे डाकू	हे डाकुओ ॥

१३६ दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग बहू शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	बहू वा बहू ने	बहू वा बहुओं ने
कर्म	बहू को	बहुओं को
करण	बहू से	बहुओं से
सम्प्रदान	बहू को	बहुओं को
अपादान	बहू से	बहुओं से

सम्बन्ध	बहू का-के-की	बहुओं का-के-की
अधिकरण	बहू में	बहुओं में
सम्बोधन	हे बहू	हे बहुओ ॥

तीसरा भाग ।

१३७ इस भाग में पुल्लिङ्ग शब्द नहीं हैं पर आकारान्त ह्रस्व और दीर्घ इकारान्त और हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द आते हैं । आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के एकवचन में विकार नहीं होता बहुवचन में भी केवल इतना विशेष है कि कर्त्ता में शब्द के अंत्यस्वर को सानुनासिक कर देते हैं । ह्रस्व और दीर्घ इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप एकवचन में ज्यों के त्यों बने रहते हैं और बहुवचन में वे पुल्लिङ्ग ईकारान्त शब्दों के अनुसार अपने कारकों को रचते हैं केवल कर्त्ता के बहुवचन में शब्द से आगे यां होता है और यदि दीर्घ ईकारान्त हो तो उसे ह्रस्व कर देते हैं । हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द की इतनी विशेषता है कि कर्त्ता के बहुवचन में शब्द से आगे एं लगा देते हैं । इनके उदाहरण नीचे लिखे हैं । यथा

१३८ आकारान्त स्त्रीलिङ्ग खटिया शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	खटिया वा खटिया ने	खटियां वा खटियाओं ने
कर्म	खटिया को	खटियाओं को
करण	खटिया से	खटियाओं से
सम्प्रदान	खटिया को	खटियाओं को
अपादान	खटिया से	खटियाओं से
सम्बन्ध	खटिया का-के-की	खटियाओं का-के-की
अधिकरण	खटिया में	खटियाओं में
सम्बोधन	हे खटिया	हे खटियाओ ॥

१३९ ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिङ्ग तिथि शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	तिथि वा तिथि ने	तिथियां वा तिथियों ने
कर्म	तिथि को	तिथियों को
करण	तिथि से	तिथियों से

सम्प्रदान	तिथि को	तिथियों को
अपादान	तिथि से	तिथियों से
सम्बन्ध	तिथि का—के—की	तिथियों का—के—की
अधिकरण	तिथि में	तिथियों में
सम्बोधन	हे तिथि	हे तिथियो ॥

१४० दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग बकरी शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्ता	बकरी वा बकरी ने	बकरियां वा बकरियों ने
कर्म	बकरी को	बकरियों को
करण	बकरी से	बकरियों से
सम्प्रदान	बकरी को	बकरियों को
अपादान	बकरी से	बकरियों से
सम्बन्ध	बकरी का—के—की	बकरियों का—के—की
अधिकरण	बकरी में	बकरियों में
सम्बोधन	हे बकरी	हे बकरियो ॥

१४१ हलन्त स्त्रीलिङ्ग घास शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	घास वा घास ने	घासें वा घासों ने
कर्म	घास को	घासों को
करण	घास से	घासों से
सम्प्रदान	घास को	घासों को
अपादान	घास से	घासों से
सम्बन्ध	घास का—के—की	घासों का—के—की
अधिकरण	घास में	घासों में
सम्बोधन	हे घास	हे घासो ॥

चौथा भाग ।

१४२ इस भाग में आकारान्त पुलिङ्ग शब्द होते हैं । एकवचन में और कर्त्ता के बहुवचन में विभक्ति के आने से आ को ए हो जाता

है और शेष बहुवचन में आ को ओं आदेश करके फिर विभक्ति लाते हैं। यथा

१४३ आकारान्त पुल्लिङ्ग घोड़ा शब्द।

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	घोड़ा वा घोड़े ने	घोड़े वा घोड़ों ने
कर्म	घोड़े को	घोड़ों को
करण	घोड़े से	घोड़ों से
सम्प्रदान	घोड़े को	घोड़ों को
अपादान	घोड़े से	घोड़ों से
सम्बन्ध	घोड़े का—के—की	घोड़ों का—के—की
अधिकरण	घोड़े में	घोड़ों में
सम्बोधन	हे घोड़े	हे घोड़ो॥

१४४ विशेषता यह है कि यदि संस्कृत आकारान्त पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग शब्द हो जैसे आत्मा कर्त्ता युवा राजा वक्ता श्रोता क्रिया संज्ञा आदि तो उसके रूपों में कुछ विकार नहीं होता परंतु बहुवचन में अंत्य आकार से परे ओं कर देते हैं। जैसे

संस्कृत आकारान्त राजा शब्द।

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	राजा वा राजा ने	राजा वा राजाओं ने
कर्म	राजा को	राजाओं को
करण	राजा से	राजाओं से
सम्प्रदान	राजा को	राजाओं को
अपादान	राजा से	राजाओं से
सम्बन्ध	राजा का—के—की	राजाओं का—के—की
अधिकरण	राजा में	राजाओं में
सम्बोधन	हे राजा	हे राजाओ॥

१४५ यदि व्यक्तिवाचक वा सम्बन्धवाचक आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द हो जैसे मन्ना मोहना रामा काका दादा पिता आदि तो उसकी कारक-रचना हिन्दी अथवा संस्कृत आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के समान दोनों रीति पर हुआ करती है। जैसे

१४६ व्यक्तिवाचक आकारान्त पुल्लिंग दादा शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।		
कर्त्ता	दादा वा दादा ने	अथवा	दादा वा दादे ने
कर्म	दादा को	"	दादे को
करण	दादा से	"	दादे से
सम्प्रदान	दादा को	"	दादे को
अपादान	दादा से	"	दादे से
सम्बन्ध	दादा का—के—की	"	दादे का—के—की
अधिकरण	दादा में	"	दादे में
सम्बोधन	हे दादा	"	हे दादे ॥

बहुवचन ।

कर्त्ता	दादा वा दादाओं ने	अथवा	दादे वा दादों ने
कर्म	दादाओं को	"	दादों को
करण	दादाओं से	"	दादों से
सम्प्रदान	दादाओं को	"	दादों को
अपादान	दादाओं से	"	दादों से
सम्बन्ध	दादाओं का—के—की	"	दादों का—के—की
अधिकरण	हे दादाओ	"	हे दादो ॥

गुणवाचक संज्ञा के विषय में ।

१४७ कह आये हैं कि गुणवाचक संज्ञा बिभेदक है अर्थात् दूसरी संज्ञा की विशेषता का प्रकाश करती है इसलिये वह विशेषण कहाती है और जिसकी विशेषता को जनाती है वह विशेष्य कहाता है । जैसे निर्मल जल इस में निर्मल विशेषण और जल विशेष्य है ऐसा ही सर्वत्र जानो ॥

१४८ विशेषण के लिङ्ग बचन और कारक विशेष्य निघ्न है अर्थात् विशेष्य को जो लिङ्ग आदि हो वेही लिङ्ग आदि विशेषण के होंगे ॥

१४९ हिन्दी में अकारान्त को छोड़कर गुणवाचक में लिङ्ग बचन वा कारक के कारण कुछ बिकार नहीं होता । जैसे सुन्दर पुरुष सुन्दर स्त्री सुन्दर लड़के कोमल पुष्प कोमल पत्ते कोमल डालियों पर ॥

१५० आकारान्त विशेषण में विकार होने के तीन नियम होते हैं जिन्हें चेत रखना चाहिये। यथा

१ पुल्लिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषण हो तो कर्त्ता और कर्म के एकवचन में जब उनका चिन्ह नहीं रहता तब विशेषण का कुछ विकार नहीं होता। जैसे ऊंचा पेड़ ऊंचा पहाड़ देखो पीला वस्त्र पीला वस्त्र दो॥

२ पुल्लिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषण हो तो शेष कारकों के एकवचन में और बहुवचन में विशेषण के अन्त्य आ को ए हो जाता है। जैसे बड़े घर का स्वामी आया है वे ऊंचे पर्व्वत पर चढ़ गये हैं सकरे फाटक से कैसे जाऊं अच्छे लड़के भले दासों के लिये॥

३ स्त्रीलिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषण हो तो सब कारकों के दोनों वचनों में विशेषण के अन्त्य आ को ई आदेश कर देते है। जैसे वह गोरी लड़की है लम्बी रस्सी लाओ हरी घास में गया है मीठी बातें बोलता है छोटी गैयाओं को दो॥

१५१ यदि संख्यावाचक विशेषण हो और अवधारण की विवक्षा रहे तो उसके अन्त में ओ कहीं सानुनासिक और कहीं निरनुनासिक कर देते हैं। जैसे दोनों जावेंगे चारो लड़के अच्छे हैं। यदि समुदाय से दो तीन आदि व्यक्ति ली जायं तो दो तीन आदि इन रूपों को विभक्ति जोड़ते हैं। जैसे दो को तीन से चार में॥

१५२ एक बस्तु में दूसरी से वा उस जाति की सब बस्तुओं से गुण की अधिकाई वा न्यूनता प्रकाश करने के लिये यह रीति होती है कि विशेषण में कुछ विकार नहीं होता विशेष्य का कर्त्ता कारक आता है और जिस संज्ञा से उपमा दी जाती है उसका अपादान कारक होता है। जैसे यह उस से अच्छा है यमुना गंगा से छोटी है लड़की लड़के से सुन्दर है यह सब से अच्छा है हिमालय सब पर्वतों से ऊंचा है॥

यह हिन्दी में साधारण रीति है पर कहीं २ संस्कृत की रीति के अनुसार तर और तम ये प्रत्यय विशेषण को जोड़ते हैं। जैसे कोमल कोमलतर कोमलतम प्रिय प्रियतर प्रियतम शिष्ट शिष्टतर शिष्टतम आदि॥

चौथा अध्याय ॥

सर्वनामों के विषय में ।

१५३ सर्वनाम संज्ञा के लिङ्ग का नियम यह है कि जिनके बदले में सर्वनाम आवे उन शब्दों के लिङ्ग के समान उसका भी लिङ्ग होगा। जैसे पण्डित ने कहा मैं पढ़ाता हूं यहां पण्डित पुल्लिङ्ग है तो मैं भी पुल्लिङ्ग हुआ कन्या कहती है कि मैं जाती हूं यहां कन्या शब्द के स्त्रीलिङ्ग होने के कारण सर्वनाम भी स्त्रीलिङ्ग है ऐसा ही सर्वत्र जानो॥

१५४ सर्वनाम संज्ञा के कई भेद हैं जैसे पुरुषवाची अनिश्चयवाचक निश्चयवाचक आदरसूचक सम्बन्धवाचक और प्रश्नवाचक ॥

१ पुरुषवाची सर्वनाम ॥

१५५ पुरुषवाची सर्वनाम तीन प्रकार के हैं १ उत्तमपुरुष २ मध्यमपुरुष ३ अन्यपुरुष। उत्तमपुरुष सर्वनाम मैं मध्यमपुरुष तू और अन्यपुरुष वह है। मैं बोलनेवाले के बदले तू सुननेवाले के पलटे और जिसकी कथा कही जाती है उसके पर्याय पर अन्य पुरुष आता है। जैसे मैं तुम से उसकी कथा कहता हूं ॥

१५६ उत्तम पुरुष में शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	मैं वा मैं ने	हम वा हम ने वा हमों ने
कर्म	मुझ को मुझे	हम को हमों को वा हमें
करण	मुझ से	हम से वा हमों से
सम्प्रदान	मुझ को मुझे	हम को हमों को वा हमें
अपादान	मुझ से	हम से वा हमों से
सम्बन्ध	मेरा—रे—री	हमारा—रे—री
अधिकरण	मुझ में	हम में वा हमों में ॥

१५७ सम्बन्ध कारक की विभक्ति (रा रे री) केवल उत्तम और मध्यमपुरुष में होती है और ना (ने नी) यह निजवाचक वा आदरसूचक आप शब्द के सम्बन्ध कारक में होता है। इन रूपों का अर्थ और उनकी योजना का (के की) के समान हैं ॥

१७८ मध्यमपुरुष तू शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	*तू वा तू ने	तुम वा तुम ने वा तुम्हं ने
कर्म	तुझ को वा तुझे	तुमको तुम्हें वा तुम्हों को
करण	तुझ से	तुम से वा तुम्हों से
सम्प्रदान	तुझ को तुझे	तुमको तुम्हें तुम्हों को
अपादान	तुझ से	तुम से वा तुम्हों से
सम्बन्ध	तेरा—रे—री	तुम्हारा—रे—री
अधिकरण	तुझ में	तुम में वा तुम्हों में
सम्बोधन	हे तू	हे तुम ॥

अन्यपुरुष सर्वनाम ।

१७९ अन्यपुरुष सर्वनाम दो प्रकार का है एक निश्चयवाचक और दूसरा अनिश्चयवाचक । निश्चयवाचक भी दो प्रकार का होता है अर्थात यह और वह निकटवर्त्ती के लिये यह और दूरवर्त्ती के लिये वह है ॥

१८० निश्चयवाचक यह ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	*यह वा इस ने	ये वा इन ने वा इन्हों ने
कर्म	इस को वा इसे	इन को वा इन्हें वा इन्हों को
करण	इस से	इन से वा इन्हों से
सम्प्रदान	इस को वा इसे	इन को इन्हें वा इन्हों को
अपादान	इस से	इन से वा इन्हों से
सम्बन्ध	इस का—के—की	इन का वा इन्हों का—के—की
अधिकरण	इस में	इन में वा इन्हों में ॥

१८१ निश्चयवाचक वह ।

---

* तू वा तैं और उन वा विन और जो वा जौन यह केवल देश भेद से उच्चारण की विलक्षणता है ॥

कारक।	एक वचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	*वह वा उसने	वे उन ने वा उन्हों ने
कर्म	उसको वा उसे	उनको वा उन्हें वा उन्हों को
करण	उस से	उन से वा उन्हों से
सम्प्रदान	उसको वा उसे	उनको वा उन्हें वा उन्हों को
अपादान	उस से	उन से वा उन्हों से
सम्बन्ध	उस का—के—की	उनका वा उन्हों का—के—की
अधिकरण	उस में	उन में वा उन्हों में ॥

१६२ कर्त्ता कारक के एकवचन में और बहुवचन में ने चिन्ह के साथ उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष का कुछ विकार नहीं होता परंतु अन्यपुरुष यह को इस और ये को इन तथा वह को उस और वे को उन आदेश करते हैं ऐसे ही सब विभक्तियों के साथ समझो ॥

१६३ यदि उत्तम वा मध्यमपुरुष से परे कोई संज्ञा हो और उस संज्ञा के आगे ने वा का (के की) चिन्ह रहे तो मैं को मुझ तू को तुझ मेरा को मुझ—का और तेरा को तुझ—का आदेश कर देते हैं। जैसे मैंने यह बिना संज्ञा है संज्ञा लगाओ तो मुझ ब्राह्मण ने हुआ। ऐसे ही तुझ निर्बुद्धि ने मुझ कङ्गाल का घर हम लोगों का वस्त्र इत्यादि ॥

१६४ उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष के सम्बन्ध कारक के एकवचन में मैं को मे और तू को ते और बहुवचन में हम को हमा और तुम को तुम्हा आदेश करके सम्बन्ध कारक की विभक्ति का के की को रा रे री हो जाता है और शेष विभक्तियों के साथ संयोग होवे तो जैसा ने के साथ कहा है सोई जानो ॥

१६५ इन सर्वनामों के कर्म और सम्प्रदान कारक में दो २ रूप होने से लाभ यह है कि दो को एकट्ठे होकर उच्चारण को बिगाड़ देते हैं इस कारण एक को सहित और एक को रहित रहता है। जैसे मैं इसको तुमको दूंगा यहां मैं इसे तुमको दूंगा ऐसा बोलना चाहिये इत्यादि ॥

१६६ आदर के लिये एक में बहुवचन और बहुत्व के निश्चयार्थ बहुवचन में लोग वा सब लगा देते हैं। जैसे तू क्या कहता है यहां आदर-

---

*यह और वह इन रूपों को कभी २ बहुवचन में भी योजना करते हैं। जैसे यह दो भाई आपस में नित्य लड़ते हैं ॥

पूर्वक तुम क्या कहते हो ऐसा बोलते हैं और हम सुनते हैं यहां बहुत्व के निश्चयार्थ हम लोग सुनते हैं अथवा हम सब सुनते हैं ऐसा बोलते हैं ॥

१६७ जब अन्यपुरुष के साथ कोई संज्ञा आती है और कारक का चिन्ह उस संज्ञा के आगे रहता है तो अन्यपुरुष से केवल उसी संज्ञा का निश्चय विशेष करके होता है कुछ अन्यपुरुष सम्बन्धी वस्तु का ज्ञान नहीं होता। जैसे उस परिवार का उस घोड़े पर और उसका परिवार और उसके घोड़े पर इस से अन्यपुरुष सम्बन्धी परिवार और घोड़े का ज्ञान होता है ॥

अनिश्चयवाचक सर्वनाम कोई शब्द।

१६८ इसके कहने से किसी पदार्थ का निश्चय नहीं होता इसलिये यह अनिश्चयवाचक कहाता है। कर्त्ता कारक में कोई शब्द ज्यों का त्यों बना रहता है परंतु शेष कारकों में कोई को किसी आदेश करते हैं। इसका बहुवचन नहीं होता परंतु दो बार कहने से बहुवचन समझा जाता है। जैसा कोई २ कहते हैं इत्यादि ॥

कारक।	एकवचन।
कर्त्ता	कोई वा किसी ने
कर्म	किसी को
करण	किसी से
सम्प्रदान	किसी को
अपादान	किसी से
सम्बन्ध	किसी का—के—की
अधिकरण	किसी में ॥

१६९ कोई शब्द के समान कुछ शब्द भी है परंतु अव्यय होने से इसकी कारकरचना नहीं होती और संख्या के अनिश्चय में वा क्रियाविशेषण की रीति पर प्रायः इसका प्रयोग होता है। जैसे कुछ भेद कुछ रुपये कुछ बात कुछ लोग कुछ लिखो कुछ पढ़ो इत्यादि ॥

आदरसूचक सर्वनाम आप शब्द।

१७० आदर के लिये मध्यम और अन्यपुरुष को आप आदेश होता है। उसके कारक हलन्त पुल्लिङ्ग संज्ञा के समान होते हैं और जिस क्रिया

का आप शब्द कर्त्ता रहेगा वह अवश्य बहुवचनान्त होगी इसी से बहुवचन में बहुत्व प्रकाशित करने के लिये लोग शब्द लगा देते हैं। जैसे

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	आप वा आप ने	आप लोग वा आप लोगों ने
कर्म	आप को	आप लोगों को
करण	आप से	आप लोगों से
सम्प्रदान	आप को	आप लोगों को
अपादान	आप से	आप लोगों से
सम्बन्ध	आप का—के—की	आप लोगों का—के—की
अधिकरण	आप में	आप लोगों में ॥

१०१ प्रायः मध्यमपुरुष के बदले आदर के लिये आप शब्द आता है परंतु अन्यपुरुष के निमित्त भी इसका प्रयोग होता है उसकी विद्यमानता के रहते हाथ बढ़ाने से समझा जाता है कि मध्यम नहीं पर अन्यपुरुष की चर्चा हो रही है ॥

१०२ आप शब्द निज का भी वाचक होके संज्ञाओं का विशेषण होता है कर्त्ता कारक जैसे मैं आप बोलूंगा तुम आप कहो लड़के आप आये हैं इत्यादि ॥

१०३ जब कर्त्ता के साथ आप शब्द आता है तब उसका कुछ विकार नहीं होता परंतु शेष कारकों में आप को अपना आदेश कर देते हैं और उस से निज का सम्बन्ध समझा जाता है और उसके रूप भाषा के आकारान्त शब्द की रीति पर होते हैं। जैसे

कारक।	एकवचन।
कर्त्ता	आप
कर्म	अपने को
करण	अपने से
सम्प्रदान	अपने को
अपादान	अपने से
सम्बन्ध	अपना—ने—नी
अधिकरण	अपने में ॥

१०४ आप शब्द के पूर्वोक्त रूप उत्तम मध्यम और अन्यपुरुष में आ जाते हैं और एकवचन का प्रयोग बहुवचन में होता है। जिन सर्वनाम के आगे वे आते हैं उसके सम्बन्धवान विशेषण समझे जाते हैं। जैसे मैं अपना काम करता हूं तू अपनी बोली नहीं समझता है वे अपने घर गये हैं इत्यादि ॥

१०५ आपस यह परस्परबोधक नियमरहित रूप आप शब्द से बना हुआ है प्रायः इसके सम्बन्ध और अधिकरण कारक उत्तम मध्यम और अन्यपुरुषों में आया करते हैं। जैसे आपस की लड़ाई यें आपस का मेल हम आपस में परामर्श करेंगे तुम लोग आपस में क्या कहते हो ॥

प्रश्नवाचक सर्वनाम कौन शब्द ।

१०६ प्रश्नवाचक सर्वनाम कौन शब्द कर्त्ता कारक के दोनों वचनों मे ज्यों का त्यों बना रहता है पर शेष कारकों के एकवचन में कौन को किस और बहुवचन में किन वा किन्ह आदेश करके उनके आगे विभक्ति लाते हैं। जैसे

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	कौन किसने	कौन किन ने
कर्म	किस को किसे	किन को किन्हें
करण	किस से	किन से
सम्प्रदान	किस को किसे	किन को किन्हें
अपादान	किस से	किन से
सम्बन्ध	किस का—के—की	किन का—के—की
अधिकरण	किस में	किन में ॥

१०७ कौन शब्द के समान क्या शब्द भी प्रश्नवाचक है पर उसकी कारकरचना न होने के कारण उसे अव्यय कहते हैं और वह विशेषण कि तुल्य आया करता है। जैसे क्या बात क्या ठिकाना क्या कहूंगा ॥

१०८ कौन और क्या ये प्रश्नवाचक अकेले आवें तो कौन शब्द से प्रायः मनुष्य समझा जायगा और क्या शब्द से अप्राणिवाचक का बोध होगा। जैसे कौन है अर्थात कौन मनुष्य है किस (मनुष्य) का है किन ने किया क्या है अर्थात क्या वस्तु है क्या हुआ क्या देखा इत्यादि।

परंतु जो संज्ञा के साथ आवें तो कौन और क्या दोनों निर्जीव और सजीव को लगते हैं । जैसे किस मनुष्य से किन लोगों में किस उपाय से क्या ज्ञानी पुरुष है क्या चोर है क्या योद्धा है ॥

सम्बन्धवाचक सर्वनाम ।

१७६ सम्बन्धवाचक सर्वनाम उसे कहते हैं जो कही हुई संज्ञा से कुछ वर्णन मिलाता है । जैसे आपने जो घोड़ा देखा था सो मेरा है । सम्बन्धवाचक सर्वनाम जो जहां रहता है वहां सो अथवा वह शब्द भी अवश्य लिखा वा समझा जाता है इसलिये इसे सम्बन्धवाचक कहते हैं ॥

१८० जो वा जौन कर्त्ता के दोनों वचन में ज्यों का त्यों बना रहता है पर और कारकों के एकवचन में जो को जिस और बहुवचन में जिन वा जिन्ह आदेश हो जाता है । यथा

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	जो वा जिस ने	जो वा जिन ने
कर्म	जिस को वा जिसे	जिन को जिन्हों को जिन्हें
करण	जिस से	जिन से जिन्हों से
सम्प्रदान	जिस को जिसे	जिन को जिन्हों को जिन्हें
अपादान	जिस से	जिन से जिन्हों से
सम्बन्ध	जिस का—के—की	जिन का जिन्हों का-के-की
अधिकरण	जिस में	जिन में जिन्हों में ॥

१८१ जो शब्द का परस्पर सम्बन्धी सो वो तौन शब्द कर्त्ता कारक के दोनों वचनों में जैसे का तैसा बना रहता है पर शेष कारकों के एकवचन में सो को तिस और बहुवचन में तिन वा तिन्ह आदेश कर देते हैं । जैसे

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	सो वा तिस ने	सो वा तिन ने
कर्म	तिस को तिसे	तिन को तिन्हें तिन्हों को
करण	तिस से	तिन से तिन्हों से
सम्प्रदान	तिस को तिसे	तिन को तिन्हें तिन्हों को
अपादान	तिस से	तिन से तिन्हों से

सम्बन्ध	तिस का—के—की	तिन का—के—की
अधिकरण	तिस में	तिन में तिन्हों में ॥

१८२ चेत रखना चाहिये कि निश्चयवाचक प्रश्नवाचक और सम्बन्धवाचक सर्वनामों में कर्ता को छोड़ के शेष कारकों के बहुवचन में सानुनासिक हो विभक्ति के पूर्व कोई २ विकल्प से लगा देते हैं। जैसे इनने वा इन्हों ने जिनका वा जिन्हों का बोलते हैं। परंतु कोई २ वैयाकरण कहते हैं कि जिस रूप में ओं वा हों आवे वह सदा बहुत्व बताने के निमित्त होता है। जैसे हमों को तुम्हों को अर्थात हम लोगों को तुम लोगों को इत्यादि। और अन्य रूप हमको तुमको आदि केवल आदरार्थ बहुवचन में आते हैं ॥

१८३ इस उस किस जिस तिस सर्वनामों के स को तना आदेश करने से ये परिमाणवाचक शब्द अर्थात इतना उतना कितना जितना और तितना बनाये जाते हैं और उन्हीं सर्वनामों के साथ सामानतासूचक सा (से सी) के लगाने से ये प्रकारवाचक शब्द भी अर्थात ऐसा कैसा जैसा तैसा और वैसा हुए हैं। इस+सा=ऐसा किस+सा=कैसा जिस+सा=जैसा और तिस+सा=तैसा। यह पांचों गुणवाचक की रीति पर आते हैं और उनके विकार होने का नियम लिङ्ग वचन के कारण वही है जो आकारान्त गुणवाचक के विषय बताया गया है ॥

१८४ ऊपर के लिखे हुए सर्वनामों को छोड़ के कितने एक शब्द और भी आते हैं जो इन्हीं सर्वनामों के तुल्य होते हैं। जैसे एक दो दोनों और सब अन्य कई के आदि ॥

इति सर्वनाम प्रकरण ॥

पांचवां अध्याय ॥

क्रिया के विषय में।

१८५ कह आये हैं कि क्रिया उसे कहते हैं जिसका मुख्य अर्थ करना है वह काल पुरुष और वचन से सम्बन्ध रखती है ॥

१८६ क्रिया के मूल को धातु कहते हैं और उसके अर्थ से व्यापार का बोध होता है ॥

१८७ चेत करना चाहिये कि जिस शब्द के अन्त में ना रहे और उसके अर्थ से कोई व्यापार समझा जाय तो वही क्रिया का साधारण रूप है जिसे क्रियार्थक संज्ञा भी कहते हैं। जैसे लिखना सीखना बोलना इत्यादि ॥

१८८ इस क्रियार्थक संज्ञा के ना का लोप करके जो रह जाय उसे ही क्रिया का मूल जानो क्योंकि वह सब क्रियाओं के रूपों में सदा विद्यमान रहता है। जैसे बोलना यह एक क्रियार्थक संज्ञा है इसके ना का लोप किया तो रहा बोल इसे ही मूल अर्थात धातु समझो और ऐसे ही सर्वत्र ॥

१८९ क्रिया दो प्रकार की होती है एक सकर्मक दूसरी अकर्मक। सकर्मक क्रिया उसे कहते हैं जो कर्म के साथ रहती है अर्थात जिस क्रिया के व्यापार का फल कर्त्ता में न पाया जाय जैसे पण्डित पोथी को पढ़ता है यहां पण्डित कर्त्ता है क्योंकि पढ़ने की क्रिया पण्डित के आधीन है। यदि यहां पण्डित शब्द न बोला जायगा तो पढ़ने की क्रिया के साधन का बोध भी न हो सकेगा और पोथी इस हेतु से कर्म है कि इस क्रिया का जो पढ़ा जाना रूप फल है सो उसी पोथी में है तो यह क्रिया सकर्मक हुई ऐसे ही लिखना सुन्ना आदि और भी जानो ॥

१९० अकर्मक क्रिया उसे कहते हैं जिसके साथ कर्म नहीं रहता अर्थात उसका व्यापार और फल दोनों एकत्र होकर कर्त्ता ही में मिलते हैं। जैसे पण्डित सोता है यहां पण्डित कर्त्ता है और कर्म इस वाक्य में कोई नहीं पण्डित ही में व्यापार और फल दोनों हैं इस कारण यह क्रिया अकर्मक कहाती है ऐसे ही उठना बैठना आदि भी जानो ॥

१९१ सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं एक कर्तृप्रधान और दूसरी कर्मप्रधान जिस क्रिया का लिङ्ग वचन कर्त्ता के लिङ्ग वचन के अनुसार हो उसे कर्तृप्रधान और कर्म के लिङ्ग और वचन के समान जिस क्रिया का लिङ्ग वचन होवे उसे कर्मप्रधान क्रिया कहते हैं। यथा

कर्तृप्रधान।	कर्मप्रधान।
स्त्री कपड़ा सीती है	कपड़ा सीया जाता है

किसान गेहूं बोवेगा — गेहूं बोया जायगा
लड़की पढ़ती थी — लड़की पढ़ाई जाती थी
घोड़े घास खाते हैं — घोड़े से घास खाई जाती है ॥

१६२ ध्यान रखना चाहिये कि यदि कर्मप्रधान क्रिया के संग कर्ता की आवश्यकता होवे तो उसे करण कारक के चिन्ह के साथ लगा दो। जैसे रावण राम से मारा गया लड़के से रोटियां नहीं खाई गईं हम से तुम्हारी बात नहीं सुनी जाती ॥

१६३ समझ रक्खो कि जैसे कर्तृप्रधान क्रिया के साथ कर्ता का होना आवश्यक है वैसा ही कर्मप्रधान क्रिया के संग कर्म भी अवश्य रहता है परंतु जहां अकर्मक क्रिया का रूप कर्मप्रधान क्रिया के समान मिले वहां उसे भावप्रधान जानो ॥

१६४ इस से यह बात सिद्ध हुई कि जब प्रत्यय कर्ता में होता तो कर्ता प्रधान होता है और जब कर्म में होता है तब कर्म। इसी रीति से भाव में जब प्रत्यय आता है तो भाव ही प्रधान हो जाता है। जैसे रात भर किसी से नहीं जागा जाता बिना बोले तुम से नहीं रहा जाता बिना काम किसी से बैठा जाता है इत्यादि ॥

१६५ धातु के अर्थ को भाव कहते हैं हिन्दी भाषा में भावप्रधान क्रिया कम आती है और प्रायः उसका प्रयोग नहीं शब्द के साथ बोला जाता है ॥

१६६ क्रिया के करने में जो समय लगता है उसे काल कहते हैं उसके मुख्य भाग तीन हैं अर्थात भूत वर्त्तमान और भविष्यत। भूतकालिक क्रिया उसे कहते हैं जिसकी समाप्ति हो चुकी हो अर्थात जिस में आरम्भ और समाप्ति दोनों पाई जायं। जैसे तुमने कहा मैंने सुना है। वर्त्तमानकालिक क्रिया वह कहाती है जिसका आरम्भ हो चुका हो परंतु समाप्ति न हुई हो। जैसे वे खेलते हैं मैं देखता हूं। भविष्यत काल की क्रिया का लक्षण यह है कि जिसका आरम्भ न हुआ हो। जैसे मैं पढ़ूंगा तुम सुनोगे इत्यादि ॥

१६७ छः प्रकार की भूतकालिक क्रिया होती हैं अर्थात सामान्यभूत पूर्णभूत आसन्नभूत संदिग्धभूत अपूर्णभूत और हेतुहेतुमद्भूत ॥

१ सामान्यभूत काल की क्रिया से क्रिया की पूर्णता तो समझी जाती है परंतु भूतकाल की विशेषता बोधित नहीं होती ॥

२ पूर्णभूत उसे कहते हैं जिस से क्रिया की पूर्णता और भूतकाल की दूरता दोनों समझी जाती हैं ॥

३ आसन्नभूत से क्रिया की पूर्णता और भूतकाल की निकटता भी जानी जाती है ॥

४ संदिग्धभूत से भूतकालिक क्रिया का संदेह समझा जाता है ॥

५ अपूर्णभूत काल की क्रिया से भूतकाल तो पाया जाता है परंतु क्रिया की पूर्णता पाई नहीं जाती ॥

६ हेतुहेतुमद्भूत क्रिया उसे कहते हैं जिस में कार्य्य और कारण का फल भूतकाल का होता है ॥

१६८ वर्त्तमानकाल की क्रिया के दो भेद हैं अर्थात सामान्यवर्त्तमान और संदिग्धवर्त्तमान । सामान्यवर्त्तमान क्रिया से जाना जाता है कि कर्त्ता क्रिया को उसी समय कर रहा है । संदिग्धवर्त्तमान से वर्त्तमानकालिक क्रिया का संदेह समझा जाता है ॥

१६६ भविष्यतकालिक क्रिया की दो अवस्था होती हैं अर्थात सामान्यभविष्यत और संभाव्यभविष्यत । सामान्यभविष्यत क्रिया का अर्थ उक्त हुआ है । संभाव्यभविष्यत की क्रिया से भविष्यत काल और किसी बात की चाह जानी जाती है ॥

२०० क्रिया के दो भेद और भी हैं एक विधि दूसरी पूर्वकालिक क्रिया । विधि क्रिया उसे कहते हैं जिस से आज्ञा समझी जाती है । पूर्वकालिक क्रिया से लिङ्ग वचन और पुरुष का बोध नहीं होता और उसका काल दूसरी क्रिया से प्रकाशित होता है ॥

क्रिया के संपूर्ण रूप के विषय में ।

२०१ कह आये हैं कि क्रिया के साधारण रूप के ना का लोप करके जो शेष रहता है सो क्रिया का धातु है और क्रिया के समस्त रूपों में धातु निरन्तर अटल रहता है । अब ये दो बातें चेत रखना चाहियें ॥

१ क्रिया के धातु के अन्त में ता कर देने से हेतुहेतुमद्भूत क्रिया बनती है । जैसे धातु खोल और हेतुहेतुमद्भूत है खोलता ॥

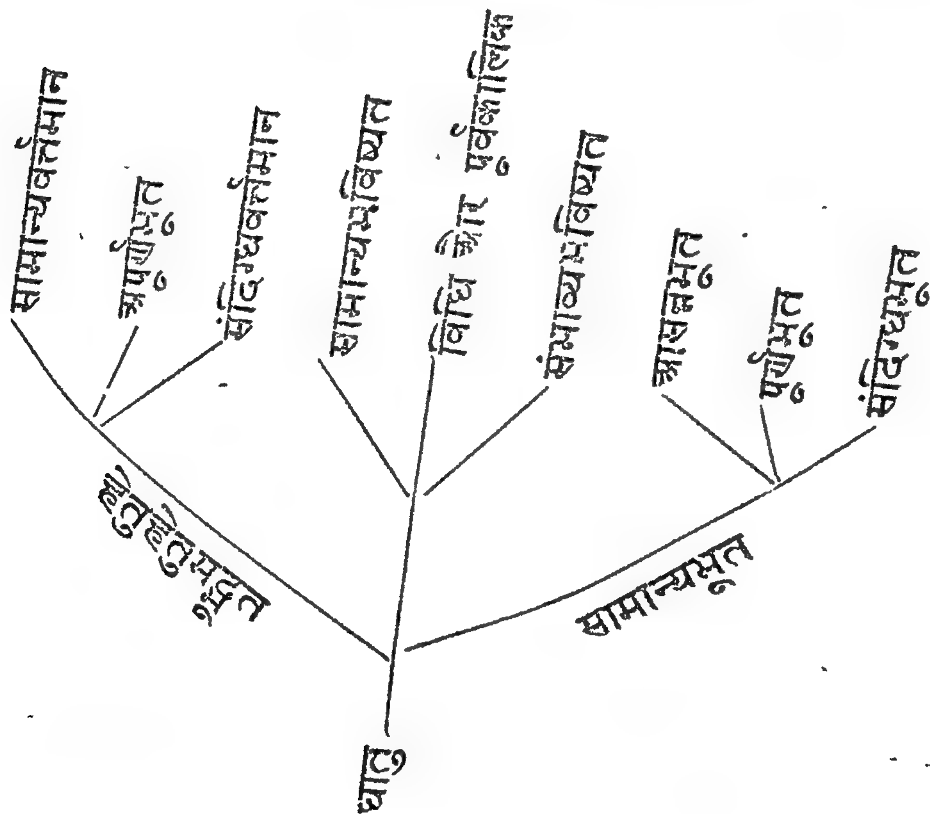
२ क्रिया के धातु के अन्त में आ कर देने से सामान्यभूत काल की क्रिय। होतीहै। जैसे धातु खोल और सामान्यभूत भूलहै खोला ऐसे ही सर्वत्र समझो*

२०२ ये तीन अर्थात धातु हेतुहेतुमद्भूत और सामान्यभूत क्रिया के संपूर्ण रूप के मुख्य भाग हैं इस कारण कि इन्हीं से क्रिया के सब रूप निकलते हैं। जैसे

१ धातु से संभाव्यभविष्यत सामान्यभविष्यत विधि और पूर्वकालिक क्रिया निकलती हैं॥

२ हेतुहेतुमद्भूत से सामान्यवर्त्तमान अपूर्णभूत और संदिग्धवर्त्तमान क्रिया निकलती हैं॥

३ सामान्यभूत से आसन्नभूत पूर्णभूत और संदिग्धभूत की क्रिया निकलती हैं। जैसा नीचे क्रियावृत्त में लिखा है।



* जो धातु स्वरान्त हो तो सामान्यभूत क्रिया के बनाने में उच्चारण के निमित्त धातु के अन्त में या लगा देते हैं और जो धातु के अन्त में ई वा ऊ होवे तो उसे ह्रस्व कर देते हैं। जैसे धातु खा और सामान्यभूत खाया वैसे ही पी पिया छू छूया दे दिया धो धोया आदि जानो॥

क्रिया के बनाने के विषय में ॥

१ धातु से ।

२०३ संभाव्यभविष्यत—धातु हलन्त हो तो उसको क्रम से ऊं अ ए एं ओ एं इन स्वरों के लगाने से तीनों पुरुष की क्रिया दोनों वचन में हो जाती हैं। और जो धातु स्वरान्त हो तो ऊं ओ को छोड़ शेष प्रत्ययों के आगे व विकल्प से लगाते हैं। जैसे हलन्त धातु बोल से बोलूं बोले आदि होते हैं और स्वरान्त धातु खा से खाऊं खाये वा खावे आदि होते हैं ॥

२०४ सामान्यभविष्यत—संभाव्यभविष्यत क्रिया के आगे पुलिङ्ग एक वचन के लिये गा बहुवचन के लिये गे और स्त्रीलिङ्ग एकवचन के लिये गी बहुवचन के लिये गीं तीनों पुरुष में लगा देते हैं। जैसे खाऊंगा खावेगा खावेगी आदि ॥

२०५ विधिक्रिया—विधिक्रिया और संभाव्यभविष्यत क्रिया में केवल मध्यमपुरुष के एकवचन का भेद होता है। विधि में मध्यमपुरुष का एकवचन धातु ही के समान होता है। जैसे खोल खोले खोलें आदि जानो*

२ हेतुहेतुमद्भूत से ।

२०६ सामान्यवर्त्तमान—हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे क्रम से हूं है है हैं हो हैं वर्त्तमान काल के इन चिन्हों के लगाने से सामान्यवर्त्तमान की क्रिया बनती है। जैसे खेलता हूं खेलते हैं खाता है खाते हो ॥

२०७ अपूर्णभूत—हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे था के लगाने से अपूर्णभूत काल की क्रिया हो जाती है। जैसे खेलता था खाता था खेलते थे आदि ॥

२०८ संदिग्धवर्त्तमान—हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे लिङ्ग और वचन के अनुसार होना क्रिया का भविष्यत काल के रूप लगाने से संदिग्ध वर्त्तमान की क्रिया बनती है। जैसे खोलता होऊंगा खोलता होवेगा आदि ॥

---

* होना देना और लेना इन तीनों की विधि क्रिया दो रूप से आती हैं। जैसे हो और होओ दूं और देऊं दो और देओ लो और लेओ आदि कोई २ बोलते और लिखते ॥

३ सामान्यभूत से ॥

२०६ आसन्नभूत—सामान्यभूत की अकर्मक क्रिया से आगे ये चिन्ह अर्थात हूं है है हैं हो हैं कर्त्ता के बचन और पुरुष के अनुसार लगाने से आसन्नभूत क्रिया बनती है परंतु सकर्मक क्रिया से आगे कर्म के वचन के अनुसार है वा हैं तीनों पुरुष में आता है। जैसे मैं बोला हूं तू बोला है मैंने घोड़ा देखा है मैंने घोड़े देखे हैं तुमने घोड़ा देखा है तुमने घोड़े देखे हैं इत्यादि ॥

२१० पूर्णभूत—सामान्यभूत क्रिया के आगे था के लगाने से पूर्णभूत क्रिया हो जाती है। जैसे मैंने खाया था तूने खाया था मैं बोला था तू बोला था आदि ॥

२११ संदिग्धभूत—सामान्यभूत क्रिया के आगे होना इस क्रिया के भविष्यतकाल सम्बन्धी रूपों के लिङ्ग वचन के अनुसार लगाने से संदिग्धभूत की क्रिया हो जाती है। जैसे मैंने देखा होगा तूने देखा होगा आदि ॥

२१२ चेत रखना चाहिये कि आकारान्त क्रिया में लिङ्ग और वचन के कारण भेद तो होता है परंतु पुरुष के कारण विकार नहीं होता। आकारान्त पुल्लिङ्ग क्रिया हो तो एकवचन में ज्यों की त्यों बनी रहेगी परंतु बहुवचन में एकारान्त हो जाती है स्त्रीलिङ्ग के एकवचन में ईकारान्त हो जाती है और बहुवचन में सानुनासिक ईकारान्त हो जाती है ॥

२१३ यदि आकारान्त क्रिया के साथ आकारान्त सहकारी क्रिया अर्थात था हो तो दोनों में लिङ्ग और वचन का भेद पड़ेगा परंतु स्त्रीलिङ्ग के बहुवचन में केवल इतना विशेष है कि पिछली क्रिया के अंत्य स्वर के ऊपर सानुनासिक का चिन्ह लगा देना चाहिये ॥

२१४ आकारान्त छोड़ के और जितनी क्रिया हैं उन सभों के रूप दोनों लिङ्ग में ज्यों के त्यों बने रहते हैं उनके लिङ्ग का बोध इस रीति से होता है कि यदि कर्त्ता पुल्लिङ्ग हो तो क्रिया भी पुल्लिङ्ग और जो कर्त्ता स्त्रीलिङ्ग हो तो क्रिया भी स्त्रीलिङ्ग समझी जायगी ॥

२१५ नीचे के चक्र में क्रिया के संपूर्ण रूपों के अंत्य अक्षर काल लिङ्ग वचन और पुरुष के अनुसार लिखे हैं उन्हे धातु से लगाकर क्रिया बना लो ॥

	पुरुष	सामान्यभूत				आसन्नभूत				पूर्णभूत			
		एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन	
		पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
व्यंजनान्त धातु	उत्तम	आ	ई	ए	ई	आ है	ई है	ए हैं	ई हैं	आ था	ई थी	ए थे	ई थीं
	मध्यम	आ	ई	ए	ई	आ है	ई है	ए हैं	ई हैं	आ था	ई थी	ए थे	ई थीं
	अन्य	आ	ई	ए	ई	आ है	ई है	ए हैं	ई हैं	आ था	ई थी	ए थे	ई थीं
स्वरान्त धातु	उत्तम	या	ई	ये	ई	या है	ई है	ये हैं	ई हैं	या था	ई थी	ये थे	ई थीं
	मध्यम	या	ई	ये	ई	या है	ई है	ये हैं	ई हैं	या था	ई थी	ये थे	ई थीं
	अन्य	या	ई	ये	ई	या है	ई है	ये हैं	ई हैं	या था	ई थी	ये थे	ई थीं

	पुरुष	हेतुहेतुमद्भूत				सामान्य वर्त्तमान				अपूर्णभूत			
स्वरान्त वा व्यंजनान्त धातु	उत्तम	ता	ती	ते	तीं	ता हूं	ती हूं	ते हैं	ती हैं	ता था	ती थी	ते थे	ती थीं
	मध्यम	ता	ती	ते	तीं	ता है	ती है	ते हो	ती हो	ता था	ती थी	ते थे	ती थीं
	अन्य	ता	ती	ते	तीं	ता है	ती है	ते हैं	ती हैं	ता था	ती थी	ते थे	ती थीं
		संभाव्यभविष्यत				सामान्यभविष्यत				विधि क्रिया			
	उत्तम	ऊं	ऊं	एं	एं	ऊंगा	ऊंगी	एंगे	एंगी	ऊं	ऊं	एं	एं
	मध्यम	ए	ए	ओ	ओ	एगा	एगी	ओगे	ओगी	(धातु)	(धातु)	ओ	ओ
	अन्य	ए	ए	एं	एं	एगा	एगी	एंगे	एंगी	ए	ए	एं	एं

२०६ अकर्मक क्रिया के धातु दो प्रकार के होते हैं एक स्वरान्त दूसरा व्यंजनान्त । अब उन क्रियाओं का उदाहरण जिनका धातु स्वरान्त होता है होना क्रिया के समस्त रूपों में लिख देते हैं ॥

होना क्रिया के मुख्य भाग ॥

२१७	धातु	हो
	हेतुहेतुमद्भूत	होता
	सामान्यभूत	हुआ

२१८ पहिले सामान्यभूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्यभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

	एकवचन ।	बहुवचन ।
उत्तम पुरुष	मैं हुआ	हम हुए
मध्यम ,,	तू हुआ	तुम हुए
अन्य ,,	वह हुआ	वे हुए

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं हुई	हम हुईं
तू हुई	तुम हुईं
वह हुई	वे हुईं

२ पूर्णभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं हुआ था	हम हुए थे
तू हुआ था	तुम हुए थे
वह हुआ था	वे हुए थे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं हुई थी	हम हुई थीं
तू हुई थी	तुम हुई थीं
वह हुई थी	वे हुई थीं

३ आसन्नभूत काल ।

कर्ता—पुल्लिङ्ग

मैं हुआ हूं	हम हुए हैं
तू हुआ है	तुम हुए हो
वह हुआ है	वे हुए हैं

कर्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं हुई हूं	हम हुई हैं
तू हुई है	तुम हुई हो
वह हुई है	वे हुई हैं

४ संदिग्धभूत काल ।

कर्ता—पुल्लिङ्ग

मैं हुआ होऊंगा	हम हुए होवेंगे
तू हुआ होगा	तुम हुए होगे वा होओगे
वह हुआ होगा	वे हुए होवेंगे

कर्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं हुई होऊंगी	हम हुई होवेंगी
तू हुई होगी	तुम हुई होओगी
वह हुई होगी	वे हुई होवेंगी

२५८ हेतुहेतुमद्भूत और जिन कालों की क्रिया उस में निकलती है उन्हें लिखते हैं ॥

१ हेतुहेतुमद्भूत काल ।

कर्ता—पुल्लिङ्ग

मैं होता	हम होते
तू होता	तुम होते
वह होता	वे होते

कर्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं होती	हम होतीं
तू होती	तुम होतीं
वह होती	वे होतीं

तू रहा	तुम रहे
वह रहा	वे रहे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रही	हम रहीं
तू रही	तुम रहीं
वह रही	वे रहीं

२ आसन्नभूत काल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहा हूं	हम रहे हैं
तू रहा है	तुम रहे हो
वह रहा है	वे रहे हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रही हूं	हम रही हैं
तू रही है	तुम रही हो
वह रही है	वे रही हैं

३ पूर्णभूत काल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहा था	हम रहे थे
तू रहा था	तुम रहे थे
वह रहा था	वे रहे थे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रही थी	हम रही थीं
तू रही थी	तुम रही थीं
वह रही थी	वे रही थीं

४ संदिग्धभूत काल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहा होऊंगा	हम रहे होवेंगे वा होंगे
तू रहा होवेगा वा होगा	तुम रहे होओगे वा होगे
वह रहा होवेगा वा होगा	वे रहे होवेंगे वा होंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रही होऊंगी	हम रही होवेंगी
तू रही होवेगी	तुम रही होओगी वा होगी
वह रही होवेगी	वे रही होवेंगी

२२३ हेतुहेतुमद्भूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ हेतुहेतुमद्भूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहता	हम रहते
तू रहता	तुम रहते
वह रहता	वे रहते

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहती	हम रहतीं
तू रहती	तुम रहतीं
वह रहती	वे रहतीं

२ सामान्यवर्त्तमान काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहता हूं	हम रहते हैं
तू रहता है	तुम रहते हो
वह रहता है	वे रहते हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहती हूं	हम रहती हैं
तू रहती है	तुम रहती हो
वह रहती है	वे रहती हैं

३ अपूर्णभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहता था	हम रहते थे
तू रहता था	तुम रहते थे
वह रहता था	वे रहते थे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहती थी	हम रहती थीं
तू रहती थी	तुम रहती थीं
वह रहती थी	वे रहती थीं

संदिग्धवर्त्तमान काल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहता होऊंगा	हम रहते होवेंगे
तू रहता होगा	तुम रहते होओगे वा होगे
वह रहता होगा	वे रहते होवेंगे वा होंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहती होऊंगी	हम रहती होवेंगी
तू रहती होवेगी	तुम रहती होओगी वा होगी
वह रहती होवेगी	वे रहती होवेंगी

१२४ जिन कालों की क्रिया धातु से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं॥

१ विधि क्रिया।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग

मैं रहूं	हम रहें
तू रह	तुम रहो
वह रहे	वे रहें
आदरपूर्वक विधि।	परोक्ष विधि।
रहिये	रहियो।

२ संभाव्यभविष्यत काल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग

मैं रहूं	हम रहें
तू रहे	तुम रहो
वह रहे	वे रहें

३ सामान्यभविष्यत काल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहूंगा	हम रहेंगे

तू रहेगा	तुम रहोगे
वह रहेगा	वे रहेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहूंगी	हम रहेंगी
तू रहेगी	तुम रहोगी
वह रहेगी	वे रहेंगी

४ पूर्वकालिक क्रिया।

रहके रहकर वा रहकरके ॥

सकर्मक क्रिया के रूप ॥

२२५ सकर्मक क्रिया के धातु दो प्रकार के होते हैं एक स्वरान्त दूसरा व्यंजनान्त। अब उन सकर्मक क्रियाओं का उदाहरण पाना क्रिया के संपूर्ण रूपों में लिखते हैं जिनका धातु स्वरान्त होता है ॥

पाना क्रिया के मुख्य भाग।

धातु	पा
हेतुहेतुमद्भूत	पाता
सामान्यभूत	पाया

२२६ सामान्यभूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्यभूत काल।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने पाया	मैंने वा हमने पाये
तूने ,, तुमने पाया	तूने ,, तुमने पाये
उसने ,, उन्हों ने पाया	उसने ,, उन्हों ने पाये
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने पाई	मैंने वा हमने पाईं
तूने ,, तुमने पाई	तूने ,, तुमने पाईं
उसने ,, उन्हों ने पाई	उसने ,, उन्हों ने पाईं

२ आसन्नभूत काल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाया है	मैंने वा हमने पाये हैं
तूने ,, तुमने पाया है	तूने ,, तुमने पाये हैं
उसने ,, उन्हों ने पाया है	उसने ,, उन्हों ने पाये हैं

कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाई है	मैंने वा हमने पाई हैं
तूने ,, तुमने पाई है	तूने ,, तुमने पाई हैं
उसने ,, उन्हों ने पाई है	उसने ,, उन्हों ने पाई हैं

३ पूर्णभूत काल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाया था	मैंने वा हमने पाये थे
तूने ,, तुमने पाया था	तूने ,, तुमने पाये थे
उसने ,, उन्हों ने पाया था	उसने ,, उन्हों ने पाये थे

कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाई थी	मैंने वा हमने पाई थीं
तूने ,, तुमने पाई थी	तूने ,, तुमने पाई थीं
उसने ,, उन्हों ने पाई थी	उसने ,, उन्हों ने पाई थीं

४ संदिग्धभूत काल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाया होऊंगा	मैंने वा हमने पाये होवेंगे
तूने ,, तुमने पाया होगा	तूने ,, तुमने पाये होओगे
उसने ,, उन्हों ने पाया होगा	उसने ,, उन्हें ने पाये होवेंगे

कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाई होऊंगी	मैंने वा हमने पाई होवेंगी
तूने ,, तुमने पाई होगी	तूने ,, तुमने पाई होओगी
उसने ,, उन्हों ने पाई होगी	उसने ,, उन्हों ने पाई होवेंगी

२२७ हेतुहेतुमद्भूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ हेतुहेतुमद्भूत काल ।

एकवचन ।	कर्त्ता—पुल्लिङ्ग	बहुवचन ।
मैं पाता		हम पाते
तू पाता		तुम पाते
वह पाता		वे पाते
	कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग	
मैं पाती		हम पातीं
तू पाती		तुम पातीं
वह पाती		वे पातीं

२ सामान्यवर्त्तमान काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं पाता हूं	हम पाते हैं
तू पाता है	तुम पाते हो
वह पाता है	वे पाते हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं पाती हूं	हम पाती हैं
तू पाती है	तुम पाती हो
वह पाती है	वे पाती हैं

३ अपूर्णभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं पाता था	हम पाते थे
तू पाता था	तुम पाते थे
वह पाता था	वे पाते थे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं पाती थी	हम पाती थीं
तू पाती थी	तुम पाती थीं
वह पाती थी	वे पाती थीं

४ संदिग्धवर्त्तमान काल । कर्त्ता—पुल्लिङ्ग ।

मैं पाता होऊंगा	हम पाते होवेंगे
तू पाता होगा	तुम पाते होओगे वा होगे
वह पाता होगा	वे पाते होवेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं पाती होऊंगी	हम पाती होवेंगी
तू पाती होवेगी	तुम पाती होओगी
वह पाती होवेगी	वे पाती होवेंगी,

२२८ जिन कालों की क्रिया धातु से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ विधि क्रिया ।

मैं पाऊं	हम पावें
तू पा	तुम पाओ
वह पावे	वे पावें
आदरपूर्वक विधि ।	परोक्ष विधि ।
पाइये	पाइयो

२ संभाव्यभविष्यत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग

मैं पाऊं	हम पावें
तू पावे	तुम पाओ
वह पावे	वे पावें

३ सामान्यभविष्यत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं पाऊंगा	हम पावेंगे
तू पावेगा	तुम पाओगे
वह पावेगा	वे पावेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं पाऊंगी	हम पावेंगी
तू पावेगी	तुम पाओगी
वह पावेगी	वे पावेंगी

४ पूर्वकालिक क्रिया।

पाके पाकर वा पाकरके ॥

२२९ अब उन सकर्मक क्रियाओं का उदाहरण देखना क्रिया के समस्त रूपों में लिखते हैं जिनका धातु व्यंजनान्त होता है ॥

देखना क्रिया के मुख्य भाग।

धातु	देख
हेतुहेतुमद्भूत	देखता
सामान्यभूत	देखा

२३० सामान्यभूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्यभूत काल।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने देखा	मैंने वा हमने देखे
तूने " तुमने देखा	तूने " तुमने देखे
उसने " उन्हों ने देखा	उसने " उन्हों ने देखे
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने देखी	मैंने वा हमने देखीं
तूने " तुमने देखी	तूने " तुमने देखीं
उसने " उन्हों ने देखी	उसने " उन्हों ने देखीं

२ आसन्नभूत काल।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने देखा है	मैंने वा हमने देखे हैं
तूने " तुमने देखा है	तूने " तुमने देखे हैं
उसने " उन्हों ने देखा है	उसने " उन्हों ने देखे हैं
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने देखी है	मैंने वा हमने देखी हैं
तूने " तुमने देखी है	तूने " तुमने देखी हैं
उसने " उन्हों ने देखी है	उसने " उन्हों ने देखी हैं

३ पूर्णभूत काल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने देखा था	मैंने वा हमने देखे थे
तूने वा तुमने देखा था	तूने वा तुमने देखे थे
उसने वा उन्हों ने देखा था	उसने वा उन्हों ने देखे थे

कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने देखी थी	मैंने वा हमने देखी थीं
तूने वा तुमने देखी थी	तूने वा तुमने देखी थीं
उसने वा उन्हों ने देखी थी	उसने वा उन्हों ने देखी थीं

२३१ शेष कालों की क्रियाओं के रूप रहना क्रिया के रूपों के अनुसार बनाये जाते हैं ॥

२३२ ऊपर के सब उदाहरण कर्तृवाच्य हैं अब सकर्मक धातु के कर्मवाच्य क्रिया का उदाहरण लिखते हैं। कर्मवाच्य में कर्त्ता प्रगट नहीं रहता परंतु कर्म ही कर्त्ता के रूप से आता है उसके बनाने की यह रीति है कि मुख्य धातु की सामान्यभूत क्रिया के आगे जाना इस क्रिया के रूपों को काल पुरुष लिङ्ग और वचन के अनुसार लिखते हैं ॥

देखा—जाना क्रिया के मुख्य भाग ।

धातु	देखा जा
हेतुहेतुमद्भूत	देखा जाता
सामान्यभूत	देखा गया

२३३ सामान्यभूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती है उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्यभूत काल ।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा गया	हम देखे गये
तू देखा गया	तुम देखे गये
वह देखा गया	वे देखे गये

मैं देखी गई	हम देखी गईं
तू देखी गई	तुम देखी गईं
वह देखी गई	वे देखी गईं

२ आसन्नभूत काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा गया हूं	हम देखे गये हैं
तू देखा गया है	तुम देखे गये हो
वह देखा गया है	वे देखे गये हैं

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी गई हूं	हम देखी गई हैं
तू देखी गई है	तुम देखी गई हो
वह देखी गई है	वे देखी गई हैं

३ पूर्णभूत काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा गया था	हम देखे गये थे
तू देखा गया था	तुम देखे गये थे
वह देखा गया था	वे देखे गये थे

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी गई थी	हम देखी गई थीं
तू देखी गई थी	तुम देखी गई थीं
वह देखी गई थी	वे देखी गई थीं

४ संदिग्धभूत काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा गया होऊंगा	हम देखे गये होवेंगे
तू देखा गया होगा	तुम देखे गये होश्रोगे
वह देखा गया होगा	वे देखे गये होवेंगे

२३४ हेतुहेतुमद्भूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं॥

१ हेतुहेतुमद्भूत काल ।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाता	हम देखे जाते
तू देखा जाता	तुम देखे जाते
वह देखा जाता	वे देखे जाते

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाती	हम देखी जातीं
तू देखी जाती	तुम देखी जातीं
वह देखी जाती	वे देखी जातीं

२ सामान्यवर्तमान काल ।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाता हूं	हम देखे जाते हैं
तू देखा जाता है	तुम देखे जाते हो
वह देखा जाता है	वे देखे जाते हैं

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाती हूं	हम देखी जाती हैं
तू देखी जाती है	तुम देखी जाती हो
वह देखी जाती है	वे देखी जाती हैं

३ अपूर्णभूत काल ।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाता था	हम देखे जाते थे
तू देखा जाता था	तुम देखे जाते थे
वह देखा जाता था	वे देखे जाते थे

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाती थी	हम देखी जाती थीं
तू देखी जाती थी	तुम देखी जाती थीं
वह देखी जाती थी	वे देखी जाती थीं

४ संदिग्धवर्त्तमान काल ।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाता होऊंगा	हम देखे जाते होवेंगे
तू देखा जाता होगा	तुम देखे जाते होओगे
वह देखा जाता होगा	वे देखे जाते होवेंगे

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाती होऊंगी	हम देखी जाती होवेंगी
तू देखी जाती होगी	तुम देखी जाती होओगी
वह देखी जाती होगी	वे देखी जाती होवेंगी

२३१ जिन कालों की क्रिया धातु से निकलती है उन्हें लिखते हैं ॥

१ विधि क्रिया ।

मैं देखा जाऊं	हम देखे जावें
तू देखा जा	तुम देखे जाओ
वह देखा जावे	वे देखे जावें
आदरपूर्वक विधि ।	परोक्ष विधि ।
देखे जाइये	देखे जाइयो

२ संभाव्यभविष्यत काल ।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाऊं	हम देखे जावें वा जायें
तू देखा जावे वा जाय	तुम देखे जाओ वा जाओ
वह देखा जावे वा जाय	वे देखे जावें वा जायें

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाऊं	हम देखी जावें वा जायें
तू देखी जावे वा जाय	तुम देखी जाओ वा जाओ
वह देखी जावे वा जाय	वे देखी जावें वा जायें

३ सामान्यभविष्यत काल ।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाऊंगा	हम देखे जावेंगे वा जायेंगे
तू देखा जावेगा वा जायगा	तुम देखे जाओगे वा जाओगे

वह देखा जावेगा वा जायगा वे देखे जावेंगे वा जायेंगे

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाऊंगी हम देखी जावेंगी वा जायेंगी

तू देखी जावेगी वा जायगी तुम देखी जाओगी वा जावोगी

वह देखी जावेगी वा जायगी वे देखी जावेंगी वा जायेंगी

२३६ कह आये हैं कि सामान्यभूत काल की क्रिया बनाने की यह रीति है कि हलन्त धातु के एकवचन में आ और बहुवचन में ए लगा देते हैं परंतु एक हलन्त धातु की क्रिया है अर्थात करना और पांच स्वरान्त धातु की क्रिया हैं अर्थात देना पीना लेना होना और जाना जिनकी भूतकालिक क्रिया पूर्वोक्त साधारण रीति के अनुसार बनाई नहीं जातीं उनकी आदरपूर्वक विधि और परोक्षविधि क्रिया भी साधारण रीति के अनुरोध नहीं होतीं इस कारण उन्हें नीचे के चक्र में एकत्र लिख देते हैं ॥

साधारणरूप	सामान्यभूत काल ।				आदरपूर्वकविधि	परोक्ष विधि
	एकवचन		बहुवचन			
	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग		
करना	किया	की	किये	कीं	कीजिये	कीजियो
देना	दिया	दी	दिये	दीं	दीजिये	दीजियो
पीना	पिया	पी	पिये	पीं	पीजिये	पीजियो
लेना	लिया	ली	लिये	लीं	लीजिये	लीजियो
होना	हुआ	हुई	हुए	हुईं	हूजिये	हूजियो
जाना	गया	गई	गये	गईं		

२३७ जान पड़ता है कि संस्कृत धातु कृ के कुछ विकार करने से हिन्दी की दो एकार्थक क्रिया निकली हैं अर्थात कीना और करना इन के सामान्यभूत और आदरपूर्वक विधि क्रिया ये हैं ॥

करना का सामान्यभूत करा आदरपूर्वक विधि करिये

कीना " " किया " " कीजिये

२३८ इन दिनों में करा और करिये ये रूप प्रचलित नहीं हैं पर उनके स्थान में किया और कीजिये ऐसे रूप होते हैं। कीना भी अप्रचलित हुआ है परंतु उसकी जगह में करना आता है ॥

२३९ देना पीना लेना होना इन चारों की भूतकाल और विधि क्रिया के बनाने में जो विशेषता होती है सो प्राय: उच्चारण की सुगमता के निमित्त है ॥

२४० बुद्धि में आता है कि दो एकार्थक संस्कृत धातु अर्थात या और गम् से जाना क्रिया के समस्त रूप बन गये हैं या के यकार को ज आदेश करके ना चिन्ह लगाने से साधारण रूप जाना बनता है जिसकी सामान्यभूत काल की क्रिया अर्थात गया गम् से निकली है ॥

२४१ भया यह एक क्रिया है जो भूतकाल छोड़ के और किसी काल में नहीं होती। संभव है कि संस्कृत धातु भू से निकली है वा होना धातु के सामान्यभूत के ही दोनों रूप हैं अर्थात कोई हुआ और कोई २ इसी को भया भी कहते हैं ॥

२४२ कह आये हैं कि क्रिया दो प्रकार की होती है अकर्मक और सकर्मक इनको छोड़ के और भी एक प्रकार की क्रिया है जिसे प्रेरणार्थक कहते हैं इस कारण कि उस से प्रेरणा समझी जाती है ॥

प्राय: अकर्मक क्रिया से सकर्मक और सकर्मक से प्रेरणार्थक क्रिया बनतीं अब उनके बनाने की रीति बताते हैं ॥

२४३ अकर्मक को सकर्मक बनाने की साधारण रीति यह है कि धातु के अंत्य व्यंजन से आ मिला देते हैं और अकर्मक को प्रेरणार्थक रचने के लिये वा मिलाया जाता है। यथा

अकर्मक।	सकर्मक।	प्रेरणार्थक।
उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
गिरना	गिराना	गिरवाना
चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
दबना	दबाना	दबवाना
बजना	बजाना	बजवाना
लगना	लगाना	लगवाना

२४४ प्रायः तीन अक्षर की सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया ऊपर की रीति के अनुसार बनाई जाती है परंतु सकर्मक के बनाने में दूसरा अक्षर हल हो जाता है अर्थात उसके स्वर का लोप होता है। जैसे

अकर्मक।	सकर्मक।	प्रेरणार्थक।
चमकना	*चम्काना	चमकवाना
पिघलना	पिघ्लाना	पिघलवाना
बिथरना	बिथ्राना	बिथरवाना
भटकना	भट्काना	भटकवाना
सरकना	सर्काना	सरकवाना
लटकना	लट्काना	लटकवाना

२४५ यदि दो अक्षर का अकर्मक धातु हो और उनके बीच में दीर्घस्वर रहे तो उसे ह्रस्व करके आ और वा मिला देने से सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया बनती हैं। जैसे

अकर्मक।	सकर्मक।	प्रेरणार्थक।
घूमना	घुमाना	घुमवाना
जागना	जगाना	जगवाना
जीतना	जिताना	जितवाना
डूबना	डुबाना वा डबोना	डुबवाना
भीगना	भिगाना वा भिगोना	भिगवाना
लेटना	लिटाना	लिटवाना

२४६ कई एक सकर्मक और कई एक अकर्मक धातु हैं जिनका स्वर ह्रस्व करके ला और लवा लगाने से द्विकर्मक और प्रेरणार्थक बन जाती हैं। यथा

सकर्मक।	द्विकर्मक।	प्रेरणार्थक।
पीना	पिलाना	पिलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
धोना	धुलाना	धुलवाना

*इन में हल का लक्षण लिखा है परंतु लिखनेवाले की इच्छा है चाहे लिखे चाहे न लिखे॥

सीना	सिलाना	सिलवाना
सीखना	सिखाना	सिखवाना
बैठना	बिठाना	बिठवाना
*रोना	रुलाना	रुलवाना

२४७ कितने एक अकर्मक धातु के पहिले अक्षर के स्वर को दीर्घ कर देने से सकर्मक क्रिया हो जाती है परंतु प्रेरणार्थक के रचने में स्वर का विकार नहीं होता केवल वा के मिलाने से बन जाती है। जैसे

अकर्मक।	सकर्मक।	प्रेरणार्थक।
कटना	काटना	कटवाना
खुलना	खोलना	खुलवाना
गड़ना	गाड़ना	गड़वाना
पलना	पालना	पलवाना
मरना	मारना	मरवाना
लदना	लादना	लदवाना

२४८ कोई २ सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया नियम विरुद्ध हैं। जैसे

अकर्मक।	सकर्मक।	प्रेरणार्थक।
छुटना	छोड़ना	छुड़वाना
टूटना	तोड़ना	तुड़वाना
फटना	फाड़ना	फड़वाना
फूटना	फोड़ना	फुड़वाना
बिकना	बेचना	बिकवाना
रहना	रखना	रखवाना

२४९ आना जाना सकना होना आदि कितनी एक ऐसी अकर्मक क्रिया हैं जिन से सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया नहीं बनती हैं ॥

---

*खाना और लेना इनके द्विकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया ऊपर की रीति के अनुसार बनती हैं परंतु उनके पहिले अक्षर का स्वर इ हो जाता है जैसे खाना खिलाना लेना लिवाना ॥

संयुक्त क्रिया के विषय में।

२५० हिन्दी में अनेक क्रिया होती हैं जो और क्रियाओं से मिलके आती हैं और नवीन अर्थ को उत्पन्न करती हैं ऐसी क्रियाओं को संयुक्त क्रिया कहते हैं। संयुक्त क्रिया में प्रायः दो भिन्न क्रिया होती हैं परंतु कहीं कहीं तीन २ आती हैं॥

२५१ चेत रखना चाहिये कि संयुक्त क्रिया के आदि की क्रिया मुख्य है उसी से संयुक्त क्रिया का अर्थ समझा जाता है और उसी के अनुसार संयुक्त क्रिया अकर्मक वा सकर्मक जानी जाती है॥

२५२ संयुक्त क्रिया नाना प्रकार की हैं पर उनकी मुख्य क्रिया को मान करके उनके तीन भाग किये हैं। पहिला भाग वह है जिस में आदि की क्रिया धातु के रूप से आती है। दूसरा भाग वह है जिस में आदि की क्रिया सामान्यभूत के रूप से रहती है। और तीसरा भाग वह है जिस में आदि की क्रिया अपने साधारण रूप से होती है॥

२५३ पहिले उन्हें लिखते हैं जिन में मुख्य क्रिया धातु के रूप से आती हैं वे तीन प्रकार की हैं अर्थात अवधारणबोधक शक्तिबोधक और पूर्णताबोधक॥

२५४ १ अवधारणबोधक—आना उठना जाना डालना देना पड़ना बैठना रहना लेना ये सब और क्रियाओं के धातु से मिलके आती हैं। देना और लेना अपने २ धातु से भी मिलके आती हैं। जैसे

देख-आना	गिर-पड़ना
बोल-उठना	मार-बैठना
खा -जाना	हो -रहना
काट-डालना	पढ़-लेना
रख -देना	दे - देना
चल -देना	ले - लेना

२५५ २ शक्तिबोधक—सकना क्रिया परतंत्र कहाती है इस कारण कि वह अकेली नहीं आती पर और क्रियाओं के धातु से मिलके शक्तिबोधक हो जाती है। जैसे

चल -सकना	बोल-सकना
चढ़ -सकना	उठ -सकना
लिख-सकना	दे -सकना

२५६ ३ पूर्णताबोधक—और क्रियाओं के धातु के साथ चुकना क्रिया के आने से पूर्णताबोधक संयुक्त क्रिया बनती है। जैसे

खा -चुकना	कह-चुकना
मार -चुकना	हो -चुकना
देख -चुकना	कर -चुकना

२५७ जिन में मुख्य क्रिया सामान्यभूत काल के रूप से आती हैं वे दो प्रकार की हैं अर्थात नित्यताबोधक और इच्छाबोधक॥

२५८ १ नित्यताबोधक—सामान्यभूत कालिक क्रिया के साथ लिङ्ग वचन और पुरुष के अनुसार करना क्रिया के आने से नित्यताबोधक क्रिया हो जाती है। जैसे

किया-करना	कहा -करना
दिया-करना	आया-करना
देखा-करना	* आया जाया-करना

२५९ २ इच्छाबोधक—सामान्यभूत कालिक क्रिया से परे चाहना क्रिया के लगाने से व्यापार करने की कर्त्ता की इच्छा जानी जाती है। जैसे

आया-चाहना	बोला-चाहना
*जाया-चाहना	मारा-चाहना
देखा-चाहना	सीखा-चाहना

२६० इस प्रकार की संयुक्त क्रिया से कहीं २ ऐसा बोध भी होता है कि क्रिया का व्यापार होने पर है। जैसे वह गिरा चाहता है वह मरा चाहता है घड़ी बजा चाहती है इत्यादि॥

२६१ संयुक्त क्रिया जिन में आदि की क्रिया साधारण रूप से आती है सो दो प्रकार की हैं अर्थात आरम्भबोधक और अवकाशबोधक॥

---

* जाना की सामान्यभूत कालिक क्रिया का साधारण रूप गया होता है किन्तु संयुक्त क्रियाओं में गया नहीं परंतु जाया नित्य आता है॥

२६२ १ आरम्भबोधक—मुख्य क्रिया के साधारण रूप के अंत्य आ को ए आदेश कर लिङ्ग वचन और पुरुष के अनुसार लगना क्रिया के मिलाने से आरम्भबोधक क्रिया हो जाती है । जैसे

आने -लगना	बोने-लगना
चलने -लगना	सोने-लगना
देने -लगना	होने-लगना

२६३ २ अवकाशबोधक — मुख्य क्रिया के साधारण रूप के अंत्य आ को ए आदेश करके देना वा पाना क्रिया के लगाने से लिङ्ग वचन और पुरुष के अनुसार अवकाशबोधक क्रिया बनती है । जैसे

जाने -देना	आने -पाना
बोलने-देना	उठने-पाना
सोने -देना	चलने-पाना

२६४ ध्यान-करना-भय-खाना चुप-रहना सुध-लेना इत्यादि भिन्न क्रिया हैं । बोलना-चालना देखना-भालना चलना-फिरना कूदना-फांदना समझना-बूझना इत्यादि एकार्थक ही दो क्रिया हैं ॥

इति क्रिया प्रकरण ॥

छठवां अध्याय ॥

कृदन्त के विषय में ।

२६५ क्रिया से परे जो ऐसे प्रत्यय होते हैं कि जिन से कार्तृत्व आदि समझे जाते हैं तो उन्हें कृत कहते हैं और कृत के आने से जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त अथवा क्रियावाचक संज्ञा कहते हैं इस कारण कि प्रायः क्रिया के सदृश अर्थ को प्रकाश करते हैं ॥

२६६ हिन्दी में पांच प्रकार की संज्ञा क्रिया से बनती हैं अर्थात् कर्तृवाचक कर्मवाचक करणवाचक भाववाचक और क्रियाद्योतक । उनके बनाने की रीति नीचे लिखते हैं ॥

१ कर्तृवाचक ।

२६७ कर्तृवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिस से कर्तापन का बोध होता है । उनके बनाने की रीति यह है कि क्रिया के साधारण रूप के अंत्य आ को ए आदेश करके उसके आगे हारा वा वाला लगा देते हैं । जैसे

मारनेहारा वा मारनेवाला बोलनेहारा वा बोलनेवाला इत्यादि ॥ कर्त्ता स्त्रीलिङ्ग हो तो हारा और वाला के अंत के आ को ई कर देते हैं। जैसे मारनेहारी बोलनेवाली ॥

२६८ क्रिया के धातु से भी अक इया वा वैया प्रत्यय करने से कर्तृवाचक संज्ञा हो जाती है। जैसे पालने से पालक पूजने से पूजक जड़ने से जड़िया लखने से लखिया जलने से जलवैया जीतने से जितवैया इत्यादि ॥

२६९ यदि धातु का स्वर दीर्घ हो तो वैया प्रत्यय के लगाने पर उसे ह्रस्व कर देते हैं। जैसे खाने से खवैया गाने से गवैया आदि जानो ॥

२ कर्मवाचक।

२७० कर्मवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिसके कहने से कर्मत्व समझा जाता है वह सकर्मक ही क्रिया से बनती है और उसके बनाने की यह रीति है कि सकर्मक क्रिया के साधारण रूप के चिन्ह ना को पुल्लिङ्ग में आ और स्त्रीलिङ्ग में ई आदेश कर देते हैं अथवा उस रूप के साथ हुआ लगा देते हैं। जैसे देखा देखी वा देखा हुआ देखी हुई किया की वा किया हुआ की हुई आदि ॥

३ भाववाचक।

२७१ कह आये हैं कि भाववाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिस के कहने से पदार्थ का धर्म वा स्वभाव समझा जाय अथवा जिस से किसी व्यापार का बोध हो। व्यापार की भाववाचक संज्ञा कई प्रकार से बनाई जाती हैं। जैसे

२७२ १ बहुधा क्रिया के साधारण रूप के ना का लोप करके जो रह जाती है वही भाववाचक संज्ञा है। जैसे बोल दौर पुकार समझ मान चाह लूट आदि ॥

२७३ २ कहीं कहीं साधारण रूप के ना को आव आदेश करने से भाववाचक संज्ञा हो जाती है। जैसे बिकाव मिलाव चढ़ाव आदि ॥

२७४ ३ कहीं कहीं क्रिया के साधारण रूप के अंत्य आ का लोप करने से भाववाचक संज्ञा होती है। जैसे लेन देन खान पान आदि ॥

२७५ ४ कहीं २ क्रिया के साधारण रूप के ना का लोप करके आई के लगाने से भाववाचक संज्ञा होती है। जैसे बोआई सुनाई ठगाई दिखाई इत्यादि ॥

२७६ ५ कहीं कहीं क्रिया के साधारण रूप के ना का लोप करके वट वा हट प्रत्यय करने से भाववाचक संज्ञा होती है। जैसे बनावट रंगावट सिखावट चिल्लाहट झंझनाहट इत्यादि ॥

४ करणवाचक ।

२७७ करणवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिसके कहने से ज्ञात होता है कि किसके द्वारा कर्त्ता व्यापार को सिद्ध करता है। उसके बनाने की यह रीति है कि क्रिया के साधारण रूप के अंत्य आ को ई आदेश कर देते हैं। जैसे ओढ़नी कतरनी कुरेलनी घोटनी ढंकनी खोदनी इत्यादि ॥

२७८ कहीं कहीं क्रिया से धातु से आ लगा देते हैं। जैसे घेरा फेरा झूला आदि। कोई कोई धातु हैं जिन से ना प्रत्यय करने से करण वाचक संज्ञा हो जाती है। जैसे बेलना इत्यादि ॥

५ क्रियाद्योतक ।

२७९ क्रियाद्योतक संज्ञा उसे कहते हैं जो संज्ञा का बिशेषण होके निरन्तर क्रिया को जनावे उसके बनाने की यह रीति है कि क्रिया के साधारण रूप के अंत्य ना को ता करने से क्रियाद्योतक संज्ञा हो जाती है अथवा उसके आगे हुआ लगा देते हैं। जैसे देखता वा देखता हुआ बोलता वा बोलता हुआ मारता वा मारता हुआ इत्यादि ॥

सातवां अध्याय

अथ कारक प्रकरण ।

२८० व्याकरण के उस भाग को कारक कहते हैं जिस में पदों की अवस्थाओं का वर्णन होता है ॥

प्रथम अर्थात कर्त्ता कारक ।

२८१ प्रातिपदिकार्थ अर्थात संज्ञा के अर्थ की उपस्थिति जहां नियम पूर्वक रहती है वहां प्रथम अर्थात कर्त्ता कारक होता है। जैसे बुद्धि देव ऊंचा नीचा आदि ॥

२८२ जहां पर लिङ्ग वा परिमाण अथवा संख्या का प्रकाश करना अपेक्षित रहता है वहां प्रथम कारक बोला जाता है। जैसे लड़का लड़की आध पाव घी आध सेर चीनी एक दो बहुत इत्यादि ॥

२८३ क्रिया के व्यापार का करनेहारा जब प्रधान * अर्थात उक्त होता है तब प्रथम कारक रहता है । जैसे बालक खेलता है लड़कियां दौड़ती थीं वृक्ष फलेगा इत्यादि ॥

२८४ क्रिया के व्यापार का फल जिस में रहता है वह जब उक्त हो जाता है तब उस में प्रथम कारक होता है । जैसे पोथी बनाई जाती है वृत्तान्त लिखे जाते हैं ॥

२८५ उद्देश्य विधेयभाव में अर्थात जब संज्ञा संज्ञा का बिशेषण हो जाती है विधेयवाचक संज्ञा का कर्त्ता कारक होता है । जैसे ज्ञान सब से उत्तम धन है सोना रूपा लोहा आदि धातु कहाते हैं उसका हृदय पत्थर हो गया है ॥

२८६ यदि एक ही कर्त्ता की दो वा अधिक क्रिया हों तो कर्त्ता केवल प्रथम क्रिया के साथ उक्त होता है शेष क्रियाओं के साथ उसका अध्याहार किया जाता है । जैसा वह दिन दिन खाता पीता सोता जागता है वे न बोते हैं न लवते हैं न खत्तों में बटोरते हैं ॥

द्वितीय अर्थात कर्म कारक ।

२८७ क्रिया के व्यापार का फल जिस में रहे और वह अनुक्त होवे तो उस में द्वितीय कारक हो जाता है । जैसे आम को खाता है तारों को देखता है फूलों को बटोरता है ॥

---

* ध्यान रखना चाहिये कि कर्त्ता दो प्रकार का है प्रधान और अप्रधान । प्रधान उस कर्त्ता को कहते हैं जिसके लिङ्ग वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया के लिङ्ग आदि होते हैं । जैसे गुरु चेलों को सिखाता है इस वाक्य में गुरु प्रधान कर्त्ता है इस कारण कि जो लिङ्ग आदि उस में हैं सो ही क्रिया में हैं । अप्रधान कर्त्ता के साथ ने चिन्ह आता है और उसकी क्रिया के लिङ्ग और वचन कर्म के लिङ्ग और वचन के अनुसार होते हैं । जैसे पण्डित ने पोथी लिखी लड़के ने लड़की मारी उसने घोड़े भेजे । जब कर्म कारक अपने चिन्ह को के साथ आता है तब क्रिया सामान्य पुल्लिङ्ग अन्य पुरुष एक वचन में होती है कर्म पुल्लिङ्ग हो वा स्त्रीलिङ्ग हो । जैसे पण्डित ने पोथी को लिखा है लड़की ने रोटी को खाया है ॥

२८८ अपादान आदि कारक की विवक्षा जब नहीं होती और कर्म नहीं रहता है तो वहां अपादान आदि कारकों के स्थान में मुख्य कर्म को छोड़कर द्वितीय कारक हो जाता है। जैसे आज मेरी गैया को कौन दुहेगा अर्थ यह है कि मेरी गैया से आज दूध को कौन दुहेगा॥

२८९ कर्म कारक का चिन्ह को बहुधा लोप होता है परंतु उसके लोप करने की कोई दृढ़ रीति नहीं है। कोई २ वैयाकरण समझते हैं कि उसका लाना और न लाना विवक्षा के आधीन है परंतु औरों की बुद्धि में सामान्य वर्णन वा विशेष वर्णन मानकर उसका लोप करना वा उसे लाना चाहिये। जैसे वह तुलसीदास के रामायण को पढ़ता है यहां विशेष रामायण अर्थात तुलसीकृत रामायण की चर्चा है वाल्मीकी की नहीं॥

२९० अप्राणिवाचक संज्ञा का कर्म कारक हो तो प्रायः चिन्ह रहित होगा। जैसे मैं चिट्ठी लिखता हूं तुम जाके काम करो वह फल तोड़ता है इत्यादि। व्यक्तिवाचक अधिकारवाचक और व्यापारकर्तृवाचक संज्ञा के कर्म में प्रायः को लगाना चाहिये। जैसे मोहनलाल को बुलाओ चौधरी को भेज देना वह अपने दास को मारता है इत्यादि॥

२९१ यदि एक ही वाक्य में कर्म कारक और सम्प्रदान कारक भी आवें तो उच्चारण की सुगमता के निमित्त प्रायः कर्म के चिन्ह का लोप होता है। जैसे दरिद्रों को दान दो॥

तृतीय अर्थात करण कारक।

२९२ जिसके द्वारा कर्त्ता क्रिया को सिद्ध करता है उसे करण कहते हैं करण में तृतीय कारक होता है। जैसे लेखनी से लिखते हैं पांव से चलते हैं छूरी से आम को काटते हैं खड्ग से शत्रुओं को मारते हैं॥

२९३ हेतु द्वारा और कारण इनके योग में तृतीय कारक होता है। जैसे इस हेतु से मैं वहां नहीं गया आलस्य के हेतु से वह समय पर न पहुंचा वह अपनी अज्ञानता के कारण उसे समझ नहीं सकता इस कारण से उसका निवारण मैं नहीं कर सकता ज्ञान के द्वारा मोक्ष होता है मन्त्री के द्वारा राजा से भेंट हुई॥

२९४ विशेषता यह है कि जब हेतु वा कारण के साथ योग होता है तो कारक के चिन्ह का लोप वक्ता की इच्छा के आधीन रहता है परंतु जब द्वारा शब्द का संयोग रहे तो अवश्य कारक के चिन्ह का लोप करना उचित है ॥

२९५ क्रिया करने की रीति वा प्रकार के बताने में करण कारक आता है। जैसे उसने उन पर क्रोध से दृष्टि की वह सारे शक्ति से यत्न करता है जो कुछ तुम करो सो अन्तःकरण से करो इस रीति इस प्रकार से॥

२९६ मूल्यवाचक संज्ञा में प्रायः करण कारक होता है। जैसे कल्याण कञ्चन से मोल नहीं सकते अनाज किस भाव से बेचते हैं दो सहस्र रुपैयों से हाथी मोल लिया॥

२९७ जिस से कोई वस्तु अथवा व्यक्ति उत्पन्न होवे उसको करण कारक कहते हैं। जैसे कपास ऊन आदि से वस्त्र बनता है दूध से घी उत्पन्न होता है ज्ञान से सामर्थ्य प्राप्त होता है आप से आप कुछ नहीं हो सकता है॥

२९८ किसी क्रिया का कर्त्ता जब उक्त नहीं रहता तो उस कर्त्ता में तृतीय कारक होता है। जैसे मुझ से लड़के नहीं उठा जाता। यदि क्रिया सकर्मक हो तो उसके कर्म में प्रथम कारक होगा। जैसे तुम से यह नहीं मारा जायगा। यदि क्रिया द्विकर्मक होवे तो उसके मुख्य कर्म में प्रथम कारक होगा परंतु गौण कर्म जो सम्प्रदान कारक के रूप से आता है उसे द्वितीय कारक होगा। जैसे मुझ से पैसे उसको नहीं दिये जाते॥

२९९ इस कारक के चिन्ह का लोप अनेक स्थानों में होता है। जैसे न आंखों देखा न कानों सुना मेरे हाथ चिट्ठी भेजता है॥

चतुर्थ अर्थात सम्प्रदान कारक।

३०० जिसके लिये देते हैं उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थ कारक होता है। जैसे दरिद्रों को धन दो हमको पीने का जल दो इत्यादि॥

३०१ जिस लिये वा जिसके निमित्त कुछ किया जाता है उसके प्रकाश करने में सम्प्रदान कारक होता है। जैसे भोजन बनाने को

(वा बनाने के लिये) बनिये से सीधा तोलाते हैं वे स्नान को गये हैं वे हमसे मिलने को आते थे ॥

३०२ योग्यता उपयुक्तता औचित्य आदि के बताने में यह कारक आता है। जैसे यह तुमको योग्य नहीं है यह तुमको उचित नहीं है लड़कों को चाहिये कि माता पिता की आज्ञा को मानें ॥

३०३ कहीं २ आवश्यकता के प्रकाश करने में चतुर्थ कारक होता है। जैसे अब मुझको जाना है तुमको आना होगा उसको अब पाठ सीखना है ॥

३०४ नमस्कार स्वस्ति आदि शब्द के योग में चतुर्थ कारक होता है। जैसे राजा और प्रजा के लिये स्वस्ति हो आपको नमस्कार श्रीसच्चिदानन्दमूर्तये नमः। विशेष यह है कि प्रायः हिन्दी में भी नमः के साथ योग होने से संस्कृत का ही चतुर्थ्यन्त पद बोलते हैं। जैसे प्रायः पुस्तकों में श्रीपरमात्मने नमः इत्यादि लिखते हैं ॥

पञ्चम अर्थात अपादान कारक।

३०५ विभाग के स्थान का ज्ञान जिस से होता है उसे अपादान कहते हैं अपादान में पञ्चम कारक होता है। जैसे पर्वत से गिरा है घर से आया है नगर से गया है ॥

३०६ भिन्नता परिचय अपेक्षा अर्थ का बोध हो तो अपादान कारक होगा। जैसे यह उस से जुदा है यह इस से भिन्न है जिसको वेदान्तियों के सब सिद्धान्तों से अच्छा परिचय होगा वह ऐसी शङ्का में न पड़ेगा दयानन्द स्वामी से मेरा परिचय हुआ है बुद्धिमान शत्रु बुद्धिहीन मित्र से उत्तम है धन से विद्या श्रेष्ठ है ॥

३०७ परे रहित आदि शब्द के संयोग में पञ्चम कारक होता है। जैसे मेरे घर से परे वाटिका है नदी से परे कोस भर पर मेरा मित्र रहता है हमारे माता पिता अब चलने फिरने से रहित हो गये हैं यह मनुष्य विद्या से रहित है ॥

३०८ निर्धारण अर्थ से अर्थात जब वस्तुओं के समूह में से एक वस्तु वा व्यक्ति का निश्चय किया जाता है तो अधिकरण और अपादान दोनों की विभक्तियां आती हैं। जैसे पर्वतों में से हिमालय अच्छा है कवियों में से कालिदास अच्छा है ॥

षष्ठ अर्थात सम्बन्ध कारक ।

३०९ जिस कारक से स्वत्व स्वामित्व प्रकाशित होता है उसे सम्बन्ध कहते हैं । सम्बन्ध में छठा कारक होता है । जैसे राजा की सेना पण्डित का पुत्र लड़के के कपड़े इत्यादि ॥

३१० कार्य कारण में भी सम्बन्ध होता है । जैसे बालू की भीत सोने के कड़े चांदी की डिब्रिया मिट्टी का घड़ा पृथिवी का खण्ड ॥

३११ तुल्य समान सदृश आधीन आदि शब्द के योग में सम्बन्ध कारक होता है । जैसे यह उसके तुल्य नहीं है पृथिवी गेंद के समान गोल है उसका मुंह चांद के सदृश है मैं आज्ञा के अनुमार सब कुछ करूंगा स्त्रियों को चाहिये कि अपने २ पति के आधीन रहें ॥

३१२ कर्त्तृकर्मभाव सेव्यसेवकभाव जन्यजनकभाव और अंगांगिभाव में सम्बन्ध कारक होता है । जैसे तुलसीदास का रामायण बिहारी की सतसई महाराजा की सेना रानी की बेटी सिर का बाल हाथ की उंगली इत्यादि ॥

३१३ परिमाण मूल्य काल वयस योग्यता शक्ति आदि के प्रकाश करने में सम्बन्ध कारक होता है। जैसे दो हाथ की लाठी बड़े पाट की नदी कोस भर की सड़क बारह एक बरस की लड़की यह तीस बरस की बात है यह कहने के योग्य नहीं है यह राज्य अब ठहरने का नहीं है ॥

३१४ समस्तता भेद समीपता आधीनता आदि के प्रकाश करने में सम्बन्ध कारक होता है । जैसे खेत का खेत सब के सब आकाश और पृथिवी का भेद मैं उसके घर के समीप गया ॥

३१५ केवल धातु वा भाववाचक के प्रयोग में सकर्मक क्रिया के कर्म को सम्बन्ध कारक होता है। जैसे रोटी का खाना गांव की लूट ॥

सप्तम अर्थात अधिकरण कारक ।

३१६ क्रिया का जो आधार है उसे अधिकरण कहते हैं । अधिकरण में सप्तम कारक बोलते हैं । जैसे वह घर में है पेड़ पर पक्षी हैं वह नदी तीर पै खड़ा है ॥

३१७ आधार तीन प्रकार का है औपश्लेषिक वैषयिक और अभिव्यापक । औपश्लेषिक उस आधार को कहते हैं जिसके किसी अवयव से संयोग हो । जैसे वह चटाई पर बैठता है वह बटलोही में रींधता है । वैषयिक उस आधार का नाम है जिस से विषय का बोध हो । जैसे मोक्ष में उसकी इच्छा लगी है अर्थात उसकी इच्छा का विषय मोक्ष है । और अभिव्यापक वह आधार है जिस में आधेय संपूर्ण रूप से व्याप्त हो । जैसे आत्मा सब में व्याप्त है बन से दूर वा निकट* ॥

३१८ निर्धारण अर्थ में अधिकरण होता है । जहां अनेक के मध्य में एक का निश्चय होता है वहां निर्धारण जानो । जैसे पशुओं में हाथी बड़ा है पत्थरों में हीरा बहुमूल्य है ॥

३१९ हेतु के प्रकाश करने में सप्तम और पञ्चम दोनों कारक होते हैं । जैसे ऐसा करो जिस में वह कार्य सिद्ध हो वा ऐसा कहो जिस से प्रयोजन सिद्ध हो ॥

आठवां अध्याय ॥

तद्धित प्रकरण ।

३२० तद्धित उसे कहते हैं जिस से संज्ञा के अंत में प्रत्ययों के लगाने से अनेक शब्द बनते हैं । जो हिन्दी में व्यवहृत प्रत्यय हैं उन्हें नीचे लिखते हैं ॥

३२१ तद्धित के प्रत्यय से अपत्यवाचक कर्तृवाचक भाववाचक ऊनवाचक और गुणवाचक संज्ञा उत्पन्न होती हैं । जैसे

३२२ १ अपत्यवाचक संज्ञा नामवाचक से निकलती हैं । नामवाचक के पहिले स्वर को वृद्धि करने से अथवा ई प्रत्यय होने से जैसे शिव से शैव विष्णु से वैष्णव गोतम से गौतम मनु से मानव वशिष्ठ से वाशिष्ठ महानन्द से महानन्दी रामानन्द से रामानन्दी हुआ है ॥

३२३ २ कर्तृवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिस से किसी क्रिया के व्यापार का कर्ता समझा जाय संज्ञा से हारा वाला और इया इन प्रत्ययों

---

* तत्वकौमुदी सू० ५९९ ।

के लगाने से बनती है। जैसे चुरिहारा दूधवाला अफ़ीमिया मखनिया इत्यादि ॥

३२४ ३ भाववाचकसंज्ञा और संज्ञा से इन प्रत्ययों के लगाने से बनती हैं जैसे आई ई त्व ता पन पा वट हट। उनके उदाहरण ये हैं चतुराई बोआई लड़काई लम्बाई मनुष्यत्व स्त्रीत्व उत्तमता मित्रता बालकपन बुढ़ापा बनावट कड़वाहट चिकनाहट इत्यादि ॥

३२५ ४ ऊनवाचक संज्ञा प्रायः आ को ई आदेश करने से हो जाती है। जैसे रस्सा रस्सी गोला गोली लड़का लड़की टोकड़ा टोकड़ी डाला डाली इत्यादि ॥

३२६ कहीं २ अक वा इया के लगाने से भी ऊनवाचक संज्ञा बनती है। जैसे मानव मानवक वृक्ष वृक्षक खाट खटिया डिब्बा डिबिया आम अंबिया इत्यादि ॥

३२७ ५ गुणवाचक संज्ञा तद्धित की रीति से उत्पन्न होती है नीचे के प्रत्ययों के लगाने से। जैसे

आ—ठण्ढ ठण्ढा प्यास प्यासा भूख भूखा मैल मैला इत्यादि ॥

इक—यह प्रत्यय प्रायः संस्कृत गुणवाचक संज्ञाओं का है। संज्ञा के पहिले अक्षर का स्वर वृद्धि से दीर्घ करके इक लगाते हैं जैसे प्रमाण से प्रामाणिक शरीर से शारीरिक संसार से सांसारिक स्वभाव से स्वाभाविक धर्म्म से धार्म्मिक हुआ है ॥

इत—आनन्द आनन्दित दुःख दुःखित क्रोध क्रोधित शोक शोकित ॥

इय वा इया—समुद्र समुद्रिय झांझ झांझिया खटपट खटपटिया ॥

ई—ऊन ऊनी धन धनी धर्म धर्मी भार भारी बल बली ॥

ईला एला वा ऐला-सज सजीला रंग रंगीला घर घरेला बन बनैला ॥

लु लू वा ल—दया दयालु झगड़ा झगड़ालू कृपा कृपाल ॥

वन्त—कुल कुलवन्त बल बलवन्त दया दयावन्त ॥

वान—आ[illegible]वान [illegible]न ज्ञान ज्ञानवान रूप रूपवान ॥

॥

नवां अध्याय ॥

समास के बिषय में ।

३२८ विभक्ति सहित शब्द पद कहाता है। यथा प्रत्येक पद में विभक्ति होती है। कभी दो तीन आदि पद अपनी २ विभक्ति त्याग करके मिल जाते हैं उनके मिलाने से एक शब्द बन जाता है जिस में विभक्ति का रूप नहीं परंतु उसका अर्थ रहता है। जैसे प्रेमसागर इस उदाहरण में दो शब्द हैं अर्थात प्रेम और सागर उनका पूरा रूप यह था कि प्रेम का सागर पर का के लोप करने से प्रेमसागर एक शब्द बन गया। इसी रीति से तीन आदि पद के योग को भी समास कहते हैं॥

३२९ समास छः प्रकार के होते हैं अर्थात १ कर्मधारय २ तत्पुरुष ३ बहुब्रीहि ४ द्विगु ५ द्वन्द्व ६ अव्ययीभाव॥

३३० १ कर्मधारय समास उसे कहते हैं जिस में बिशेषण का बिशेष्य के साथ सामानाधिकरण्य हो। जैसे परमात्मा महाराज सज्जन नीलकमल चन्द्रमुख इत्यादि॥

३३१ २ तत्पुरुष समास वह है जिस में पूर्व पद कर्त्ता छोड़ के दूसरे कारक की विभक्ति से युक्त हो और पर पद का अर्थ प्रधान होवे तत्पुरुष समास में प्रायः उत्तर पद प्रधान होता है इस कारण कि स्वतन्त्रता से उन्हीं का अन्वय क्रिया में होता है। जैसे प्रियवादी नरेश इन में वादी और ईश शब्द प्रधान हैं पूर्व पद का अन्वय क्रिया में नहीं है। इसी रीति से हिमालय जन्मस्थान विद्याहीन बुद्धिरहित यज्ञस्तम्भ शरणागत ग्रामवास इत्यादि जानो॥

३३२ ३ बहुब्रीहि समास उसे कहते हैं जिस में दो तीन आदि पद मिलके समस्त पद के अर्थबोध के साथ और किसी पद से सम्बन्ध रखे। जैसे नारायण चतुर्भुज। इन शब्दों का अर्थ है जल स्थान और चार बांह परंतु इन से विष्णु ही का बोध होता है अर्थात जिसका जल स्थान है और चार बांह हैं वह विष्णु समझा जाता है। बहुब्रीहि समास से जो पद सिद्ध होता है वह प्रायः बिशेषण हो जाता

अधिक	बहुत	तनिक
अतिशय	प्रायः	इत्यादि

३३९ कई एक क्रियाविशेषण के अंत में निश्चय जनाने के लिये ही वा हीं लाते हैं। जैसे अभी तभी कभी जभी योंहीं वहीं। कई एक दोहराकर बोले जाते हैं और बहुधा अनेक क्रियाविशेषण एक साथ आते हैं। जैसे

कभी कभी	अब तक	जहां कहीं
जहां जहां	कब तक	जब कभी
बेर बेर	कभी नहीं	कहीं नहीं
कहीं कहीं	ऐसा वैसा	और कहीं
अब तब	ज्यों ज्यों	त्यों त्यों

३४० अनिश्चय जनाने को दो समान अथवा असमान क्रियाविशेषण के मध्य में न लगा देते हैं। जैसे

कभी न कभी	कहीं न कहीं	जब न तब

३४१ कितने एक क्रियाविशेषण हैं जो संज्ञा के तुल्य विभक्ति के साथ आते हैं। जैसे कि इन उदाहरणों में यहां की भूमि अच्छी है अब की बेर देख लूं मैं उधर से आता था यह आज का काम है कि कल का ॥

३४२ गुणवाचक संज्ञा भी क्रियाविशेषण हो जाती हैं जैसे इसको धीरे धीरे सरकाओ पेड़ों को सीधे लगाते जाओ। वह अच्छा चलता है वह सुन्दर सीती है ॥

३४३ बहुतेरे अव्यय शब्दों के साथ करके पूर्वक से आदि के लगाने से क्रिया विशेषण हो जाते हैं। जैसे इन वाक्यों में एक राजा ने विनय पूर्वक फिर कहा आलस्य से काम करता है जो राजा बुद्धि से चलता है वह सुख से राज्य करता है ॥

२ सम्बन्धसूचक।

३४४ सम्बन्धसूचक अव्यय उन्हें कहते हैं जिस से बोध होता है कि संज्ञा से और वाक्य के दूसरे शब्दों में क्या सम्बन्ध है। वे दो प्रकार के हैं पहिले वे जिनके पूर्व संज्ञा की विभक्ति नहीं आती। जैसे रहित

सहित समेत हुआ लों इत्यादि । दूसरे वे जिनके पूर्व संज्ञा के सम्बन्ध कारक की विभक्ति आती है । जैसे

आगे	पास	बाहिर	तुल्य
पीछे	संग	बिषय	बायां
ऊपर	साथ	बदले	दहिना
नीचे	भीतर	तले	बीच

३४५ ऊपर के लिखे हुए शब्द सचमुच अधिकरणवाची संज्ञा हैं पर उनके अधिकरण चिन्ह के लोप करने से वे अव्यय हो गये हैं । जैसे आगा शब्द अधिकरण की विभक्ति सहित तो आगे में हो गया फिर अधिकरण के चिन्ह में का लोप किया तो हुआ आगे जैसा देवमन्दिर घर के आगे में है फिर अधिकरण के चिन्ह में का लोप करके तो रहा देवमन्दिर घर के आगे है । ऐसे ही सर्वत्र जानो ॥

३ उपसर्ग ।

३४६ नीचे के लिखे हुए अव्यय शब्द संस्कृत और हिन्दी में उपसर्ग कहाते हैं । उपसर्ग संस्कृत में प्रायः क्रियावाचक शब्द के पूर्व युक्त होके क्रिया के भिन्न २ अर्थ का प्रकाश करते हैं ॥

३४७ कहीं दो कहीं तीन और कहीं चार उपसर्ग भी एकत्र होते हैं । जैसे विहार व्यवहार सुव्यवहार समभिव्याहार आदि ॥

३४८ उपसर्ग द्योतक हैं वाचक नहीं अर्थात जिस क्रिया से युक्त होते हैं उसी के अर्थ का प्रकाश करते हैं पर असंयुक्त होके निरर्थक रहते हैं । कहीं ऐसा होता है कि उपसर्ग के आने से पद का अर्थ बदल जाता है । जैसा दान आदान इत्यादि ॥

३४९ उपसर्ग के प्रधान अर्थ वा भाव जो संयोग में उत्पन्न होते हैं नीचे लिखते हैं ॥

प्र—अतिशय गति यश उत्पत्ति व्यवहार आदि का द्योतक है । जैसे प्रणाम प्रस्थान प्रसिद्ध प्रभृति प्रयोग इत्यादि ॥

परा—प्रत्यावृत्ति नाश अनादर आदि का द्योतक है । जैसे पराजय पराभव परास्त इत्यादि ॥

अप—हीनता वैरूप्य अंश का द्योतक है। जैसे अपयश अपनाम अपवाद अपलक्षण अपशब्द इत्यादि ॥

सम्—संयोग आभिमुख्य उत्तमता आदि का द्योतक है। जैसे सम्बन्ध संमुख सन्तुष्ट संस्कृत इत्यादि ॥

अनु—सादृश्य पश्चात अनुक्रम आदि का द्योतक है। जैसे अनुरूप अनुगामी अनुभव अनुताप इत्यादि ॥

अव—अनादर अंश का द्योतक है। जैसे अवज्ञा अवगुण अवगीत अवधारण इत्यादि ॥

निस्—निषेध का द्योतक है। जैसे निराकार निर्दोष निर्जीव निर्भय निस्सन्देह इत्यादि ॥

दुस्—कष्ट दुष्टता निन्दा आदि का द्योतक है। जैसे दुर्गम दुस्त्यज दुर्जन दुर्दशा दुर्बुद्धि दुर्नाम इत्यादि ॥

वि—भिन्नता हीनता असदृश्यता आदि का द्योतक है। जैसे वियोग विरूप विदेह विवर्ण विलक्षण इत्यादि ॥

नि—निषेध अवरोध आदि का द्योतक है। जैसे निवारण निकृति निरोध इत्यादि ॥

अधि—उपरिभाव प्रधानता स्वामित्व आदि का द्योतक है। जैसे अधिराज अधिकार अधिरथ इत्यादि ॥

अति—अतिशय उत्कर्ष आदि का द्योतक है। जैसे अतिकाल अतिमात्र अतिगुप्त इत्यादि ॥

सु—उत्तमता श्रेष्ठता सुगमता आदि का द्योतक है। जैसे सुजाति सुपुत्र सुलभ इत्यादि ॥

कु—बुराई दुष्टता आदि का द्योतक है। जैसे कुकर्म कुपुत्र कुजाति इत्यादि ॥

उत्—उच्चता उत्कर्ष आदि का द्योतक है। जैसे उदय उदाहरण उत्पत्ति इत्यादि ॥

अभि—प्रधानता समीपता भिन्नता इच्छा आदि का द्योतक है। जैसे अभिजात अभिप्राय अभिमत अभिक्रम अभिगमन इत्यादि ॥

प्रति—प्रत्येकता सादृश्यता विरोध आदि का द्योतक है। जैसे प्रतिदिन प्रतिशब्द प्रतिवादी इत्यादि ॥

परि—सर्वतोभाव अतिशय त्याग आदि का द्योतक है। जैसे परिपूर्ण परिजन परिच्छेद परिहार इत्यादि ॥

उप—समीपता निकृष्टता आदि का द्योतक है। जैसे उपवन उपग्रह उपपत्ति इत्यादि ॥

आ—सीमा ग्रहण विरोध आदि का द्योतक है। जैसे आभोग आकार आदान आगमन आरोग्य इत्यादि ॥

अ—रहितता निषेध आदि का द्योतक है। जैसे अबल अक्षय अपवित्र। स्वरादि शब्द के आगे के आने से अन् हो जाता है। जैसे अनादि अनन्त अनुचित अनेक इत्यादि ॥

सह वा स—संयोग प्रकृति आदि का द्योतक है। जैसे सहकर्मी सहगमन सहचर साकार सचेत इत्यादि ॥

४ समुच्चयबोधक।

२५० जो शब्द दो पदों वा वाक्यों वा वाक्यों के अंश के मध्य में आते हैं और प्रत्येक पद के भिन्न क्रिया सहित अन्वय का संयोग अथवा विभाग करते हैं उन्हें संयोजक और विभाजक अव्यय कहते हैं। जैसे

संयोजक शब्द।		विभाजक शब्द।
औ	यथा	वा
और	यदि	अथवा
एवं	जो	क्या—क्या
अथ	भी	परंतु
कि	पुनर	पर
तो		किन्तु
		चाहे
फिर		जो

५ विस्मयादिबोधक शब्द।

२५१ विस्मयादिबोधक अव्यय उसे कहते हैं जिस से अन्तःकरण का भाव वा दशा प्रकाशित होती है वे नाना प्रकार के हैं। जैसे पीड़ा वा क्लेश बोधक यथा अह ऊह अहह आहा ओहो होहो हाय हाय वाह वाह घा चाहि चाहि बापरे अहहह मैयारे बप्पारे। आनन्द वा

आश्चर्य्यबोधक यथा वाह वाह धन्य धन्य जय जय । लज्जा वा निरादर बोधक यथा छी छी धिक छिश दूर इत्यादि जानो ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

अथ वाक्यविन्यास ।

३५२ वाक्यविन्यास व्याकरण के उस भाग को कहते हैं जिस में शब्दों के द्वारा वाक्य बनाने की रीति बताई जाती है ॥

३५३ पहिले की लिखी हुई रीतियों से जिन शब्दों को सिद्ध कर आये हैं उन्हें वाक्य में किस क्रम से रखना चाहिये इसका कोई नियम बतलाया नहीं गया इसलिये उसे अब लिखते हैं जिसे जानकर जहां जो पद रखने के योग्य है उसे वहां रखें ॥

३५४ पदों के उस समूह को वाक्य कहते हैं जिसके अंत में क्रिया रहकर उसके अर्थ को पूर्ण करती है । वाक्य में प्रत्येक कारक न चाहिये परंतु कर्त्ता और क्रिया के बिना वाक्य नहीं बनता ॥

३५५ जिसके विषय में कुछ कहा जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं और जो कहा जाता है वही विधेय कहाता है । जैसे घास उगती है घोड़ा दौड़ता है ॥

३५६ उद्देश्य और विधेय दोनों को विशेषण के द्वारा हम बढ़ा सकते हैं । जैसे हरी घास शीघ्र उगती है काला घोड़ा अच्छा दौड़ता है ॥

३५७ समझना चाहिये कि जब वाक्य में केवल कर्त्ता और क्रिया दो ही होते हैं तब कर्त्ता उद्देश्य और क्रिया विधेय रहती है। जैसे आंधी आती है यहां आंधी उद्देश्य है और आना क्रिया उसके ऊपर विधेय है ऐसे ही और भी जानो ॥

३५८ यदि कर्त्ता को कहकर उसका विशेषण क्रिया के पूर्व रहे तो कर्त्ता को उद्देश्य करके उसके विशेषण सहित क्रिया को उस पर विधेय जानो । जैसे नगरों में कूए का पानी खारा होता है । इस वाक्य में कर्त्ता जो पानी है उस पर उसके विशेषण खारा के साथ होना क्रिया विधेय है ॥

३५९ यदि एक क्रिया के दो कर्त्ता वा दो कर्म होवें और परस्पर एक दूसरे के विशेष्य विशेषण न हो सकें तो पहिली संज्ञा को उद्देश्य और दूसरी संज्ञा सहित क्रिया को विधेय जानो । जैसे वह लड़का राजा हो गया यह मनुष्य पशु है वह पुरुष स्त्री बन गया है ॥

पदयोजना का क्रम ।

३६० साधारण रीति यह है कि वाक्य के आदि में कर्त्ता और अंत में क्रिया और यदि और कारकों का प्रयोजन पड़े तो उन्हें कर्त्ता और क्रिया के बीच में लिखो। जैसे स्त्री सूई से कपड़ा सीती है कपोत अपनी चोंच से दानों को बीन २ कर खाता है ॥

३६१ जो पद कर्त्ता से सम्बन्ध रखते हैं उन्हें कर्त्ता के निकट रखो और क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध हो उसे क्रिया के संग लगाओ। जैसे मेरा घोड़ा देखने में अति सुन्दर है बुड्ढा माली पेड़ों से प्रतिदिन फल तोड़ता है ॥

३६२ यदि वाक्य में कर्त्ता और क्रिया को छोड़कर और भी संज्ञा वा विशेषण रहें और उनके साथ दूसरे शब्दों के लिखने की आवश्यकता पड़े तो जो पद जिस से सम्बन्ध रखता हो उसे उसके संग जोड़ दो। जैसे ग्रामीण मनुष्य नागौरी बैल के समान परिश्रमी होते हैं दरिद्र मनुष्य को कंकरीली धरती ही रेशमी बिछौना है ॥

३६३ गुणवाचक शब्द प्रायः अपनी संज्ञा के पूर्व और क्रियाविशेषण क्रिया के पूर्व आता है। जैसे बड़ी लकड़ी बहुत कम मिलती है मोटी रस्सी बड़ा बोझ भली भांति सम्भालती है ॥

३६४ पूर्वकालिक क्रिया उस क्रिया के निकट रहती जिस से वाक्य समाप्त होता है। जैसे लड़का आंख मूंदकर सोता है ब्राह्मण पलथी बांधकर रोटी खाता है ॥

३६५ अवधारण विशेषता वा छंद की पूर्णता के लिये सब शब्द निज स्थान को छोड़ कर वाक्य के दूसरे २ स्थानों में आते हैं। जैसे

सिया सहित रघुपति पद देखी।
करि निज जन्म सुफल मुनि लेखी॥

३६६ प्रश्नवाचक सर्वनाम को उसी स्थान पर रखना चाहिये जिसके बिषय में मुख्यता पूर्वक प्रश्न रहे और यदि वाक्य ही पूरा प्रश्न हो तो उसे वाक्य के आदि में लिखना चाहिये। जैसे क्या यह वही है जिसे तुमने देखा था यह कौन पुस्तक है उसे किसे दोगे यह क्या करती है इत्यादि ॥

३६७ जहां प्रश्नवाचक शब्द नहीं रहता उस वाक्य में बोलनेवाले की चेष्टा वा उसके उच्चारण के स्वरभेद से प्रश्न समझा जाता है। जैसे वह आया है मैं आऊं घंटा बजा है मुझे डराते हो ऐं हाट बन्ध हो गई ॥

३६८ सकर्मक धातु की भूतकालिक क्रिया को छोड़कर शेष क्रिया के लिङ्ग और वचन कर्त्ता के लिङ्ग और वचन के समान होते हैं। यह बात केवल कर्तृप्रधान क्रिया की है। जैसे नदी बहती है लड़के खेलते हैं राजा दण्ड देगा ॥

३६९ यदि सकर्मक क्रिया हो और काल भूत हो तो पूर्वोक्त रीति के अनुसार कर्त्ता के आगे ने आवेगा और यदि कर्म का चिन्ह लुप्त हो तो क्रिया के लिङ्ग वचन कर्म के अनुसार होंगे नहीं तो कर्त्ता के लिङ्ग और वचन के अनुसार। जैसे लड़की ने घोड़े देखे लड़के ने पोथी पढ़ी कुक्कुटी ने अण्डे दिये बकरियों ने खेत चरा पिता ने पुत्र को पाया रानी ने सहेलियों को बुलाया इत्यादि ॥

३७० यदि एक ही क्रिया के अनेक कर्त्ता रहें और वे लिङ्ग में समान न होवें तो क्रिया में बहुवचन होगा और लिङ्ग उसके अन्तिम कर्त्ता के समान रहेगा। जैसे पृथ्वी चंद्रमा और सब ग्रह सूर्य के आस पास घूमते हैं घोड़े बैल और बकरियां चरती हैं ॥

३७१ यदि अनेक लिङ्ग में असमान कर्त्ता और क्रिया के मध्य में समुदायवाचक कोई पद आपड़े तो क्रिया पुल्लिङ्ग और बहुवचनान्त होगी। जैसे नर नारी राजा रानी सब के सब बाहर निकले हैं ॥

३७२ जो वाक्य में कई एक संज्ञा रहें और उनके समुच्चायक से एकवचन समझा जाय तो क्रिया में एकवचन होगा। जैसे धन जन स्त्री और राज्य मेरा क्यों न गया चार मास और तीन बरस इसके करने में लगा है ॥

३७३ यदि वाक्य में एक क्रिया के अनेक कर्त्ता रहें और उनके समुच्चायक से बहुवचन विवक्षित होवे तो क्रिया में बहुवचन होगा। जैसे इसके मोल लेने में मैंने चार रुपैये सात आने छ दाम दिये हैं ॥

३७४ आदर के लिये क्रिया में बहुवचन होता है चाहे आदरसूचक शब्द कर्त्ता के साथ रहे चाहे न रहे। जैसे लाला जी आये हैं पण्डित जी गये हैं तुम क्या कहते हो ॥

३७५ जो उद्देश्य बहुत रहें और विधेय एक हो तो अंतिम उद्देश्य का लिङ्ग होगा और विधेय संज्ञा हो तो विधेय के अनुसार लिङ्ग वचन होगा। जैसे काश्मीर के लड़के लड़कियां सुन्दर होती हैं घास पेड़ बूटी लता बल्ली बनस्पति कहाती हैं ॥

३७६ यदि एक ही क्रिया के अनेक कर्त्ता हों और उनके बीच में विभाजक शब्द रहे तो क्रिया एकवचनान्त होगी। जैसे मेरा घोड़ा वा बैल आज बेचा जायगा मुझे न भूख न प्यास लगती है ॥

३७७ यदि एक क्रिया के उत्तम मध्यम और अन्यपुरुष कर्त्ता हों तो क्रिया उत्तमपुरुष के अनुसार होगी। जैसे हम और तुम चलेंगे तू और मैं पढ़ूंगा वे और हम तुम सुनेंगे ॥

३७८ यदि किसी क्रिया के मध्यम और अन्यपुरुष कर्त्ता रहें तो क्रिया मध्यमपुरुष के अनुरोध से होगी। जैसे वह और तुम चलो वे और तुम पढ़ो ॥

विशेष्य और विशेषण का वर्णन।

३७९ वाक्य में जो प्रधान अर्थात मुख्य संज्ञा रहती है उसे विशेष्य कहते हैं और उसके गुण बतानेवाले शब्द को विशेषण। जैसे यह यशस्वी पुरुष है। यहां पुरुष प्रधान अर्थात मुख्य संज्ञा है इसलिये उसे विशेष्य कहते हैं और उसके गुण का बतानेवाला यशस्वी शब्द अप्रधान अर्थात सामान्यवाचक है इसलिये उसको विशेषण कहते हैं। ऐसे ही सर्वत्र जानो ॥

३८० कहीं २ केवल विशेषण आजाता है। जैसे ज्ञानियों को ऐसा करना उचित नहीं है। यहां उसके विशेष्य मनुष्य शब्द का अध्याहार होता है ऐसे ही और भी जानो ॥

३८१ केवल आकारान्त गुणवाचक शब्दों में विशेषता होती है कि प्रधान कर्त्ता के एकवचन को छोड़कर और शेष कारकों के एकवचन बहुवचन में आ को ए हो जाता है। जैसे ऊंचे पेड़ लम्बे मनुष्यों को सुन्दर स्त्री सुन्दर लड़का सुन्दर बन ॥

३८२ यदि आकारान्त गुणवाचक स्त्रीलिङ्ग शब्द का विशेषण होकर आवे तो सब कारकों में उसके आ को ई होती है। जैसे मोटी रस्सी मोटी रस्सियां मोटी रस्सी से मोटी रस्सियों से ॥

३८३ जब गुणवाचक शब्द अपने विशेष्य के साथ आता है तब उस में न तो कारक न बहुवचन के चिन्ह रहते हैं केवल विशेष्य के आगे आते हैं। जैसे मोटियां रस्सियां मोटियों रस्सियों से ऐसा कहना अशुद्ध है। परंतु विशेष्य बोला न जाय और विशेषण ही दीख पड़े तो कारक के चिन्ह और आदेश भी बने रहते हैं। जैसे दीनों को मत सताओ भूखों को खिलाते हैं धनियों का आदर बहुत होता है निर्बलों की सहायता करो॥

३८४ जब कर्म कारक का चिन्ह नहीं रहता तो विशेषण कर्म के अनुसार होता है। जैसे मैंने लाठी सीधी की घोड़ी निकालके घर के साम्हने खड़ी करो। परंतु जब कर्म कारक का चिन्ह देख पड़ता है तब विशेषण कर्त्ता के अनुसार होता है। जैसे तुमने कांटों को क्यों टेढ़ा किया काठ के रङ्ग को और गहरा कर दो॥

३८५ यदि अकर्मक क्रिया के भिन्न २ लिङ्ग के अनेक कर्त्ता हों जिनका विशेषण भी मिले तो उस में अंत्य कर्त्ता का लिङ्ग होगा। जैसे उस घर के पत्थर चूना और ईंट अच्छी हैं मेरा पिता माता और दोनों भाई जीते हैं सांवला लड़का और उसकी गोरी बहिनें दौड़ती आती हैं॥

३८६ कर्त्तृवाचक कर्मवाचक और क्रियाद्योतक संज्ञा भी विशेषण होके आती हैं और उन में वही नियम होते हैं जो ऊपर लिख आये हैं। जैसे लिखनेवाले रामानन्द को बुलाओ गानेवाली लड़की के साथ मरा हुआ घोड़ा खेत में पड़ा है निकाला हुआ घोड़ा बाहर लाओ हिलती हुई डाली से फल गिरता है। इस में हिलती हुई क्रियाद्योतक संज्ञा है और वह अपने विशेष डाली की क्रिया बताती है ऐसे ही सर्वत्र॥

३८७ संख्यावाचक शब्द भी संख्यापूर्वक प्रत्यय वा अथवा वां के आने से संज्ञा का विशेषण होता है। और जो नियम आकारान्त गुणवाचक के हैं सो उस में भी लगते हैं। जैसे तीसरी लड़की चौथे लड़के की पोथी सातवें मास का नवां दिन दसवीं स्त्री से॥

३८८ एक विशेष्य के अनेक अकारान्त विशेषण हों तो सब में वही लिङ्ग वचन होगा जो संज्ञा का है। जैसे बड़ी लम्बी कड़ी बड़े ऊंचे पेड़ पर स्वप्न में बड़ी ऊंची डरावनी मूर्त्ति मेरे संमुख आई॥

३८९ कह आये हैं कि उस पद के समुदायक को वाक्य कहते हैं जिसके अंत में क्रिया रहकर उसके अर्थ को पूर्ण करती है। वह कर्तृप्रधान और कर्मप्रधान के भेद से दो प्रकार का होता है॥

१ कर्तृप्रधान वाक्य।

३९० कर्त्ता अपने अपेक्षित कारक और क्रिया के साथ जब रहता है तो वह वाक्य कहाता है। उस में जो और शब्दों की आवश्यकता हो तो ऐसे शब्द आवेंगे जिनका आपस में सम्बन्ध रहेगा। जैसे बढ़ई ने बड़ीसी नाव बनाई है लेखक ने सुन्दर लेखनी से मेरे लिये पोथी लिखी है इत्यादि॥

३९१ जो ऐसे शब्द वाक्य में पड़ेंगे कि जिनका परस्पर कुछ सम्बन्ध न रहे तो उन से कुछ अर्थ न निकलेगा इस कारण वह वाक्य अशुद्ध होगा॥

२ कर्मप्रधान वाक्य।

३९२ जैसे कर्तृप्रधान वाक्य में कर्त्ता अवश्य रहता है वैसे ही कर्मप्रधान वाक्य में कर्म का रहना आवश्यक है क्योंकि यहां कर्म ही कर्त्ता के रूप से आया करता है। इस से यह रीति है कि पहिले कर्म और अंत में क्रिया और अपेक्षित कारक और विशेषण सब बीच में अपने २ सम्बन्ध के अनुसार रहें। जैसे पर्वत में से सोना चांदी आदि निकाली जाती हैं बड़े विचार से यह सुन्दर ग्रन्थ भली भांति देखा गया॥

३९३ यह भी जानना चाहिये कि जैसे कर्तृप्रधान क्रिया में कर्त्ता प्रधान रहता है और कर्मप्रधान क्रिया में कर्म वैसे ही भावप्रधान क्रिया में भाव ही प्रधान हो जाता है।

३९४ जहां अकर्मक क्रिया का रूप कर्मप्रधान क्रिया के समान आता है और कर्त्ता भी करण कारक के चिन्ह से के साथ मिले वहां भावप्रधान जानो। जैसे उस से बिना बोले कब रहा जायगा मुझ से रात को जागा नहीं जाता इत्यादि॥

३९५ धातु के अर्थ को भाव कहते हैं वह एक है और पुल्लिङ्ग भी है इसलिये भावप्रधान क्रिया में भी एक ही वचन होता है और वह क्रिया पुल्लिङ्ग रहती है॥

३६६ यद्यपि इस क्रिया का प्रयोग हिन्दी भाषा में बहुत नहीं आता तथापि नहीं के साथ इसे बहुत बोलते हैं और इस से केवल भाव अर्थात व्यापार का बोध होता है ॥

३६७ यद्यपि ऊपर के लिखे हुए नियमों के पढ़ने से कोई ऐसी विशेष बात नहीं बच रहती जिसके निमित्त कुछ लिखना पड़े तथापि वाक्य-विन्यास में ये तीन बातें मुख्य हैं आकांक्षा योग्यता और आसत्ति जिनके बिन जाने वाक्य बनाने में कठिनता होती है ॥

३६८ १ एक पद की दूसरे पद के साथ अन्वय के लिये जो चाह रहती है उसे आकांक्षा कहते हैं। जैसे गैया घोड़ा हाथी पुरुष यह वाक्य नहीं कहाता है क्योंकि आकांक्षा नहीं है परंतु चरती दौड़ता नहाता सोता इन क्रियाओं के लगाने से वाक्य बन जाता है इसलिये कि अन्वय के लिये इनकी चाह अपेक्षित है ॥

३६६ २ परस्पर अन्वित होने में अर्थ बोध के औचित्य को योग्यता कहते हैं। जैसे यदि कोई कहे कि आग से सींचते हैं तो यह भी वाक्य न होगा क्योंकि सींचना क्रिया की योग्यता आग के साथ बोधित होती है। इस कारण जल से सींचता है यह वाक्य कहाता है ॥

४०० ३ पदों के सान्निध्य को प्रत्यासत्ति कहते हैं अर्थात जिस पद का अन्वय जिस शब्द के साथ अपेक्षित हो उनके बीच में बहुत से काल का व्यवधान न पड़ने पावे नहीं तो भोर के बोले हुए कर्तृपद के साथ सांझ के उच्चरित क्रियापद का अन्वय हो जायगा। जैसे रामदास भोर चोर मार पीट लेन देन आग पानी घी चीनी इसको कहके सांझ को आओ हुआ पकड़ा होती है करते हैं ले जाओ ऐसा कहा यह वाक्य न कहावेगा ॥

॥ इति वाक्यविन्यास ॥

बारहवां अध्याय ॥

अथ छन्दोनिरूपण ॥

(१) छन्द का लक्षण यह है कि जिस में मात्रा वा वर्ण की गिनती रहती है और प्रायः उस में चार पाद होते हैं ॥

(२) वर्ण दो प्रकार के होते हैं अर्थात गुरु और लघु एक मात्रिक को लघु द्विमात्रिक को गुरु कहते हैं ॥

(३) अनुस्वार और विसर्ग करके युक्त जो लघु है उसको गुरु कहते हैं और पद के अन्त में और संयोग के पूर्व में रहनेवाले को भी गुरु बोलते हैं और स्वरूप उसका वक्र लिखा जाता है जैसा कि ऽ यह चिन्ह है और लघु का स्वरूप एक सीधी पाई जैसे। यह है ॥

(४) वर्णवृत्तों में आठ गण होते हैं और प्रत्येक गण तीन २ वर्णों का माना गया है १ मगण २ नगण ३ भगण ४ यगण ५ जगण ६ रगण ७ सगण ८ तगण ॥

(५) तीन गुरु का मगण होता है और तीन लघु का नगण होता है और आदिगुरु भगण और आदिलघु यगण मध्यगुरु जगण मध्यलघु रगण और अन्तगुरु सगण और अन्तलघु तगण कहाते हैं ॥ इन में मगण नगण भगण और यगण ये चारों छन्द के आदि में शुभ हैं और शेष चारों अशुभ। जैसे

मगण	= ऽ ऽ ऽ	ये चारों शुभ हैं
नगण	= । । ।	
भगण	= ऽ । ।	
यगण	= । ऽ ।	
जगण	= । ऽ ।	ये चारों अशुभ हैं
रगण	= ऽ । ऽ	
सगण	= । । ऽ	
तगण	= ऽ ऽ ।	

(६) और मात्र वृत्त के पांच गण हैं अर्थात ट ठ ड ढ ण इन में छः मात्रा का टगण और पांच मात्रा का ठगण और चार मात्रा का डगण और तीन मात्रा का ढगण और दो मात्रा का णगण होता है ॥

(७) और टगण के तेरह भेद हैं और ठ के आठ और ड के पांच और ढ के तीन और णगण के दो भेद हैं ॥

जैसे छः मात्रा के टगण का उदाहरण ।

इसकी यह रीति है कि गुरु हो तो ऊपर नीचे दोनों ओर अंक देता जाय और लघु के ऊपर ही लिखे जिसका क्रम यह है कि पहिले एक लिखे फिर दो फिर एक और दो को मिलाके तीन लिखे फिर दो और तीन मिला के पांच लिखे फिर तीन और पांच मिलाके आठ लिखे फिर पांच और आठ मिलाके १३ लिखे इसी प्रकार पूर्व पूर्व का अंक जोड़ता जाय अन्त में जो अंक आवें उतने ही जाने। जैसे १ ३ ८   १ २ ३ ५ ८ १३
ऽ ऽ ऽ   । । । । । ।

(८) प्रस्तार बनाने की यह रीति है कि प- २ ५ १३
हिले सब गुरु रखना फिर पहिले गुरु के ऽ ऽ ऽ
नीचे लघु लिखना और आगे जैसा ऊपर । । ऽ ऽ
हो वैसा ही लिखता जाय जो मात्रा बचे । ऽ । ऽ
उसे पीछे गुरु लिखकर लघु लिखे यदि । । । । ऽ
एक ही मात्रा बचे तो लघु ही लिखे दो । ऽ ऽ ।
बचे तो १ गुरु लिखे तीन बचे तो गुरु ऽ । ऽ ।
लिखके लघु लिखे चार बचे तो दो ऽ ऽ । ।
गुरु लिखे पांच बचे दो गुरु लिखके लघु । । ऽ । ।
लिखे इत्यादि । फिर उसके नीचे जो । ऽ । । ।
पहिला गुरु हो तो उसके नीचे लघु लिखे ऽ । । । ।
आगे ऊपर के समान जो बचे सो पूर्वोक्त । । । । । ।
रीति से लिखे इसी प्रकार जब तक सब लघु न हो जायं तब तक बराबर लिखना चला जावे। जैसे कि पृष्ठ की दाहिनी ओर पर लिखा हुआ है ॥

(९) छन्दों का मूल यह है कि वर्णवृत्त में एक वर्ण से लेकर छब्बीस वर्णों लों के एक २ चरण होते हैं उनके प्रस्तार निकालने की यह रीति है कि एक चरण में जितने अक्षर हों उन्हें लिखकर उनके ऊपर क्रम से द्विगुणोत्तर अंक लिखता जाय फिर अन्तिम वर्ण के ऊपर जो संख्या आवे उसका दुगुणा प्रस्तार का प्रमाण बतावे। जैसे मध्या का प्रस्तार वा भेद जानना है तो ऽ ऽ ऽ ऐसा लिखकर द्विगुणोत्तर अंक दिया

१ २ ४
ऽ ऽ ऽ

अन्त में ४ आया उसका दूना किया तो हुए ८ इसे ही मध्या का प्रस्तार जानो॥

नष्ट अर्थात प्रस्तार में चौथा भेद जानना हो वे
उसके निकालने की रीति॥

(१०) प्रत्येक वर्ण के प्रस्तार में प्रश्नकर्त्ता के प्रत्येक प्रश्नविषयिक रूप जानने की यह रीति है कि जो प्रश्न का अंक सम हो तो पहिले लघु लिखे और जो विषम हो तो गुरु लिखे फिर उसका आधा करे विषम हो तो उस में जोड़ दे फिर आधा करे और सम हो तो योंही आधा करे और आधा किये पर जब सम रहे तब लघु लिख दे और विषम रहे तो गुरु ऐसे ही बराबर आधा करता जाय और जब २ विषम आवे तब २ उस में एक जोड़ कर आधा किया करे और जब तक वर्ण संख्या पूरी न हो तब तक लिखा करे। जैसे किसी ने पूछा कि आठ वर्ण के प्रस्तार में ८६ वां रूप कैसा होता है तो ८६ सम है इसलिये पहिले १ लघु लिखा फिर आधा किया तो हुए ४३ सो विषम है इस कारण १ गुरु लिखा और विषम है इस हेतु एक जोड़ दिया तो हुए ४४ आधा किया २२ हुए सो सम है इस से फिर एक लघु लिखा और आधा किया हुए ११ यह विषम है इस निमित्त एक गुरु लिखकर एक उस में जोड़ दिया तो हुए १२ आधा किया ६ हुए सो सम है इस हेतु एक लघु लिखा आधा किया ३ हुए सो विषम है इस से एक लखा और एक जोड़ दिया ४ हुए आधा किया २ रहे सम है एक लघु लिख लिया आधा किया १ रहा सो विषम है गुरु लिखा तो ऐसा रूप हुआ। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ यदि प्रश्नकर्त्ता के उक्त अंक की पूर्णता न आवे और अन्त में आकर एक ही रहजाय तो उस में एक जोड़दे और आधा करे फिर उस में १ जोड़ता जाय जब

प्रश्नकर्त्ता के कहे हुए अंक तक पहुंचे तब बस करे। जैसे आठ वर्णों के प्रस्तार में तीसरा रूप कौन है तो ३ विषम है इस से एक गुरु ले लिया एक और जोड़ा ४ हुए आधा किया २ हुए सो सम है एक लघु लिखा आधा किया १ रहा सो विषम एक गुरु लिखा और एक जोड़ दिया तो २ हुए आधा किया १ रहा विषम है एक गुरु लिखा एक जोड़ा २ हुए आधा किया १ रहा सो विषम है इस हेतु एक गुरु लिखा एक जोड़ा इसी प्रकार जब तक आठ वर्ण पूरे न हुए तब तक लिखते गये तो ऐसा रूप हुआ। जैसे ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

उद्दिष्ट अर्थात जब कोई रूप लिखकर पूछे कि यह कौथा रूप है तो उसके बताने की रीत ॥

(११) जब कोई पूछे कि अमुक रूप कौथा है तो उसके ऊपर द्विगुण अंक लिख दे और लघु के ऊपर के अंक में एक मिला दे फिर जितना हो उसे ही उसका रूप जाने। जैसे किसी ने पूछा कि यह

१	२	४	८	१६	३२
ऽ	।	ऽ	।	ऽ	ऽ

कौथा रूप है तो लघु के ऊपर दो अंक है अर्थात २ और ८ इन का योग किया तो हुए १० इस में एक मिलाया तो हुए ११ इस से जाना कि छ वर्ण के प्रस्तार में यह ग्यारहवां रूप हुआ इसे क्रिया करके उद्दिष्ट की विधि से मिलाया चाहे तो ग्यारह विषम है इससे गुरु लिखकर उस में एक जोड़ दिया १२ हुए आधा किया ६ रहे तब लघु लिखा आधा किया तो ३ रहे विषम है गुरु लिखा १ मिलाया ४ हुए आधा किया २ रहे सम है लघु लिखा फिर आधा किया १ रहा विषम है गुरु लिखा एक जोड़ा २ हुए आधा किया सम है लघु लिया इसी प्रकार छ वर्ण तक करते गये तो भी वही रूप निकला। जैसे ऽ । ऽ । ऽ ऽ ॥

अब उन वृत्तों के प्रस्तार का नियम लिखा जाता है जो मात्रा से बनते हैं ॥

(१२) प्रश्नकर्त्ता जितनी मात्रा का प्रश्न करे उतनी मात्रा लिखले और उनके ऊपर पूर्व से युग्मांक लिखता जाय फिर कौथा रूप पूछा गया हो उस संख्या को अंत के अंक में घटा दे जो शेष रहे उस में यदि पूर्व

अंक घट सकता हो तो उसे घटा दे फिर उस अंक की अगली और पिछली कलाओं को मिलाकर नीचे गुरु लिख दे और फिर जब निश्शेष न हो और कुछ शेष बचता जाय तो ऐसे ही जो पूर्व का अंक हो और वह घट सके तो घटा दे और उसके आगे पीछे की कलाओं को मिला दे और उसके नीचे गुरु लिख दे इसी प्रकार जब तक निश्शेष न होय तब तक लिखता और ऐसा करता चला जाय तो अभीप्सित प्रस्तार निकल आवेगा। जैसे

१ २ ३ ५ ८ १३
। । । |__| ।
ऽ

यहां अन्तिम संख्या १३ है इस में ८ घटाया तो बचे ५ में पूर्व का अंक ५ घटा दिया तो निश्शेष हो गया तो ऐसा रूप हुआ जैसे ।।।ऽ। यदि किसी ने छठा रूप पूछा तो अन्तिम संख्या १३ में गये छ रहे ७ इस में पूर्व अंकों में ५ घट सकता है इस से उसे घटा दिया रहे २ इस में पूर्व अंक जो २ उसे घटाया तो निश्शेष हो गया अब इसका रूप ऐसा हुआ। जैसे

१ २ ३ ५ ८ १३
। |__| |__| ।
ऽ ऽ

इसे इकठ्ठा कर लिया तो ऐसा ।ऽऽ। हुआ ऐसे ही और भी जानो छ मात्रा के प्रस्तार के आठवें रूप का यह चित्र है। और छठे रूप का चित्र यह है।

१	२	३	५	८	१३	रूप
।	।	।	।	।	।	
१	२	३	५	८	१३	मेल
।	।	।	|__|		।	
।	।	।	ऽ		।	फल

१	२	३	५	८	१३	रूप
।	।	।	।	।	।	
।	|__|		|__|		।	मेल
।	ऽ		ऽ		।	फल

अब एक वर्ण से लेकर पचास वर्ण पर्यन्त जिनके एक चरण होते हैं उनके प्रस्तार के निकालने की रीति यह है॥

(१३) जिस वृत्त में जितने वर्ण एक चरण में रहें उन्हें दूना करे लघु और गुरु को पलट देवे अर्थात उत्तरोत्तर दो से गुणा कर अंकों को दुगुणा करता चला जाय इस रीति से जितनी मात्रा लघु होंगी उसकी आधी गुरु और गुरु की दुगुनी लघु मात्रा होवेंगी ऐसे जितने जिसके प्रस्तार हैं वे सब प्रत्यक्ष हो जावेंगे। जैसा आगे के चक्र में लिखा है॥

छन्द	प्रस्तार	छन्द	प्रस्तार
०	१	१९	५२४२८८
१	२	२०	१०४८५७६
२	४	२१	२०९७१५२
३	८	२२	४१९४३०४
४	१६	२३	८३८८६०८
५	३२	२४	१६७७७२१६
६	६४	२५	३३५५४४३२
७	१२८	२६	६७१०८८६४
८	२५६	२७	१३४२१७७२८
९	५१२	२८	२६८४३५४५६
१०	१०२४	२९	५३६८७०९१२
११	२०४८	३०	१०७३७४१८२४
१२	४०९६	३१	२१४७४८३६४८
१३	८१९२	३२	४२९४९६७२९६
१४	१६३८४	३३	८५८९९३४५९२
१५	३२७६८	३४	१७१७९८६९१८४
१६	६५५३६	३५	३४३५९७३८३६८
१७	१३१०७२	३६	६८७१९४७६७३६
१८	२६२१४४	३७	१३७४३८९५३४७२
		३८	२७४८७७९०६९४४

छन्द	प्रस्तार	छन्द	प्रस्तार
३९	५४९७५५८१३८८८	४५	३५१८४३७२०८८८३२
४०	१०९९५११६२७७७६	४६	७०३६८७४४१७७६६४
४१	२१९९०२३२५५५५२	४७	१४०७३७४८८३५५३२८
४२	४३९८०४६५११११०४	४८	२८१४७४९७६७१०६५६
४३	८७९६०९३०२२२०८	४९	५६२९४९९५३४२१३१२
४४	१७५९२१८६०४४४१६	५०	११२५८९९९०६८४२६२४

ऐसे ही और भी जानो ॥

अब उनके प्रस्तार के स्वरूप निकालने की रीति लिखते हैं ॥

(१३) जो जिसका रूप है उस में पहिले गुरु के स्थान में लघु लिखदे फिर ज्योंका त्यों बना रहनेदे इसी प्रकार जहां लों सब लघु न हो जाय तब तक लिखता चला जाय । जैसा आगे के चक्र में कुछ उदाहरण के लिये लिखा है ॥

वर्ण	छन्द	भेद	रूप
१	उक्ता	२	ऽ १
			। २
२	अत्युक्ता	४	ऽ ऽ १
			। ऽ २
			ऽ । ३
			। । ४
३	मध्या	८	ऽ ऽ ऽ १
			। ऽ ऽ २
			ऽ । ऽ ३
			। । ऽ ४
			ऽ ऽ । ५
			। ऽ । ६
			ऽ । । ७
			। । । ८

वर्ण	छन्द	भेद	रूप
४	प्रतिष्ठा	१६	ऽ ऽ ऽ ऽ १
			। ऽ ऽ ऽ २
			ऽ । ऽ ऽ ३
			। । ऽ ऽ ४
			ऽ ऽ । ऽ ५
			। ऽ । ऽ ६
			ऽ । । ऽ ७
			। । । ऽ ८
			ऽ ऽ ऽ । ९
			। ऽ ऽ । १०
			ऽ । ऽ । ११
			। । ऽ । १२
			ऽ ऽ । । १३
			। ऽ । । १४
			ऽ । । । १५
			। । । । १६
५	सुप्रतिष्ठा	३२	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ १
			। ऽ ऽ ऽ ऽ २
			ऽ । ऽ ऽ ऽ ३
			। । ऽ ऽ ऽ ४
			ऽ ऽ । ऽ ऽ ५
			। ऽ । ऽ ऽ ६
			ऽ । । ऽ ऽ ७
			। । । ऽ ऽ ८
			ऽ ऽ ऽ । ऽ ९
			। ऽ ऽ । ऽ १०

वर्ण	छन्द	भेद	रूप
५	सुप्रतिष्ठा		ऽ । ऽ । ११
			। । ऽ । १२
			ऽ ऽ । । १३
			। ऽ । । १४
			ऽ । । । १५
			। । । । १६
			ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ १७
			। ऽ ऽ ऽ । १८
			ऽ । ऽ ऽ । १९
			। । ऽ ऽ । २०
			ऽ ऽ । ऽ । २१
			। ऽ । ऽ । २२
			ऽ । । ऽ । २३
			। । । ऽ । २४
			ऽ ऽ ऽ । । २५
			। ऽ ऽ । । २६
			ऽ । ऽ । । २७
			। । ऽ । । २८
			ऽ ऽ । । । २९
			। ऽ । । । ३०
			ऽ । । । । ३१
			। । । । । ३२

१ एक ही वर्ण वाले से लेकर २६ वर्ण तक कैसे छन्द लिखे जाते हैं उन सब के रूप इसी प्रकार लिखा के करने से प्रत्यक्ष हो जाते हैं। यहां विस्तार के भय से और अनावश्यक के ग्रन्थ में रखने योग्य न समझ कर उन्हें छोड़ दिया है ॥

अब वृत्तों में के भेद होते हैं उसके जानने की रीति ॥

१ समवृत्त ।

(१४) जिसके चारों चरण तुल्य होते हैं उसे समवृत्त कहते हैं ॥

२ अर्धसमवृत्त ।

(१५) जिसके दो चरण सम हों और शेष दो पाद विषम रहें तो उसे अर्धसमवृत्त कहते हैं ॥

३ विषमवृत्त ।

(१६) विषमवृत्त का लक्षण यह है कि जिस वृत्त के चारों पाद आपस में तुल्य न होवें । आगे क्रम से इन सब के उदाहरण लिखते हैं ॥

१ समवृत्त का उदाहरण ।

बोलो कृष्ण मुकुन्द मुरारे त्रिभुवन विदित काम सब सारे ।
जरासंध कंसहि प्रभु मारा त्रिभुवन विदित काम सब सारा ॥

२ अर्धसमवृत्त का उदाहरण ।

राम राम कहि राम कहि वालि कीन्ह तन त्याग ।
सुमन माल जिमि कंठते गिरत न जान्यो नाग ॥

३ विषमवृत्त का उदाहरण ।

राम राम भजु राम कंचन अस तनु धरि जगत ॥
जप तप सम दम व्रत्त नियम निष्काम । करि करि हरि पद पद्म धरि ध्यान जवैया हो ॥

कुछ वृत्त अब दृष्टान्त के निमित्त आगे लक्षण और उदाहरण के साथ लिखते हैं । विद्यार्थियों को उचित है कि इन्हें सीखें तो प्राय: छन्दों की रचना में नियमानुसार अशुद्धता न रहेगी और निपुणता प्राप्त होगी ॥

इस प्रकरण में इतनी बातों का जानना अत्यन्त आवश्यक है ॥

१ छन्द लक्षण	४ उद्दिष्ट
२ उदाहरण	५ प्रस्तार
३ नष्ट	६ प्रस्तार नाम

७	समवृत्तलक्षण	११	विषमवृत्तलक्षण
८	समवृत्त का उदाहरण	१२	विषमवृत्त का उदाहरण
९	अर्धसमवृत्तलक्षण	१३	गणागणविचार
१०	अर्धसमवृत्त का उदाहरण		

जो छन्द जितनी मात्रा का होता है और उस में ग्रन्थ के अनुसार आदि अन्त वा मध्य में जितने गुरु वा लघु लिखने की विधि है उसी क्रम से अब हम पहिले कुछ मात्रावृत्त लिखते हैं ऊपर उनका लक्षण और नीचे उदाहरण मिलेगा ॥

पहिले बड़े बड़े छन्दों को लिखते हैं फिर पीछे से छोटे छोटे भी लिखे जायंगे ॥

३१ मात्रा का सवैया छन्द ।

(१) ३१ मात्रा का सवैया छन्द होता है उस में आदि अन्त में गुरु लघु का नियम नहीं । जैसे

अरब खरब लो लाभ अधिक जहं बिन हर हासिल लाद पलान ॥
सैंतिहि लये देवैया राजी और हि दये न अपने जान ॥
ऐसो राम नाम को सौदा तोहि न भावत मूढ़ अजान ॥
निसि दिन मोह वस दौर नकार करत सवैया जनम सिरान ॥

सोलह मात्रा का छन्द ।

(२) चतुष्पदाछन्द उसे कहते हैं जिस में १६ मात्रा हों और उसके आदि अन्त में गुरु लघु का नियम नहीं ॥ उदाहरण ॥

जामवंत के बचन सुहाये सुनि हनुमन्त हृदय अति भाये ॥
तब लग परिखेहु तुम मोहि भाई सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥

अड़तालिस मात्रा का सोरठा छन्द ।

(३) इसके पहिले और तीसरे में ग्यारह और चौथे दूसरे में तेरह ॥ ॥ ३० ॥ जैसे

मुक्तिजन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ हानिकर ।
जहं बस संभु भवानि सो कासी सेइय कस न ॥

दोहा छन्द इसी सोरठा के उलटने से दोहा बन जाता है ॥ ३० १

अमी हलाहल मद भरे श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुक झुक परत जेहि चितवत इक बार॥

१४४ मात्रा का कुंडलिया छन्द।

(४) इसी दोहे के चौथे चरण को पुनरुक्त करके शेष मात्रा बढ़ा देते हैं॥ उ० ॥

टूटे नख रद केहरी वह बल गयो थकाय।
आह जरा अब आइ के यह दुख दयो बढ़ाय॥
यह दुख दयो बढ़ाय चहूं दिश जंबुक गाजें।
शशक लोमरी आदि स्वतन्त्र करें सब राजें॥
बरनें दीनदयाल हरिन बिहरें सुख लूटे।
पंगु भये मृगराज आज नख रद के टूटे॥

अब मात्रा सम्बन्धी छोटे छोटे छन्द लिखे जाते हैं॥

पांच मात्रा का छन्द।

(५) आदि की एक मात्रा लघु हो और अन्त की दो मात्रा गुरु हों तो उसे ससि छन्द कहते हैं॥ उ०॥ मही में। सही में। जसो से। ससी से।

प्रिया छन्द उसे कहते हैं जिसके आदि अन्त में गुरु और मध्य में लघु हो॥ उ०॥ है खरो। पत्थरो। तो हिया। री प्रिया॥

तरनिजा छन्द।

(६) जिस में आदि की तीन मात्रा लघु और सब गुरु हों॥
उ० उर घसो। गुरुष सो। वरनिजा। तरनिजा॥

पंचाल।

(७) जिसके आदि में दो गुरु और अन्त में एक लघु हो॥
उ० नाचन्त। गावन्त। दैताल। वैताल॥

बीर छन्द

(८) जिसके आदि और अन्त की मात्रा ह्रस्व हों औ मध्य की दीर्घ हों॥
उ० हरु पीर। अरु भीर। वरधीर। रघुबीर॥

८ मात्रा का छन्द।

(९) जिस में सब गुरु हों॥ उ०॥ नव्वे है। संभूपे। वेताली। देताली॥

राम छन्द ।

(१०) जिसके आदि के दो ह्रस्व हों और अन्त के दो गुरु हों ।
जग माहीं । सुख नाहीं । तजि कामैं । भजि रामैं ॥

नगन्निका छन्द ।

(११) जिस में एक गुरु और एक लघु होवे ॥
प्रसिद्ध हो । अघन्निका । नगिद्ध हो । नगन्निका ॥

कला छन्द ।

(१२) उसे कहते हैं जिसके अन्त में गुरु और मध्य में लघु होवे ॥
धीर गहो । आजु लहो । नन्दलला । कामकला ॥

अब वे वृत्त लिखे जाते हैं जिनकी गिनती वर्ण से होती है ॥

(१) अब उन वर्णवृत्त का नाम कहते हैं जिन में चारों पाद तुल्य होते हैं ॥

(२) एक गुरु का श्रीछन्द होता है ॥ उ० ॥ वागदेवी हैं ॥

(३) दो गुरु का कामा ॥ उ० ॥ रामाकृष्णा ॥

(४) एक गुरु और एक लघु का मही छन्द होता है ॥उ०॥ हरे हरे ॥

(५) दो लघु का मधु छन्द होता है ॥ उ० ॥ हरि हरि ॥

(६) आदि गुरु और अन्त लघु का सार छन्द होता है ॥

उ० रामकृष्ण ॥

(७) एक मगण का ताली छन्द होता है ॥ उ० ॥ कन्हाई सो भाई ॥

(८) एक रगण का मृगी छन्द होता है ॥ उ० ॥ प्रेम सों पां गिरों ॥

(९) एक यगण का शशी छन्द होता है ॥ उ० ॥ भवानी सुहानी ॥

(१०) एक सगण का रमण छन्द होता है ॥ उ० ॥ विधु की रजनी ॥

(११) एक तगण का पञ्चाल छन्द होता हैं ॥ उ० ॥ या सर्व संसार ॥

(१२) एक नगण का कमल छन्द होता है ॥ उ० ॥ कमल कुमुद ॥

(१३) एक मगण और एक गुरु का तीर्न्ना छन्द होता है ॥

उ० जै गोविन्दा जै गोविन्दा ॥

(१४) एक रगण और एक लघु का धारी छन्द होता है ॥

उ० नन्दलाल कंसकाल ॥

(१५) एक जगण और एक गुरु का नगानका छन्द होता है ॥
उ० करो चित्तं न चंचले ॥
(१६) एक नगण और एक गुरु का सती छन्द होता है ॥
उ० छल तजे सुख लहे ॥
(१७) एक मगण और दो गुरु का सम्मोहा छन्द होता है ॥
उ० श्रीराधा माधो अराधो साधो ॥
(१८) एक तगण और दो गुरु का हारित छन्द होता है ॥
उ० गौरी भवानी जै जै मृडानी ॥
(१९) एक भगण और दो गुरु का हंसी छन्द होता है ॥
उ० मोहन माधो गावहु साधो ॥
(२०) एक नगण और दो लघु का जमक छन्द होता है ॥
उ० मरण जग धरण नग ॥
(२१) दो मगण का शेषराज छन्द होता है ॥
उ० गोविन्दा गोपाला केशीकंसा काला ॥
(२२) दो सगण का डिल्ल छन्द होता है ॥
उ० प्रभु सो कहिये दुख मो हरिये ॥
(२३) दो जगण का मालती छन्द होता है ॥
उ० गुविन्द गोपाल कृपाल दयाल ॥
(२४) एक तगण और एक यगण का तनुमध्या छन्द होता है ॥
उ० मो हिय कलेशा टारो करि वेशा ॥
(२५) एक नगण और एक यगण का शशिवदना छन्द होता है ॥
उ० हरि हरि केशो सुभग सुवेशो ॥
(२६) एक तगण और एक सगण का वसुमती छन्द होता है ॥
उ० गोपाल कहिये आनन्द लहिये ॥
(२७) दो रगण का विमोहा छन्द होता है ॥
उ० देवकीनन्दन भक्त भो भजनं ॥
(२८) एक रगण और एक यगण और एक गुरु का प्रमाणिका छन्द होता है ॥
उ० राम राम गाइये रामलोक पाइये ॥

(२९) एक नगण और एक जगण का वास छन्द होता है ॥

उ० भजु मन मोहन परम सुसोहन ॥

(३०) एक नगण और एक सगण और एक लघु का करहञ्च छन्द होता है ॥

उ० हरि चरण सेऊ सुख परम लेऊ ॥

(३१) दो भगण और एक गुरु का शीर्षरूप छन्द होता है ॥

उ० जै जै कृष्ण गोपाला राधामाधो श्री पाला ॥

(३२) एक मगण और एक सगण और एक गुरु का मदलेखा छन्द होता है ॥

उ० गोविन्द कहि माधो केशो जो हरि साधो ॥

(३३) दो नगण और एक गुरु का मधुमती छन्द होता है ॥

उ० भजु हरि चरना असरन सरना ॥

(३४) एक भगण और एक मगण और दो गुरु का विद्युन्माली छन्द होता है ॥

उ० जै जै जै श्री राधा-कृष्णा केशो कंसाराती विष्णा ॥

(३५) एक जगण और एक रगण और एक लघु का प्रमाणिका छन्द होता है ॥

उ० भजो भजो गोपाल को कृपाल नन्दलाल को ॥

(३६) एक रगण और जगण और एक गुरु और लघु का मल्लिका छन्द होता है ॥

उ० राम कृष्ण राम कृष्ण वासुदेव विष्णु विष्ण ॥

(३७) दो नगण और दो गुरु का तुंगा छन्द होता है ॥

उ० गगन जलद छाये मदन जग सुहाये ॥

(३८) एक नगण और सगण और एक लघु और एक गुरु का कमल छन्द होता है ॥

उ० हरि हरि कहो कहो सब सुख लहो लहो ॥

(३९) एक जगण और एक सगण और एक लघु और एक गुरु का कुमारलसिता छन्द होता है ॥

उ० भजो जु सुखकन्द को हरो जु दुखदन्द को ॥

(४०) दो भगण और दो गुरु का चित्रपदा छन्द होता है ॥
उ० दीनदयाल जु देवा मैं न करी प्रभु सेवा ॥
(४१) तीन रगण का महालक्ष्मी छन्द होता है ॥
उ० राधिका वल्लभं भजेई ले छिनी इन्द्र से पाइले ॥
(४२) एक नगण और एक यगण और एक सगण का सारंगिक छन्द होता है ॥
उ० हरि हरि केशो कहिये सब सुख सारा लहिये ॥
(४३) एक मगण और एक भगण और एक सगण का पाईता छन्द होता है ॥
उ० आये आली जलद समो केकी कूजे जिय भरमो ॥
(४४) दो नगण और एक सगण का कमला छन्द होता है ॥
उ० कमल सरस नयनी शशि मुखि पिक बयनी ॥
(४५) एक नगण और एक सगण और एक यगण का बिम्ब छन्द होता है ॥
उ० तुलसि बन केलिकारी सकल जन चित्तहारी ॥
(४६) एक सगण दो जगण का तोमर छन्द होता है ॥
उ० नवनील नीरदश्याम शुकदेव शोभान नाम ॥
(४७) तीन मगण का रूपमाली छन्द होता है ॥
उ० अंगा वंगा कालिंगा काशी गंगा सिन्धू संगामा भासी ॥
(४८) एक सगण और दो जगह और एक गुरु का संयुत छन्द होता है ॥
उ० हरि कृष्ण केशव वामना वसुदेव माधव पावना ॥
(४९) एक भगण और एक मगण और सगण और गुरु का चंपकमाला छन्द होता है ॥
उ० कंसनिकन्दा केशव कृष्णा वामन माधो मोहन विष्णा ॥
(५०) तीन भगण और एक गुरु का सारवती छन्द होता है ॥
उ० राम रमापति कृष्ण हरी दीनन के सुविपत्ति हरी ॥
(५१) एक तगण और एक यगण और एक भगण और एक गुरु का सुखमा छन्द होता है ॥
उ० राधा रमना बाधा हरना माधो शरना माधो चरना ॥

(५२) एक नगण और जगण और एक नगण और एक गुरु का अमृतगति छन्द होता है ॥

उ० हरि हरि केशव कहिये सुरसरि तीर जु रहिये ॥

(५३) एक रगण और एक नगण और एक भगण और दो गुरु का सुपथ छन्द होता है ॥

उ० वासुदेव वसुदेव सहायी श्रीनिवास हरि जय यदुरायी ॥

(५४) तीन भगण और दो लघु का नीलस्वरूप छन्द होता है ॥

उ० गोबिंद गोकुल गोप सहायो माधो मोहन श्री यदुरायो ॥

(५५) एक नगण और दो जगण और एक लघु और एक गुरु का सुमुखी छन्द होता है ॥

उ० हरि हरि केशव कृष्ण कहो निश दिन संगति साधु गहो ॥

(५६) तीन नगण और एक लघु और एक गुरु का दमनक छन्द होता है ॥

उ० अमल कमल दल नयनं जलनिधि जलकृत शयनं ॥

(५७) एक रगण और एक जगण और एक रगण और एक लघु और एक गुरु का श्येनिका छन्द होता है ॥

उ० कृष्ण कृष्ण केशिकंस कन्दना देहु सुक्ख नन्दनन्दना ॥

(५८) तीन मगण और दो गुरु का मालती छन्द होता है ॥

उ० रामा कृष्णा गाइये कन्ता कैसे कहिये श्री अनन्ता ॥

(५९) दो तगण और एक जगण और दो गुरु का इन्द्रवज्रा छन्द होता है ॥

उ० गोविन्द गोपाल कृपाल कृष्ण माधो मुरारी व्रजनाथ विष्णु ॥

(६०) एक जगण और एक तगण और एक जगण और दो गुरु का उपेन्द्रवज्रा छन्द होता है ॥

उ० गुपाल गोविन्द मुरारी माधो रमेश नारायण साध साधो ॥

(६१) एक रगण और एक नगण और एक भगण और दो गुरु का उपजाति छन्द होता है ॥

उ० राम राम रघुनन्दन देवा वीरभद्र मम मानहु सेवा ॥

(६२) चार यगण का भुजंगप्रयात छन्द होता है ॥

उ० धरे चन्द माथे महाजोति राजे चढ़ी चण्डिका सिंह संग्राम गाजे॥
(६३) चार सगण का तोटक छन्द होता है॥
उ० शिवशंकर शम्भु त्रिशूल धरं शितिकंठ गिरीश फणीन्द्र करं॥
(६४) चार रगण का लक्ष्मीधर छन्द होता है॥
उ० श्रीधरं माधवं रामचंद्रं भजो द्रोह को मोह को क्रोध को जू तजो॥
(६५) सारंग छन्द उसे कहते हैं जिस में चार भगण हो रहते हैं॥
उ० गोपाल गोविन्द श्रीकृष्ण कंसारी केशो कृपा सिंधु सो पाप संहारी॥
(६६) जिस में चार जगण रहते हैं उसे मौक्तिकदाम छन्द कहते हैं॥
उ० गुपाल गोविन्द हरे नदनन्दन दयाल कृपाल सदा सुखकन्दन॥
(६७) तोटक छन्द का लक्षण यह है जिस में चार भगण होवें॥
उ० केशो कृष्ण कृपाल कर। मूरति मैन मुकुन्द मनोहर॥
(६८) तरलनयनी छन्द में चार नगण होते हैं॥
उ० कलुष हरन हरि अघ हर कमल नयन कर गिरिधर॥
(६९) सुन्दरी उसे कहते हैं जिस में एक नगण दो भगण एक रगण हो॥
उ० मदन मोहन माधव कृष्ण जू गरुड़ वाहन वामन विष्णु जू॥
(७०) एक सगण एक जगण और दो सगण का प्रमिताक्षरा छन्द होता है॥
उ० वृजराज कृष्ण कर पद्मधरं रघुनाथ रामपद देववरं॥

यद्यपि यहां सब वृत्त नहीं लिखे गये हैं तो भी इतने लिखे हैं कि प्राय: प्रयोजन न अड़ेगा और व्याकरण के ग्रन्थ में सब छन्दों का लिखना उचित भी नहीं है इस कारण साधारण से कुछ लिख कर बहुत से छोड़ दिये हैं॥

गान अर्थात जिन में राग रहता है जैसे सूरसागर के भजन आदि होते हैं उनकी रचना भी इसी प्रकार हुआ करती है॥

॥ इति छन्दोनिरूपण॥

सूचीपत्र ॥

अ

अंतस्थवर्ण २१, ५१.
अकर्मक क्रिया १८६, १६०, ३८५.
अकर्मक क्रिया के रूप २१६—२२४.
अक्षर १०, ११, १३.
अधिकरण कारक ११४—७,३१६—३१६, ३४५.
अनिश्चयवाचक सर्वनाम १५६,१६८.
अनुस्वार १५, १६.
अन्यपुरुष १५५, १५६, १६०.
अपत्यवाचक संज्ञा ३२२.
अपादान कारक ११४—५,३०५—३०८.
अपूर्णभूतकाल १६०—५, २००.
अभिव्यापक आधार ३१७.
अल्पप्राण वर्ण २२, ५१.
अवकाशबोधक क्रिया. २६३.
अवधारणबोधक क्रिया. २५४.
अव्यय ८६,३३६—३५१.
अव्ययीभाव समास ३३५.
आकांक्षा ३६७,३६८.
आकारान्त क्रिया २१२, २१३.
आकारान्त गुणवाचक १४६, १५०, ३८१, ३८८.
आदरसूचक सर्वनाम १७०.
आधार ३१६, ३१७.
आना क्रिया २४६.
आप सर्वनाम १७०—१७५.
आपस में १७५.
आरम्भबोधक क्रिया २६२.
आसत्ति ३६७, ४००.
आसन्नभूतकाल १६७, २०६.

इ

इच्छाबोधक क्रिया २५६, २६०.
इतना १८३.

उ

उच्चारण ३७—४६.
उतना १८३.
उत्तमपुरुष १५५—१५७.
उद्देश्य ३५५, ३५६,३७५.
उपसर्ग ३४६—३४६.

ऊ

ऊनवाचक संज्ञा ३२५.

ऐ

ऐसा १८३.

औ

औपश्लेषिक आधार ३१७.

क

करके ३४३.
करण कारक ११५—३
करणवाचक संज्ञा २६६, ३०१, ३१८